५ तिर्यंच मनुष्य पिंड राजपिंड राजा देशाधिपति तेहना घरनउ आहार नकल्पइ ४ कृतिकर्म वृधली साध्वी लघु साधुनइ वा
दणादिइ ५ बिचिल्या तीर्थंकरनइ वारइ च्यार महाव्रत पांचमा परिग्रहमाहि स्त्री परिग्रह माहि लेखवी ६ ज्येष्ठ पर्याय तीनइ पहिला छेहल्या तीर्थं
करनइ वारइ कड़ावामणइ आपणी पर्याय लेखवी बिचिल्या तीर्थंकरनइ वारइ दीक्षा तपपर्याय लेखवी ७ प्रतिक्र
मण पहिला छेहल्या ती थु र्थंकरनइ वारइ उभयकाल पडिक्कमणउ करवउ बिचि ल्या २२ तीर्थंकरनइ वारइ पा
पलागइ जाणइ तिवारइ २ ५ पडिक्कमइ ८ जिणी तिणी वेलाइ अतीचार लागइ न १ गइ पूर्वकालि पडिक्क
मणउ नकरइ ८ शिखव फ कार्तिक ... मासकल्प बिचिल्या तीर्थंकरनइ वारइ क त्यए वर्षाकालि नवमा
सकल्प जिणइ क्षेत्रि रहइ तिहां पर्युषणा कल्पइ प्रतिक्रमण क्रिया आवश्यक ... पहिला छेहल्या तीर्थंक
रनइ वारइ निश्चइ बिचिल्या तीर्थंकरनइ ... बारइ उद्दिसी यत्यतीनइ उद्दिसी नइ कोधुतपहि

ॐ

ला छेहल्या तीर्थंकरनइ वारइ कहिनइ नकल्पइ । बिचिल्या तीर्थंकरनइ वारइ जे उद्दिसी को धुतपहि तिहनइ
नकल्पइ २ शिय्यातर पिंड सर्व तीर्थंकरनइ नक ल्पइ पूर्वगता माटा ... तणी ... शय्यातर
नइ कल्पइ ... ५ बामि पडिक्कमइ उ शिय्यातर तेहनइ घरिनउ ... ५ पडिक्कमइ उ ...
२ ढघा ... ॐ । ड उं धर्मादिक ... पतला बा नो उपधि महित शिय्य
शिय्यातर महित ... न ... राजपिंड राजानइ ... पे ...
दिवादी ... पिंड ना ... ज्ञान दर्शन ...
ल्पइ बिचिल्या जिननइ वारइ राजपिंड लिइ ४ कृतिकर्म ... तथा वांदवउ ...
... साध्वी ... साधुनइ ... पदस्थनइ वांदणा दिइ श्री आदिवीरनइ वारइ व्रत पंच मध्यम जिननइ वारइ धर्म्म श्री आदि।

वीरतइवारइदीक्षालीधीपछी क्षोइएकअतीचारलागइ तिहनणीऊवासमणकीधापछीपर्यायछेदथाए मध्यमजिननइति
रतीवारपणइपाछइ तिहनणीदीक्षाथीव्रतपर्यायलेखवाइ३ प्रतिक्रमणद्विकछियातिमइ मासकल्पवीरतइआदि
नइवारइनिर्धारइकरवउं मध्यमजिननइवारइकारइअनइनकारइ९ पर्यूषणाकल्प वउमासुरहइउत्कृष्टउप
त्यइमनरिदिवानाए . ञि वरकल्पीनइजिनकल्पीनइउत्कृष्टअवग्रहजघन्य न हो स्थविरकल्पीविहा
रकरताजेहमा [मे आ या क्षेत्रकाक्षेत्रेइतिहामासकल्पकरिउं अ न इयायपताइतिहा
वउमासुरहिया आ ग जिवपीघणा पालीघणा मार्गचीकणा अघवामार्गे चौ रादिपरहलनानइज्ञा
णी वउमासापछीतिणइ क्षेत्रिमासकल्पकरइउ अमासनवेउल्पघावग्रहइ क्षेत्राक्षेत्रांतरणीयतीवउ
मासुआणपडिक्कमइयाजइ तिहांक्षा सुडिलद्रा मक्षानिरवद्यउहइ संघारयानीभूमिकाचीपाउहि

इ कमूयाकीडीपमुघजीवघणा थिरिइआहा रपाणीमिलइ पतलेकारणेयतीचउमासामासाहि
विहारकरइ वलीगजाह इडाइमर्यघणा आगि नउउपद्रवागाइइ अद्वि तेउहइ पहलेकारणेच
उमासुआणछाइचाल इ अवेलकल्पउद्देसिकशय्यातरपिंडराजपिंडकृतिकर्म पडिक्कमण ध मासकल्प पर्यूषण
ाकल्पइपविविल्पा ३ इतीर्थंकरनइवारइनियमिताजाइ इतिदश क ल्पा : पहिलातीर्थंक
रनइवारइजीवकहाइ न इसूध विविल्पातीर्थंकरनइवारइऋजुअनइप्राज्ञ १ श्रीमहावीरनइवारइ
वांकडाअनइसूधः मारवा की एकवउरुनइचेलइविहरवागयाहइ तिहांएकमार्गत इचियइ नटावउतावउइ
पीरवलयाजावारहिउं तिहांजोताघणीवारलागी पछइगुरुइपूछ्युंकहि आव्यु गुरेकहिउएवडीवारकिहांलागी
वलइकहिउंनगवन्नटावउएकअपारनाचउहइउंमिताजोयु गुरेकहिउंवछआपणयतीनटोवउनावउनजोईइ

नगवन्सुरुनेमिछामिदुक्कडं॥ वलीकेतलेकदिनेतेदजवेनाविहरवागयो तिहांवीजीवारनटवीनाचतीहोती वि
नवरूजेसुरुनेगुरइ नटवीनाचवारइहतोपणिनटवीवारीनहती तेजोइपिवडइविहरीगुरुकहइआव्यो गुरेकह्युं
वछघणीवारकिमलागी तिवारइचेलेकह्युं नगवन्आजनटीजोइनाचती गुरुइकह्युंमइवार्यो
नहतो चेलेकह्युं मेंसुरुनइनटजवार्योहतो पणिनटवीनथीवारी वछ आपणनइएकजो
वुनकल्पइ चेले कह्युं नगवन्मिछामिदुक्कडं पहिलातीर्थंकरनेवारइएह
वाजीवहता कक एदेसनांवाणीयानोद्रीमोदृष्टांतकह्योछे॥ कोईकवाणीयेतेणेऊटु
वनुमोहमुंकीवहुपणि गुरुकनेइनारित्रलीधुं गुरुविहारकीधो कोइकगामइ वोमासुरह्या तेवृद्धजनीइ
काजेउत्तरीइरिवहीपडिकमीकाउसग्गकर्योछे एहवेवर्षाआव्यो तेवप्रविस्मतोदेषीमनिमांकरसपनीसाव १

नावीपडिकाउसग्गपार्यो गुरुकह्युं वछकाउसग्गकरताघणीवारथई तेणेकह्युं नगवन्मेंअनध्यानधर्युं तेउमेनआ
ण आमेघमधुरोनेवरसे वेजेहुं त्रनेविषेवावीइ तेघणुंनीपजे पणिमाहराघरमांसं घणाआलसूछे तेत्रपाक
सूइपात्रइत्यादिकाई नहीकरताअइसुरुपकानिश्चितकाम्लनगवन्ए मेंअनध्यानधर्युं वलउंगु
रेकह्युं हेवछ आपणेएवांतनेनकीजे दोषलागे तेणेआवी पगेलागीकह्युंमिछा १
मिदुक्कडं विहिल्याछं तीर्थंकरनेवारइएहवाजीवते श्रीमहावीरनावारना केहवा कोईकसेविने
एकछत्रपणितेवक्रजडपि तानीसीपनमानेसाहसुंचो तेहनेकटुंबीइवार्योकुराधि तानेसाहसुंउत्तरनदंजेएक
दातेसे वक्रएकगामगयो छइ ७वेथीतेणेछत्रेराधीजिमीरवरुकीनावारतीकी विद्याइजइसुतोएहवेतेनेपितामाव्या
घणाइ कसारकेस्यापणिकमाइउघामयानहीपवेंकुटुंबीनेरुष्योतेलेकह्युं हवमांजमनोहतोअनेंघरमांहिंवेपवेको

टडीऊपरिवडावी कोईकपामिकमामनउघडावामकृमा हेतिहा आव्या जोइ तो मिद्याइं सूतो रहि ३२ हमेंबे आंटवि
इं कहिउ घुमा कमामकानकघाम्या नाह रोपिताइं घणाइमादं कम्या तेणें कहुं उमेजं कहुं जे पिता नंइमादमोउत्तरन
दीजइ॥ हवुमानाएह वाजीव तेतली कल्प पालवानो अंतर कस्युउ मेरु मगुलेसिमंत्रि तुलके पाउमं बुझि पाद ग
उँनन शाकः समिद्धांत विशाखे॥३॥ नैतत्पर्वसमपर्वं नैतत्कल्पसमं श्रुतं न धार्मिकसमः संघसूरियोरत्नजग
त्रये॥३॥ अबेलति गोल कप्प अठम तेलमा वउमही जो तिमुणइ वरसतिगं सो तइय भवे पावइ मुरकं॥२॥
पर्वणामुत्तमंपर्व दिनानामुत्तमंदिनं ध्येयानामुत्तमं ध्येयं पर्युषणाजगत्त्रये॥४॥ सव्वेनईणजा ऊजा वा
उआ सवो ह हीण तेतोद तहा आलनगुणी अ छोइ कम्मसुतस्स॥५॥ बालस्त्रीमंदमुरवाणांनृणां चारि
त्रकांक्षिणां अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धांतः प्राकृतः कृतः॥६॥ हवइ अषधसमान श्री कल्पसूत्र कहिइ॥य
था॥ ताहमवणइलावेंऊ णई अणावे तया उपदमेअ लियमवणे नऊंणइ तइ तंअरमायण होइ॥१॥
एवएसो कप्पो होसा सा वेवि कहमाणो अ सुंदरत्ता वाउवख्खु वारित्तरसा यण होइ॥२॥ अत्र व्या
ख्या॥ जिम कोइक राजाइं पोताना पुत्रनइ रोग आनागत जाणी त्रि णि वैद्य तेडाव्या तेवे
द्यने कहिउ जेह वा अषध करो जे माहरा पुत्रनइ किसउं रो गन ऊपजे तेवे
द्यमाहिं थी पहिलो वैद्य बोल्यो हे राजन्न माहरा अषध एहवा छे जो कोई रोग जइ तो
जाइ न जाइ तो न वारो गथाइ तिवारें ते राजाइं कह्युं सरतो सिंह जगाडवा बी जो वैद्य बोल्यो कहुं
राज माहरा अषध एहवा छे जे रोग जइ ते जाइ न जाइ तो गुण अवगुण न करे राजाइ ते वैद्यने विसर्जिवे कारणं ते
स्य मध्ये होम करवा पवे त्रीजो वैद्य बोल्यो तेणें कहिउ माहरा अषध एहवा छे व्याधि जइ ते जाइ न जाइ तो शरीरनेंवि

२

यइउद्दिधि सहातेकाकातिबलवधारइ लागजाइ वेद्यमकारियं मम्मानियमा मिसरा पिउ तिमए श्री कल्पसूत्रजा अषधसमान :
मानसतारूपायकुशलजाइ तद्धेइ उदिवपदवानांर्थकारपदवीनिधामानआवइजन्मांतरअतिऊमरूइहा एश्रीपर्युषणापर्व आवि
इअमारिप्रवर्तावीइ घमा वनांकीजइ जागरणकरीमहाआडंबरसहित श्रीकल्पसूत्रवा वावाइविधिमानलीइ नाग
केतनापरिइ अठम तपकीजइ तसमबंधकहीइ वइकांतासुरी निह्मावेश मे तनजाराइपकरइ तेण
इतनारिश्रीकातः श्रे छिठे तेहनइपरिश्रीमतीमाया ऊधिघणीपणिसु अ त घी आलकउपायक
रतासुअश्रीसिकरी प इ वेइपर्यूषणापर्वइकतआव्या श्रावकश्राविकामहू या तकरइ आपणपअठम
नवतपकरी श्रीकल्पमान सीमिइ तेऊमरइऊटेव तउववनमानलीजातिम रणअपनउ बीलविउजाउह
वलविअठमनघसु उइवइकम तेणइबालकइअ इमसुतपकरिउ स्तनपाननकरइ मातापिताइंघातिघी
विघनइदेषाडइ आलकउपायकरइ पणिबालक ताइंतहा बालकमूयइघाइकरीमूर्छापामु तिवारइघ
सु पितासुतनाडः रवघी हीऊफाटीमूउ तेहतिम तासुतनइसुजदायदीधउ॥ एहवइतपनामहिमाधीधर
णेंद्रनउआसनकांपि उ अवधिज्ञानेजाणिउ बालमूर्छनघी मूर्छावितवइ भूमि। क्ता रमाहिथीअस्टतसंचार
बालपणनरूपधा री ति हाआविउ पतालइअसुत्रीअलिनिमूर्छजाणी। रा ऊ सुरूपसहुमीलिय
नआव्या ब्राह्मणरूपा र ना अतिउतउसुतजीवइछइ जीवतुकाढीदेघामिंदेरा ऊ तदिकमूर्छिउ स्वामीए
मिंडकहीइ तेहसुधरणे इपामिलवीनवकरइ एबालकनइसूंवलिनविमालपणइमाता मरणपामी तेहनइबीजी
माताआवी तेणीबालकनइघणउअसुखदिइ एहवइतेहनइएकश्रावकमित्रमिलिउ,आगलिआपणाइः खकीवात
कही तेणइपतिबोधिउ तेहनावचनथीसुः कर्मक्षयकरवायथाशक्तिइतपकरइ एकदापर्युषणापर्वइकनाआः

विद्ध अहमत्र यंत्र पकरी मि६ [illegible] तेणं समएणं [illegible]
[illegible] अहमत्र यंत्र पकरी [illegible]
[illegible] ४

[illegible]
नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्व साहूणं एसो पंच नमुक्कारो सव्व
पावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं १ तेणं कालेणं तेणं समएणं
[illegible]
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
१	२	४	८	१६	३२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]
५२८

णं समणेभगवंमहावीरे पंचहत्थुत्तरेहोत्था तंजहा हत्थुत्तराहिंचुएचइत्ता
गब्भंवक्कंते १ हत्थुत्तराहिंगब्भाओगब्भं साहरिए २ हत्थुत्तराहिंजाए ३ ह
त्थुत्तराहिंमुंडेभवित्ता अगाराओ अणगारियंपव्वइए ४ ह
त्थुत्तराहिंअणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने के
वलवरनाणदंसणेसमुप्पन्ने साइणापरिनिव्वुए भगवं ५ तेणंकालेणं तेणं

५

समएणं समणेभगवंमहावीरे जेसेगिम्हाणं चउत्थेमासे अट्ठमेपक्खे आसाढसुद्ध
तस्सणंआसाढसुद्धस्स छट्ठीदिवसेणं महाविजयपुप्फुत्तरपुंडरीआओ महाविमाण
ाओ वीसंसागरोवमट्ठिईआओ आउक्ख एणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतर
चयंचइत्ता इहेवजंबुद्दीवेदीवे भारहेवासे दाहिणड्ढभरहे इमीसेओ
सप्पिणीए सुसमसुसमाएसमाएविइक्कंताए १ सुसमाएसमाएविइक्कंताए २ सुसमदुस
माएसमाएविइक्कंताए ३ दुसमसुसमाएसमाएबहुविइक्कंताए ४ सागरोवमकोडाको

कोडाए बायालीसवाससहस्सेहिं ऊणिआए पंचहत्तरिवासेहिं अद्धनवमेहि अ मा-
सेहिं सेसेहिं इक्कवीसाए तित्थयरेहिं इक्खागकुलसमुप्पन्नेहिं कासवगोत्तेहिं
दोहि अ हरिवंसकुलसमुप्पन्नेहिं गो- यमसगोत्तेहिं तेवीसाए तित्थयरेहिं
विइक्कंतेहिं समणे भगवं महावी- रे चरिमे तित्थयरे पुव्वतित्थयरनिद्दि-
ट्ठे माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स भारियाए
देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगोत्ताए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि हत्थुत्तराहिं

नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं आहारवक्कंतीए भववक्कंतीए सरीरवक्कंतीए कुच्छिं-
सि गब्भत्ताए वक्कंते २ समणे भगवं महावीरे तिन्नाणोवगए आवि होत्था चइस्सामित्ति जा-
णइ चयमाणे न जाणइ चुएमित्ति जा- णइ जं रयणिं च णं समणे भगवं महावी-
रे देवाणंदाए माहणीए जालंधरस- गोत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते तं रयणिं
च णं सा देवाणंदा माहणी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ इमेयारूवे उराले
कल्लाणे सिवे धन्ने मंगल्ले सस्सिरीए चउद्दसमहासुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा ३ तं

MEMORIAL

कुंकुम गन्ध १ [illegible] २ मौक्ष ३ लक्ष्मी ४ [illegible] ५ [illegible] ६ सूर्य ७ [illegible] ८ [illegible]

[illegible] ९ [illegible] १० [illegible] ११ विमाण १२ [illegible] १३ [illegible] १४ [illegible]

[illegible]

कल्याणकारी [illegible] धनकारी मंगलीककारी [illegible]

[illegible] कल्याणि शिवे धन्ये मंगल्ये [illegible]

[illegible]

[illegible]

३

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२

[illegible]

एवमिमानि ... देवानुप्रिये उदार स्फार मोटा वडा महास्वप्न ... केतलूं एक कल्याणकारी फलवृत्ति वि

एसिणं देवाणुप्पिया उरालाणं चउद्दसमहासुमिणाणं किमन्ने कल्लाणे फलवित्तिवि

शेष कल्याण फल ... थासे ... निकारवषी तेऋषभदत्त ब्राह्मण देवाणंदा ब्राह्मणीना समीपि ... एअर्थप्रत्ये नेसां

सेसे भविस्सइ तए णं से उसभदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए अंतिए एयमट्ठं सुच्चा

भली ... हृदय धरीने हर्षित मनमां ... हृदये ... धाराइं करी आहणिउं कदंबवृक्षनुं फूल ने

निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए धाराहयकयंबपुप्फगं पिव समु

... रोमकूप ... सुपन ... सुधार ... करीने ... विचार ... आप

स्ससियरोमकूवे सुमिणोग्गहं करेइ ईहं अणुपविसइ अप्प

... निरधार ... बुद्धि ... मतिपूर्वक ... तेस्वप्नना अर्थनो ... निश्चय करी

णो साहाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविन्नाणेणं तेसिं सुमिणाणं अत्थोग्गहं करे

करीने देवाणंदा ब्राह्मणी प्रति ... उदार प्रधान हे देवाणंदा देवानुप्रिये तें सुपन दीठां कल्याणका

इ देवाणंदं माहणिं एवं वयासी ६ उरालाणं तुमे देवाणुप्पिए सुमिणा दिट्ठा कल्ला ६

री मंगलीककारी हे देवाणंदा देवानुप्रिये सुपन दीठां ... धनकारी मंगलीककारी ... शोभाकारी

णमंगल्लकारगाणं तुमे देवाणुप्पिए सुमिणा दिट्ठा एवं सिवा धन्ना मंगल्ला सस्सिरीया आ

... कल्याणमंगलीक ... करणहार तें हे देवाणंदा देवानुप्रिये सुपन दीठां ते फल कहे छे अ

रुग्गतुट्ठिदीहाउय कल्लाणमंगल्लकारगाणं तुमे देवाणुप्पिए सुमिणा दिट्ठा तं जहा अ:

र्थ ... लाभ होसे हे देवानुप्रिये ... भोगनो ... हे दे० ... पुत्रनो ... लाभ होसे ... सुखनो लाभ होसे हे देवानुप्रिये

त्थलाभो देवाणुप्पिए भोगलाभो दे० पुत्तलाभो दे० सुक्खलाभो दे० ए

निश्चे ... हे देवाणंदा देवानुप्रिये नवमास ... अर्ध ... माता ... दिन

वं खलु तुमे देवाणुप्पिए नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण राइंदि

... सुकुमाल ... हाथ पग ... संपूर्ण ... पांच इंद्रिय ... लक्षण ...

याणं विइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजण

उदार्यादि गुण ... मान ... उन्मान ... प्रमाण ... संपूर्ण ... सर्व अंग सुंदर ... चंद्रमानी परि सौम्य आकार ...

गुणोववेयं माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगं ससिसोमाकारं कंतं

॥ लक्षण ... व्यंजन ... मान ... उन्मान ... प्रमाण ...

... लक्षण ... पृथ्वी ... स्त्री ... (left margin notes)

[illegible]

पिअदंसणं सुरूवं देवकुमारोवमं दारयं पयाहिसि ७ से वि य णं दारए उम्मु-

क्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जुव्वणगमणुप्पत्ते रिउव्वेय-

जउव्वेय सामवेय अथव्वणवेय इति हासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं संगोवंगा-

[illegible]

[illegible]

ण सरहस्साणं चउण्हं वेयाणं सारए पारए धारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए संखाणे सि-

क्खाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे अन्नेसु य बहुसु बंभन्नएसु

परिव्वायएसु नएसु सुपरिनिट्ठिए यावि भविस्सइ १४ तं उराला णं तुमे देवा-

णुप्पिए सुमिणा दिट्ठा जाव आरुग्गतुट्ठिदीहाउयमंगल्लकल्लाणकारगा णं तु-

मे देवाणुप्पिए सुमिणा दिट्ठा ११ तिकट्टु भुज्जो भुज्जो अणुवूहइ तए णं सा देवाणंदा माहणी

उसभदत्तस्स माहणस्स अंतिए एयमट्ठं सुच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठजावहियया करयलपरि-

लीनइ दस नख समाकरीनइ मस्तकि आवर्त्त करीनइ मस्तकि अंजलि करीनइ ऋषभदत्त ब्राह्मण प्रतिइ एह बोल कहइ ... जिमम

गच्छित्ता दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु उसभदत्तं माहणं एवं वयासी १२ एवं मे

ऋषभदत्त प्रतिइ ... एह वचन मानुं ... हे देवानुप्रिय एह वचन ... हे ऋषभदत्त एह वचन ... हे देवानुप्रिय

यं देवाणुप्पिया तहमेयं देवाणुप्पिया अवितहमेयं देवाणुप्पिया असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया इच्छि

... कारणनउ ... एह वचन ... हे देवानुप्रिय ... हे देवानुप्रिय ...

यमेयं देवाणुप्पिया पडिच्छियमेयं इच्छिय पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया सच्चेणं एसमट्ठे

... ते ... करीनइ ... ऋषभदत्त ब्रा

त्ति कट्टु ... त्ति कट्टु त्त ... सुमिणं सम्मं पडिच्छइ २ त्ता उसभदत्ते

ह्मण ... मानुष्य संबंधी ... भोगवती ... तेहनइ

णं माहणेणं ... माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ १३ तेणं का

लिपइ ... ते समय ... ... तेहनइ

लेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कऊ सहस्सक्खे

× कार्त्तिक श्रेष्ठि कथा ... ×

× ... ×

इ ... कार्त्तिक ... रावण ... राजा ... कार्त्तिक ... ... दीक्षा ... ... ×

... कार्त्तिक ... दक्षिणार्द्ध लोक ... बत्रीस विमान ... ऐरावण

मघवं पागसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमाणसयसहस्साहिवई एरावणवा

... मेघवाहन ... ... निर्मल ... आकाश ... बंधारी वस्त्र

हणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइ यमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंच

... महा ... ऋद्धिवंत महा द्युतिवंत महा बलवंत महा यशवंत म

लकुंडलविलिहिज्जमाणगल्ले महि ड्ढीए महज्जुईए महाबले महायसे म

... महासुखी ... सौधर्म देवलोक ... सौधर्मावतंसक

हाणुभावे महासोक्खे भासुरबोंदी पलंबवणमालधरे सोहम्मे कप्पे सोहम्मव

... कार्त्तिक ... तत्र श्री कार्त्ति ... ...

× ... ×

विमाननइविषइ सौधर्मीसभानइविषइ शक्रएहवइनामिं सिंहासननइविषइ तेहइतेदेवलोकनइविषइबत्रीसलाषविमान

डिंसए विमाणे सुहम्माए सभाए सक्कंसि सीहासणंसि से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावासस-

ना। वासीदेवतानुंअधिपति चउरासीहजारसरिषिऋद्धि महाअधवाआज्ञाअइसमितिरासी तेहमाहिसामानिकदेवतानावउ दिवतातिकेहवामहाउयो आरक्षा गामीमहत्त्व-त्रायत्रिंशक। प्प मंत्रितहसि.रामा कमाल

यसहस्साणं चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लो-

सामंतमरउमरणउक्कबेरधणद। आठअग्रमहिषी।पदमा।शिवा।शची।अंजू।अमला।अप्सरा।नवा। बाह्यमध्यअभ्यंतर त्रणसभा
बाह्यारलोकपालतमहितवइ मिक्रा उराहिणी दएआठअग्रमहिषी आठएकापरिवारसहितवइ एहवीत्रिणपर्षदा। धमाइसातसेना

गपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं स- परिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अ-

क।हस्ती।अश्व।रथ।पदाति।वृषभ।नर्तक।गंधर्व सातअनी कतणा स्वामी हस्तीआदिदई आत्मरक्षकदेवताचउरासी
कटगंधर्वउएमानकटकनीवक्राइनायक आतसातअनी कतणास्वामीतिमहितवइ

णियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं। चउण्हं चउरासीए आयरक्खसाहस्सी-

सहस्रचोगुणाअनेराइघणां सौधर्म देवलोकवासी विमानना रहनार देवता तेहनइ देवांगनाउने

णं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं विमाणियाणं देवाणय देवीणय आ-

रा ईपणु अग्रेसरीपणुं नायकपणुं पोषक पोटाईपणुंतेहइ आज्ञाईश्वरपणुंतेहइ सेनानउंअधिपत्यपणुं सेवकपांहिंकरावतउ

हेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसर सेणावच्चं कारेमाणे पा-

पालतउ महाशब्दि अविछिन्नपणइनाटिकगीत वाजित्र हाथेमाहीमा दिवाडतताल कांसानी त्रणेघणनिमरिसुंवाडहनेबाजित्र पडव

लेमाणे महयाहय नट्टगीय वाइय तंती तल ताल तुडिय घण मुइंग पडु पडह वा-

इयपकहेसुबाजउ वजाडवउतेहनइ रविक.रानइ दिव्यइतकेहवीइहतफाजोइवा देवतानइ.उ.वितयोग तेगानोगवसुखिइरहइछे एहबनइदरिमूल तेकिव.लकल्प किवल्कल्प.मूर्तज्ञान

इयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ १४ इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीव

द्वीपएहवइनामिंद्वीप विस्तीर्ण अवधिज्ञानिइ जोतउ थकउ। विचरइ तेजंबुद्वीपनइविषइ श्रमणभगवंतश्री

दी वं विउलेणं ओहिणा आभोएमा- णे विहरइ तत्थ णं समणं भगवं महा-

महावीर जंबुद्वीपद्वीपनइविषइ भरतक्षेत्रनइ विषइ दक्षिणभरतार्धि ब्राह्मणकुंडग्रामनगरिनेहन

वीरं जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दा- हिणड्ढभरहे माहणकुंडग्गामे नयरे

ऋषिभइ ऋषभदत्त ब्राह्मणनुं कोडालसगोत्रनउ धरणहार भार्या देवानंदा ब्राह्मणी जेहनुंजालंध

उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स भारियाए देवाणंदाए माहणीए जालंध-

रसगोत्र तेहनीकूषि गर्भपणइ अवतरिया देषइदेषीनइ हर्षिउमनोयातुविहनआणंदिवउहइजेहनुं समृद्धिपण अतिहि उपामिउ समृद्धि

रसगोत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंतं पासइ पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए नंदिए परमाणं-

MEMORIAL

नाविष्ठहस्त श्रीतिमामित्रम नवहूजिहस्त । रक्षानसुमनस्मूनाविश्वक्षत्र हरमबमित्रवूमस्त्रहीयवहजोहस्त धाराहस्त्राहणिशंकदबदूक्षनयक्त

दिव प्रीडमाण परमासमाणमिव हरिम वमविमध्यमाणहिस्यव धाराहस्यकस्यबनीव

मुमक्तननेहनीपरिं हर्षितअससिया रोमक्रूपबहूजिहना विकम्पानगावेननत्रअवनरवत्रनेहविक्षकपनाआनंदश्री

घरद्धिक्रमस्मवस्तुमाजस्य क्रमविद्याराम्क्षाव विद्यमित्यवरकमजतस्यणवस्यण

हा जसांयधानककणबहिरमा बाक्रबंधस्रक टक्कडलादिक हारिकरीशोनत्र कदयघ्लबहजोहस्त मोती

पद्यत्रिस्मवरकडगात्रडिस्य किवर मत्रड क्रडलेहारविराजतवाद्ध पा

मयमूमणयलह लह यं जाबत्रयोलनकहाह। हालत्रजेनूमणातहस्त ध रतन ममस्त्रमत्रुरित आदरमहिनकेनावस्तुवेगवत कुह तिम हडमहारा ज।

लवपत्नवमाणघोत्नतस्त्रमणधार ममलमत्रशिस्य चवलस्तुरिद मिहा

मिहामनघिक्रकवहकवीनहं माटपीवघिक्रकतरहपाद पीवघिक्रकतरीनहं विहूर्यरत्नमहित रक्षनविष्टरत्नअडानरत्नमहि

मणात्रअस्तुछहश्ला पादपीठात्रपाघामछहश्ला विमलिस्यवरिठरिठ अंकुणतित्र

नहूडेकारीगिरनीपाईदिदीप्यमान मणिकुक्तानादिकेरत्न नूविमवदबीपाडका मुंकह मुकीनहं अमहदमि त्रत्रामण

णविस्य मिमिमिमित मणिरस्त्रमणिमडिस्यात्रपात्रयात्र स्त्रस्यहश्ला एगमाडिसंग्रत्रा

१२

करह करीनहं अडलिकामा समानकोन हाघनाअयवहजीणहं नीर्थकरमहानीरमाहस्त मानआवयगलामाहस्तुआडडाईनहं

मगंकारडश्ला अडलिमत्रलियमाहाद्व नित्रयरानित्राद्ध महठपमाडअमुगवड

डावाचगनत्रहीवणक्रवत्रकरहकरीनहं किमणावगनत्रहीवण नूमितलहमापह हमकरी त्रिमिवारमस्तकरहीतलहलगाडह

श्ला वामजाणुंअचेडश्ला दाहिणंजाणुंधरणितलंसिमाहट्टु तिक्खुत्तोमुद्धाणंधरणित

लगाडानह लगाडानहआमणुमस्तक लगारेकत्र वत्रनमहूज्यो नमीनहं ककणवहिरमामहितवदबीवाक्रअवीकरह क

लंसिनिवाडेडश्ला ईसिपच्चुन्नमेड। श्ला कडगतुडियथंभियाउभुयाउम

वीकरीनह करनलनीपाइ दमहनयकत्र रमलीमस्तकिआवर्त्तकरानह मस्तकिअञ्जलिअन्योन्यहस

न्हेडश्ला करयलपरिग्गहियंदस नहंसिरसावत्तं मत्थएअंजलिंकट्टु एव

ग्रंथस्थविरानकरी नमस्कारहउनमघलवदेलववांअ भगवतहा भवतनहतमस्कारहो न भगवंतहह आदिनाकरना स्वयमानह

पडवत्रकहहह हितनहनमस्कारहस्त।बाडीवार गत्राहनावक्रदर्य अघा।नणी।क्रीकानरम रहह चत्रर्विधसघनास्थाम प्रतिबोधमा

हमहासडा।१५ अवतारघातहनणीअमहतांण हाम्यत्रयत्राधवरामपुधक्रिसुदहमपवा क।माधुमाध्वीआवकआवि माबहडान

कहीह।महानहयावतणीअरहं यदमयत्रलह्वाम श्रीधामत्रबर्धात्रमा कांयवत्रविधमघस्थापके गवनलेटने नमस्कारहत्र

निमुध अर्कयानिवडीवारअर्थमहित

वयामी १५ नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धा

ज्ञान ध्यान करता अने त्रिहुं लोक ना पूजित अरिहंत आदिकर्ता छे नाणकहाद।कर्मऊपरि नणीअरिहंतकरमाहह

धम्मसारहीणं [illegible]

[illegible]

णं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्त

[illegible]

माणं लोगनाहाणं लोगहियाणं (लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अ

[illegible]

भयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं णं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहि

[illegible]

दयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्क

[illegible]

[illegible]

वट्टीणं दीवोत्ताणं सरणंगइपइट्ठा अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं

[illegible]

जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं णं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं

[illegible]

णं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयल मरुयमणंतमक्खयमव्वाबाह म

[illegible]

पुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं नमुत्थु

[illegible]

१२

आदिकरस्य ...
नमस्कारस्त्व मस्तात प्रवर्तमकालेऽवक्रात्ईवं तस्मिन् ... योतामातीर्थङ्करविषयो ... चरमतीर्थकरस्य पूर्वतीर्थकरैस्त्रयोविंशतिः
ण समणस्स भगवओ महावीरस्स आइगरस्स चरिमतित्थयरस्स पुव्वतित्थयरनिद्दि
यद्दा नमस्कारस्त्व भगवतः ... देवानन्दायाः कुक्षिस्थिताः ... सौधर्मेन्द्रः ... गवतं ...
ट्ठस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं। भगवंतं तत्थगयं इहगए पासउ मे भगवं
सुज्ञानदेवो निशाधिका ... नैऋमकरानः श्रमण ... गवतश्रीमहावीरस्वामिनः ... वादस्त नमस्कारं करोति
तत्थगए इहगयं तिकट्टु समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता
... सिंहासने ... पूर्वाभिमुखस्तत्र निषण्णः ततः ... शक्रस्य ... देवेन्द्रस्य ... देवराजस्य ...
सिंहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो
अयम् एतादृग्रूप आत्मविषये चिन्तितः प्रार्थितः मनोगतवचनं ... संकल्पः विचार उत्पन्नः
अयमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था १६ नए १४

निश्चयेनैतद्भूतं नघो ... ... अरिहन्त चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेवप्रभृतयः
यं भूयं न एयं भव्वं न एयं भविस्सं जं णं अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा
... अन्त्यवर्णकुलेषु ... अधमकुलेषु ... तुच्छकुलेषु ... दरिद्रकुलेषु ... कृपणकुलेषु ...
अंतकुलेसु वा पंतकुलेसु वा तुच्छकुलेसु वा दरिद्दकुलेसु वा किविणकुलेसु वा भि
... आगता अतीत ... आवेत्स्यन्ति ... आगमिष्यत्काले
क्खागकुलेसु वा माहणकुलेसु वा आयाइंसु वा आयाइंति वा आयाइस्संति
... एवं निश्चयेन अरिहन्त चक्रव ... र्तिनो बलदेव वासुदेवप्रभृतयः ... आरक्षकमुख्य
वा १७ एवं खलु अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उग्गकुले
... राजन्यकुलेषु ... इक्ष्वाकुवंशकुलेषु ... क्षत्रियकुलेषु हरिवंश ...
सु वा भोगकुलेसु वा राइन्नकुलेसु वा इक्खागकुलेसु वा खत्तियकुलेसु वा हरिवंस
... तथाप्रकारेषु ... निर्मलमातृपक्षाः ... निर्मल ... कुलेषु चक्रवर्त्तिबलदेवा आयाता आयान्ति आयास्यन्ति
कुलेसु वा अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु विसुद्धजाइकुलवंसेसु वा आयाइंसु वा १८

॥६॥ नकहादसअछेरा॥ उवसग्गगब्भहरणं इत्थीतित्थं अभाविया परिसा कण्हस्स अवरकंका॥ अवयरणं चंदसूराणं॥१॥ हरि
वंसकुलुप्पत्ती चमरुप्पाओ य अट्ठसयसिद्धा अस्संजयाण पूआ दसवि अणंतेण कालेण॥२॥ श्रीमहावीर
तस्य केवलज्ञानोत्पत्ती देशना निष्फला जाता तदुपसर्ग॥१॥ गर्भहर
णं श्रीमहावीरस्य २ ॥३॥ मल्लीतीर्थंकरस्य स्त्रीत्वे तीर्थं प्रवर्तितं ॥ यदा
महावीरराज्ञः ... देशना जाता ... तिष्ठाकीधी

अविण्णएस विहावि अणंताहिं उस्सप्पि णीओसप्पिणीहिं विइक्कंताहिं समुप्प

सुप्पज्जइ १८ नामगुत्तस्स वा क म्मस्स अक्खीणस्स अवेइयस्स अ

णिज्जिन्नस्स उदएणं जन्नं अरहंता वा। चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा ः

...तमहद्धरतयकोज्जइ... श्रीआदिदेवतपकरइ... मातईमहावल... विरायप्रलाननणीमाघइमी... मकाबइ... मारणानिद्धिनिबद्ध
वीमायाकरीनपकर... तिमायानणीश्रीविदकर्मबांधिउ... नामगोत्रकर्मउपार्जिउ
...तीनीकुलि...
...॥३॥ श्रीमहावी
रनइ ... नारदनइ ...

मेरुकीयइ ... पनिकाविलवाप्ठदेवनवमेवकपदमनान... गवीकुलिइंलवणाधिपआरा
धी ... जाइ ... धा नकीघरि गयागयाव
सुआलेन॥५॥ कोआवीइ ... महावीरनइंवादयाआव्या॥६॥ कोआवीइंगजपधिंजाताथी

य शुद्रादिकनांकुलनइविषइ अधम तुच्छ दरिद्र भिक्षुक कृपणनाकुलनइविषइ ब्राह्मणनाकुलनइविषइ आव्याआवइ आवसिइ कु

अंतकुलेसु वा पंत तुच्छ दरिद्द भिक्खाग किविण माहणकुलेसु वा आयाइंसु वा ३ कु

...अवतरिवा ... अवतरे ... नमूकस नहीनिश्चयकरी योनिमार्गजन्म ... निःक्रमणनी

च्छिसि गब्भत्ताए वक्कमिंसु वा वक्कमिति वा नो चेव णं जोणीजम्मणनिक्खमणे

पामी पूर्वे नथीपाम्या वर्तं नहीपा मिस्यइ आगा १९ पछु श्रमणभगवंत श्री

णं निक्खमिंसु वा निक्खमंति वा निक्खं मिस्संति वा १९ अयं च णं समणे भगवं

महावीर जंबुद्वीपद्वीपनइविषइ भरतक्षेत्रनइविषइ॥ ब्राह्मणकुंडग्राम नगरनइविषइ ऋषभदत्त ब्राह्मण

महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्तस्स माहण।

...वीनाश्रावकमाला॥ ... नइघरिआ
...
... वइसानि ...

देवानंदाकुक्षि... गर्भमा...

१५

वीरइराज्ञा अनइवनमालाभूआ राज्ञीअज्ञानकष्टकरीसौध र्मेइंदेवलो कइकिल्विषीयापणइऊपनउ अवधिज्ञानइजाणिउ
पूर्वगतीआमरीदेवलोकिजाइ तिहनणीकल्पवृक्षमाहिंइहरिहरिणीऊपाडीनइनर तव्हिउनइविमइवपातगगइ इक्ष
निक्षवउनउऊपनउवंद   कीर्तिराजामरणपामिउ लोकिराजावीजउजोतइ आकाशनइ।   विमइदेवताइक्षिउ जि
उस्नाइरहरिहरि   णी   मल्हिनराजाक्त पलिउहतइमांससमिश्रितकल्पवृक्षना॥   फ   लनउ आहारदेख्या
देवताइशरीर   सं   क्षे   पिउ लोकिमांसना आहारदीधा हरिहरिमिवामा   धी   घ   णउराज्यपाली म
रीनरगिगयु तिहन   7   मतानथी हरिवंशऊपनु।   एमातमउअछेरू उआ   ह   जितरतनइविमइवि
लोकमतिवइशनइ।   वमइ सूरणगाघापतिवी   रवरमीनामसीदीक्षाय   1लीवमारइपडु अवधि
तेहनुं कोडालसगोत्र   तेहनी भार्या   कहीइ   श्रीदेवाणंदा   ब्राह्मणी   तेहनुं जालंधर

स्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए। देवाणंदाए माहणीए जालंधर

ज्ञानिं पोतानामाघात्रऊपरिसौधर्मेइंद्रतापगादेखी
नइपाकवानद्यु ऊमाइ   नइंइदिवज्ञसंकिउ ना
तिहजाद्यु श्रीमहा   वी   रनउआरणजाणीनइथार
वमाइइनइइम   क   हा   इहदेवलोकिसुहतो सुवनपतिसौधर्मलगिइनाधु
श्रीऊपनादेवलोकि   सु   हतातिहांरहु आछानरसुमीधा रिमांछारिमदस्मसुआ न
वनवइ अहंयनरकम्म   सुआ सिद्धियायागममयसि॥ रिपन्नतइऊपननासुवनबाणु अ
1वठ एकइमनइसीधा मध्यम अवगाहनाइसीकड पलिउ कुष्टोत्रअवगाहनाइनमीकड अनइतेसीधातिआश्चर्य आछेरउ॥७
समवसरणधितापना निर्वाणपिवाकितानिकालिमाध्रुनउविछेदहीय तिकारइं ब्राह्मणगृहस्थावयपतीनापरिग्रहाकराविवालो
क

श्रीअभ्युरंथ्यां   सर्वमहोतिआंमेवाच्या   नितोताहावहानामाहिकरयो इइ २

णा तेअसंयतीनीपूजाकरा   एहमसुविधिनाथथीमांडतीर्थकरलगइं असंयतीनीपूजाहवी॥एह   मअछेरांके हनइवारइहवां।
दमसुविधामसेवेदस   ह   मअछेरयाइजायाइ मेघकनामियाइ तिहांणालीहनति   या   ह॥वाउमसजिणअछम
णाय   तेहनीक्षत्रिनइविषइ   सर्वपणइअवनरिया   तेआचारछे एह   अतीतवर्त्तमान   अनागतकालनी   शक्रनी   इ

सगुत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते त्ति तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं दे

वतानाइंद्रनोदेवतानाराजानो   अरिहंतने   भगवंतनइ   तेहवाप्रकारनाकुलथीक्ष   अंतशूद्रकुलथीक्ष   पांतकुलथी

विंदाणं देवराईणं अरहंतेभगवंते तह   प्पगारेहिंतो अंतकुलेहिंतो पंतकुले

क्ष   तुच्छकुलक्ष दरिद्रक्ष० वणीमगकु० भिक्षाचरना   कृपणकुलथीक्ष   कृपणक्ष०   ब्राह्मणना   कुलथीक्ष तेहतइ

हिंतो तुच्छ दरिद्द वणीमग भिक्खा   ग किविण माहणकुलेहिंतो तह

वाउग्रमकुलनइविषइ   भोगकुलनइविषइ   सर्वक्षत्री   नाकुल राजान्य० ज्ञा न० क्षत्रीना० हरिवंशनीकुलनइविषइ

प्पगारेसु उग्गकुलेसु वा भोगकुलेसु वा राइन्न नाय खत्तिय हरिवंसकुलेसु वा

अनेरइ   तेहवाप्रकारनाउत्तमकुलनइविषइ   विशुद्धमातृपक्ष पितृपक्षवंशनइ एहवाकुलनइविषइ   जिहांलगइराज्यपालनइ लोगवे नाथइ

अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु विसुद्धजाइकुलवंसेसु वा जाव रज्जसिरिं कारेमाणे पा

1०८ र्यमिहमीअन्तजिणमिहरि   यमो लेमिजिणवरककका गमणककमममपयं॥२॥हवीनिठमली।   सुआश्रम्भजयाणनं मल्लिण
अवामसाआहिरा। वीर।   ऊ   णदश्मतिहमिउ॥ऊपननापनइवारइ१०८मीधा मीतलना   घ   नइवारइहरिवंशऊपनु।
नमिनाथनइवारिकृष्णअम   रकंकाइंगयाउमछिनाथनइवारिस्त्रीतीर्थकरथमुविधिनाथनइवार   इअसंयतीनीपूजाहवीयथाक

तामअछेरांमी
महावीरनइवा
रिहवा इतिअ
छेराधिकारः

महराविइ सादराविन नेमाठे श्रेयठे ए तं मेवं निश्चय सुजने खलमम विसमठी

बाक्रलनकविषक् भगवंतश्रीमहावीर चरिमतीर्थंकर ऋषभादिकेकहितजेमहावीरकूसिद्ध ब्राह्मणकुंड ग्रामनगरथिक

ऌसमाणस्स भगवं महावीरं चरिमतित्थयरं पुव्वतित्थयरनिद्दिट्ठं माहणकुंडग्गामाओ नयरा

ऋषभदत्त ब्राह्मणजेहनत्र कोडालसगोत्र नेहनीनार्या देवाणंदा ब्राह्मणी जेहत्त जालंध

ओ उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणंदाए माहणीए जालंध

रसगोत्र नेहनीकूषिविक्रमध्यकहीनक् क्षत्रीकुंड ग्रामनगर रनकविषक् इक्ष्वाकवंशक्षत्रीविशेषतेहमाहि सिद्धार्थक्षत्री

रसगुत्ताए कुच्छिओ खत्तियकुंडग्गामे नयरे नायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स

जेहनो काश्यपगोत्र नेहनी भा यांकेमुतिसलाक्षत्रीआणी जेहत्त वासि

खत्तियस्स कासव गुत्तस्स भा रियाए तिसलाए खत्तियाणीए वासि

ष्टगोत्र नेहनीकूषिनकविषक् गर्भपणक् संहराविएक्।। जेवलीतेतिसला क्षत्रीयाणीसुगर्भतेहनत – रत

ट्ठसगुत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए साहरावित्तए जे वि य णं से तिसलाए खत्तियाणीए गब्भे

पणी देवाणंदा ब्राह्मणी जेहत्त जालंधरसगोत्र नेहनीकूषिनकविषक् गर्भपणक् संहरावीएक्

तं पि य णं देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगुत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए साहरावित्तए १७

कमकरीनक् एहवत आलोचक् आलोचीनक् हरणेगमेषी पायकनाकटकनउस्वामी देवप्रतिसादकरावक् हरणेकमेषीनक्ते डावीनक्एहवुकहे

त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता हरिणेगमेसिं पायत्ताणीयाहिवइं देवं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वया

क्। २२ एवंकहीनरि हेहरिणेकमेषी देवानुप्रिय एहवनथी एहवुनहि एहसिहनही जेअरिहंत भगवंत

सी २२ एवं खलु देवाणुप्पिया न एयं भूयं न एयं भव्वं न एयं भविस्सं जं णं अरहंता वा

चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव एहवाउत्तम पुरुषअंतकुल प्रांत तुछ कृपण दरिद्र भिक्षाचर

चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा अंतकुं पंत तुच्छ किविण दरिद्द भिक्ख

नाकुलनकविषक् आव्याआव इआवसिक् एहवुनही इणीपरिनिश्चक्अरिहंत चक्रवर्त्ति बलदेव वा

यरियकुलेसु वा आयाइंसु वा ३ एवं खलु अरिहंता वा चक्कवट्टी वा बल वा

सुदेव उग्रकुलनकविषक् भोगकुल० राजानकुल० ज्ञा तक्षत्रीनाकुलनकविषक् इक्षाकुकु० हरिवंशकुलनकविषक्

सुदेवा वा उग्गकुलेसु वा भोग राइन्न नाय खत्तिय इक्खाग हरिवंसकुलेसु

अनेराक् तथाप्रकारनाउत्तमकुलनकविषक् निर्मलजातिकुलवंशकुलि एहवावंशनकविषक् आव्याआवक्आवसिक् ३ २२ अछवली

अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु विसुद्धजाइकुलवंसेसु वा आयाइंसु वा ३ २२ अत्थि

॥र्द्धा॥नामगुत्तस्सकम्मस्स वाणोश्रमपरि मरीचिभवमबंधकर्णाहं निहांमूर्त्तिश्रीवीरस्य महकप्पामप्पाचिकाकलवकर्णाहं।
ग्रामश्राग्निदत्ताभमरीचिरा म रःपाद्यपरीवारद्भुराः ममात्तवकुलविश्वभूतिरमारा ना रायणोनारकः सिंहोतिर
यिकोनवगुवकोशा। श्व क्री मुरोनदनः श्रीमुणमावरनिर्जरीवर्तनवाधीरभु लो की गुरुः १ एकदानरस्थ
कोडश्रीश्रादिदवबूबि। या श्रामनवमरणमाहिकाहतीर्थकरस्वर्गीबह नया। वं तदकहिउ बालिउमयम
बहुडाणह परिवारकतउ. विपलाधउबहडीणह एहवउनाहमुउ मरीचिहमिनामिं। हुं थरिमतीर्थकरडांमह श्रा
एतविनयनावुमेल मनारमांहि आश्चर्यभूत अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी नेउत्सर्पिणीअवसर्पिणी विनिक्रमहकांतह

एस वि भावे लोगच्छेरयभूए अणंताहिं उस्सप्पिणि उस्सप्पिणीहिं विइक्कंताहिं स

उपजइ महा गोत्रउपनामतानीवेगो़ि अणक्ष यथहक्षनह अवेदहक्षतह अणनिर्जरक्षतकर्म उद

मुप्पज्जइ नामगुत्तस्स कम्मस्स अक्खी णस्स अवेइयस्स अणिज्जिन्नस्स उ

यश्राविहकातह जेअरिहंत चक्रवर्ति बलादव वासुदे वएहवामाटा अंतकुलनहविषह घोन उच्छ कृपणकुलनं द

दएणं जंनं अरहंता वा चक्क बल वासुदे॥ वा वा अंतकुलेसु वा पंत तुच्छ किविण द

हडिनरहनहविषह त्रिस्ट नामिहंप्रथमवासुदेवकुलिमिह।एहडि मरीचिमहाविदेहि। प्रयमित्रहमिहनामिहचक्र
वर्त्तिजमह एहवउमान ली नरतचक्रवर्त्तिमरीचिकहह्श्रावीनह भगवतनउ. क हिउमेवधकहीनहवा
दीनहएहवउकहहन वि ति पारिवका वदामिश्रहहमवतिजम्म जाह्मह मि नि वयाग अपछिमा
तिणवंदामि॥१॥या रह्म री विचिपदीश्रामफानीश्राकाशकुलालीमाहहरहजात्रां प नाउप्रथमवचकवर्त्ति व
माजउप्रथमतीर्थकर अनंतहर्क्री उप्रथमवासुदेवथाइस मि महाविदेहिप्रथमचक्रवर्त्तिथाइसि वलीमकलमदवीनउसाक।

नतीर्थकरथाइसि गुमारहकुल लउउत्तम एहवउकहानाचिउ तिहांनीचैर्गोत्रकमार्जिउ अन हकपिलश्रागलिउधूत्रप्रकाश
मिउ तिहनणीममारनह॥ उ एहवमीनहबाह्मणनाकुलनहविषह मरीचिभवउली। उ तीर्थकरनहनविश्रवतरि
रिह निझावरनांकुलनहविषह श्रावाश्रावहश्रावमिह उहहनिषह योनिजन्मनहश्रर्थि अनादिकहकलनीयोनिथी जन्मन

रिद्द भिक्खागकुलेसु वा आयाइंसु वा ३ नो चेव णं जोणीजम्मणनिक्खमणेणं निक्खमिं

हुह उ वउ हेहरणनांमथी एश्रमणभगवंत श्रीमहावीरतीर्थकर जंबुद्वीपद्वीपनहविषह भरतक्षेत्रनहविषह ब्राह्मणकु

सु वा ३ ॥२॥ अयं च णं समणे भगवं महावी रे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे माहणकुं

डग्रामनगरनहविषह ऋषभदत्त ब्राह्मण। जेहं ऋ.कोडालमगोत्रनेहरनी भार्यादेवानंदा ब्रा

डग्गामे नयरे उसभदत्तस्स माहण स्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देव

ह्मणी तेहनउ जालंधरस गोत्र नेह नीकुक्षिमनहविषहगर्भपणहश्रवतरिउ नेहसणीहेहरणनांमेथीए

णंदाए माहणीए जालंधरसगुत्ताए कुच्छिं सि गब्भत्ताए वक्कंते ॥४॥ तं जीयमेयं तीत

श्राचारहे श्रतीतश्रनागतवर्त्तमानकालना जेशक्रदेवेंद्र देवतानां राजाश्रधिपति नेहनु जेश्ररिहंत भगवंत तथाप्रकारनाश्रधमकु

पच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं अरहंते भगवंते तहप्पगारेहिं

उनेहनणीडाहेकुलेजानिनउमदनकरिवउ यतः जायकुलमूवबलमूक्ष नवजानमिरीहश्रहमहमत्तो पद्यायविहवंधह श्रमुयाह बहुजनमगार॥

जघी अंतकुलघी प्रांतकुलधी तुच्छ कृपण वनीमग ब्राह्मणमाकुलभिक्षुकेऽन्ये तेहगप्रकारे

तो अंतकुलेहिंतो पंत तुच्छ किविण वणीमग माहणकुलेहिंतो तहप्पगारे

रुवा विशुद्धजातिकुलवंशेषु उग्रकुलनरविषये भोगकुलराजन्य ज्ञात क्षत्रिय इक्ष्वाकु हरिवंशकुलनरविषये

सु विसुद्धजाइकुलवंसेसु वा रायकुलेसु नाय खत्तिय इक्खाग हरिवंसकुलेसु वा

अन्यतरेषु तथाप्रकारेषु उग्रमकुलनरविषये निर्मलकुल निष्कलंककुले एतादृशानरविषयेषुसंक्रमावोतु २५

अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु विसुद्ध जाइकुलवंसेसु साहराविज्जए २५

तेहगणीकाकुक्षिहरणगमेषीदेवानुप्रिय श्रमण भगवंतश्रीमहावीरप्रते ब्राह्मण कुंडग्राम न

तं गब्भं चीअ मे देवाणुप्पिया समणं भगवं महावीरं माहणकुंडग्गामाओ नय

गरथिकु ऋषभदत्त ब्राह्मणतेहनुं कोडालस। गोत्रतेनी भार्या देवानंदा ब्राह्मणी तेहनुं

राओ उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणंदाए माहणीए जा १७

जालंधरसगोत्र तेहनी कूखिथकी क्षत्रियकुंडग्राम नगरनरविषये ज्ञातिक्षत्रियमांहिविशेष सिद्धार्थ क्षत्रीतेहनुं

लंधरसगुत्ताए कुच्छिओ खत्तियकुंडग्गामे नयरे नायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्ति

काश्यपसमानगोत्र भार्या त्रिशला क्षत्रीआणीतेहनुं वासिष्ठसमानगोत्र तेहनीकूखिनरविषयगर्भ

यस्स कासवगुत्तस्स भारियाए तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठसगुत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ता

पणि संहरि मेहलि संहरीनइ जेवली तेत्रिशलाक्षत्रीआणीनउगर्भ तेपुत्रीरूपनेतेई तेदेवानंदा ब्राह्मणी

ए साहराहि साहरित्ता जेवि य णं से तिसलाए खत्तियाणीए गब्भे तं पि य णं देवाणंदाए

तेहनउ जालंधरसगोत्र तेहनीकूखिगर्भ पणइसंहरिमेहलि संहरीमेल्हीनइ मांहरीएह

माहणीए जालंधरसगुत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए साहराहि साहरित्ता ममएय

आज्ञा शीघ्रमेवपाछीआपि इंद्र ति कारयबीते हरिणेगमेषी पायकसेनाकटकनु

माणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणाहि २६ तए णं से हरिणेगमेसी पायत्ताणी

स्वामी शक्रदेवेंद्रः देवराजा देवतात्रुंधिमनि।। हरिणेगमेषीनइएवकह्युंकहइहुंतउनइ हर्षितसंतुष्टयावत् हाथ।

याहिवई देवे सक्केणं देविंदेणं देवरन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए करयल

जोडीमाथइवधावी एहवीआज्ञाआपस्वामीजीआपेतेप्रमाण एहवुं कहीनइविनयेंआदेशवचनमानलइअंगीकरे एहवउंमांतलीनइ आज्ञा

परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं जं देवो आणवेइ त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता सक्क

स्स देविंदस्स देवरन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ२त्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कम

इ२त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ२त्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरइ तं०

रयणाणं १ वइराणं २ वेरुलियाणं ३ लोहियक्खाणं ४ मसारगल्लाणं ५

हंसगब्भाणं ६ पुलयाणं ७ सोगंधि याणं ८ जोईरसाणं ९ अंजणाणं

१० अंजणपुलयाणं ११ जायरूवाणं १२ सुभगाणं १३ अंकाणं १४ फलिहाणं १५ रि

ट्ठाणं १६ अहाबायरे पुग्गले परिसाडेइ२त्ता अहासुहुमे पुग्गले परियाएइ परि

२०

याइयइत्ता २३ दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ२त्ता उत्तरवेउव्वियरूवं विउव्वइ

त्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए उद्धुयाए सिग्घाए दिव्वाए देवगइए

वीईवयमाणे२ तिरियमसंखिज्जाणं दी वसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबु

द्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणे व माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव उस

भदत्तस्स माहणस्स गिहे जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवागच्छइ२त्ता आलोए सम

हारकत्ताऽऽहत्यकमावग्गो वडा ... देवतानी गतिनउं ... कर्कसंक्रांति
सूर्य ... नामाविसाग ...
... श्रीमहावीर ...
... देवताना ...
... विनाग कीधउ ...

ि श्रमणभगवंत श्रीमहावीरनइं प्रणामकरइ प्रणामकरीनइं देवानंदा ब्राह्मणीनइं परिवारसहितनें अ

मणस्स भगवओ महावीरस्स पणामं करेइ २ त्ता देवाणंदाए माहणीए सपरिजणाए

वस्वापिनी निद्रा दिइ देईनइ योनिमांहिथी अशुभ पुद्गल काढइ काढीनइ शुभपुद्गल मांहि

ओसोवणिं दलइ २ त्ता असुभे पुग्गले अवहरइ २ त्ता सुभे पुग्गले पक्खि

मेलइ मेलीनइ अनुजाणउ भगवंत इम करीनइ श्रमणभगवंत श्रीमहावीर प्रति तेहनइ आबाधा रहित न

वइ २ त्ता अणुजाणउ मे भयवं त्ति कट्टु समणं भगवं महावीरं अव्वाबाहं अव्वा

... २२

सहरतां पीडा न करइ
अबाधानइ गर्भनइ दिव्यप्रभावइ करी हस्तसंपुटि लेईनइ श्रमणभगवंत श्रीमहावीर प्रति जिहां

बाहेणं दिव्वेणं पहावेणं करयलसंपुडेणं गिण्हइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं जेणेव

क्षत्रियकुंडग्रामनगर छइ तेणइ नगरनइ विषइ जिहां सिद्धार्थ क्षत्री तेहनउ घर जिहां वली त्रिशला क्षत्रीआ

खत्तियकुंडग्गामे नयरे जेणेव सिद्धत्थस्स खत्तियस्स गिहे जेणेव तिसलाए खत्तिया

णी राणी छइ तिहां आवइ आवीनइ त्रिशला क्षत्रीआणी राणीनइ परिवारसहितनइ अवस्वापिनी निद्रा दि

णी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तिसलाए खत्तियाणीए सपरिजणाए ओसोवणिं

इ देईनइ योनिमांहिथी अशुभपुद्गल अपहरइ अपहरीनइ शुभपुद्गल मेलइ मेलीनइ श्रम

दलइ २ त्ता असुभे पुग्गले अवहरइ २ त्ता सुभे पुग्गले पक्खिवइ २ त्ता समण

णभगवंत श्रीमहावीर प्रति आबाधा रहित सुखिइं त्रिशला क्षत्रीआणीनी कूखिनइ विषइ गर्भपणइ संहरि

भगवं महावीरं अव्वाबाहं अव्वाबाहेणं तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भत्ताए सा

संहरीनइ ... जे वली त्रिशला क्षत्रीआणीनउ गर्भ पुत्री रूप हवउ देवानंदा ब्राह्मणी कु

हरइ २ त्ता जं पि य णं से तिसलाए खत्तियाणीए गब्भे तं पि य णं देवाणंदाए माहणीए कु

प्रवर्त्तादेवा ... नाम ... महावीर ... २१

जालंधरसगुत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए साहरइ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिग-
ए २८ ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जयणाए उद्धुयाए सिग्घाए दिव्वाए
देवगईए तिरियमसंखिज्जाणं दीवा समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं जोयणसाहस्सि-
एहिं विग्गहेहिं उप्पयमाणे जेणामेव सोहम्मे कप्पे सोहम्मे
वडिंसए विमाणे सक्कंसि सीहासणंसि सक्के देविंदे देवराया तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता
सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणइ २९ तेणं कालेणं

२२

तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे तिन्नाणोवगए आवि हुत्था साहरिज्जिस्सामि त्ति जाण-
इ साहरिज्जमाणे न जाणइ साहरिएमि त्ति जाणइ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे
भगवं महावीरे जे से वासाणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे आसोयबहुले तस्स णं
आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं बा सीइं राइंदिएहिं विइक्कंतेहिं तेसीइमस
स्स राइंदियस्स अंतरा वट्टमाणस्स हियाणुकंपएणं देवेणं हरिणेगमेसिणा सक्कवय-
णसंदिट्ठेणं माहणकुंडग्गामाओ नयराओ उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स भा-

MEMORIAL

यां देवानंदा ब्राह्मणी जालंधरसमानगोत्र तेहनी कूखिथकी लेई क्षत्रीकुंडग्राम नगरनइविषइ ज्ञा
ए देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगुत्ताए कुच्छिओ खत्तियकुंडग्गामे नयरे ना.
त क्षत्रीमाहिक सिद्धार्थ क्षत्रीतेहनुं काश्यपगोत्र नार्यात्रिसला खत्रीआंणीतेहनुं
याणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगुत्तस्स भारियाए तिसलाए खत्तियाणी
वासिष्टगोत्र तेहनी कूखिनै पूर्वरात्रिअपररात्रिकालमनावता मध्यरात्रिनामसमयनइविषइ उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रनइविषइ
ए वासिट्ठसगुत्ताए पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं
चंद्रमायोगआवतइ आबाधारहितसुखिइं कूखिनइविषइगर्भपणइ संक्रमइ जे
जोगमुवागएणं अव्वाबाहं अव्वाबाहं कुच्छिंसि गब्भत्ताए साहरइ २०
रात्रिनइविषइ श्रमणभगवंत श्रीमहावीर देवा नंदाब्राह्मणी जेहनुं जालंधरसगोत्र तेहनी कू
जं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगुत्ताए कुच्छिं 23
खिथकी लेई त्रिसलाक्षत्रीआणी तेहनुं वासिष्टगोत्रवंत तेहनी कूखिनइविषइ गर्भपणइमूकया तेरात्रिनइविषइ ते
ओ तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठसगुत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए साहरिए तं रयणिं च णं सा

देवानंदा ब्राह्मणी शय्यानइविषइ काइंकनीकाइजागती उंघतीआवतइथकइ एहवा उदारमनोहर कल्या
देवाणंदा माहणी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ इमेयारूवे उराले कल्ला
णकारी उपद्रवहारी धन्य मंगलीककारी शोभानाकारक चउदसुपनमहामोटा त्रिसला खित्रीआणीइं माहरासुपना
णे सिवे धन्ने मंगल्ले सस्सिरीए चउद्दसमहासुमिणे तिसलाए खत्तियाणीए हडे
लीधा एहवुं देखीनइजागी ३२ गजवृषभादिकयंत्र। चउदसुपनजाणिवा। जेहरात्रिनइविषइ श्रमणभगवंतश्री
त्ति पासित्ताणं पडिबुद्धा ३२ गयवसह गाहा जं रयणिं च णं समणे भगवं मह
महावीर देवानंदा ब्राह्मणीनुं जाल। धरसगोत्र तेहनी कूखिथकी त्रिसला खित्रीआ
वीरे देवाणंदाए माहणीए जालंधर सगुत्ताए कुच्छिओ तिसलाए खत्तियाणी
णीनुं वासिष्टगोत्र तेहनी कूखिनइविषइ गर्भपणि मूकया तेरात्रिनइविषइ ते त्रिसलाक्षत्रीआणी
ए वासिट्ठसगुत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए साहरिए तं रयणिं च णं सा तिसला खत्तियाणी तं
तेहवुं पुण्यवंतप्राणीनइयोग्य एहवा घरनइविषइ माहिचित्रामणि मांहिरखिचित्र सुधापंकइ धोलिउं चित्राम
सि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे विचित्त

[illegible]

ह्लाद विचित्रतालं मणिरत्नप्रभाभिरवभासितं बहुमनोज्ञविचित्रपुष्पिताग पं

[illegible]

ववन्तमरमनोहर सुगन्धपुष्पसंछन्न ... नानारत्नपद्मसमलंकृ

[illegible]

तमकरवृन्दशब्दितघनगंध ... सुगन्धवारिवारि [illegible]

[illegible]

धवलितजल तमिस्तारिमणि [illegible] ... [illegible]

[illegible]

[illegible]

24

[illegible]

विचित्रमणिरत्नपद्मावि [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ×कृपानी×

२५

२६

कमलनीयरि

निर्मलविद्यीर्णरमणा

MEMORIAL

व्याख्या

नर

२८

३७

३०

करनकविमरुलङ्कारहरुतामानी क्रकलानेरुदेदीप्यमान देवतामवधिमाला। बहुविहाय हमुनि ईहामिगमाझाल वृषभ घोडा मनुष्य मगरमच्छ पंछी मा।

सर्वरत्नमाणिक्यजालप्रभाजालनदिव्यदाम ईहामृगवृषभतुरगनरमकरविहगव्या

लजाति किंनर मृगजाति अष्टापद चमर समक्कस्थापदविशेष हस्ती वनलता कमललता पहके विविधप्रकारविचित्रनवक गंधर्व

लकिन्नररुरुशरभचमरसंसक्तकुञ्जरवनलतापद्मलतानानाविधिचित्रं गन्धर्वप

नांगलअनरुयाङित्रनेहरुमूर्लशाद्वकडिहा शाम्बुयाणाकम ... र्गडिघननिवडविसुलविश्वीर्लाङमघतेहनवगर्डारखशाद्धमादए

समाणमनुज्ञाघ्राणं निर्मलजलघ ... मणिविमलजलरत्नप्रभासदाप्रभा

हवडवक देवकुसुमजुमहाशाद्धेनणकरी मघ ... लर्वकदराकप्रमाणलाक नेहनाङीवप्रतिम ङाह्या नाप कपुङावडवक उम

पूर्णादिव्यकुसुमसमाकीर्णं भव ... नमणिविडीवालाख्यंप्रख्यात कालास्

प्रधानसेवीड गंधविशेषणप्रसुपदाअतुधूपनवङगंधवनमते ... णकरीमघमघायमानअलुतगंधिकरीमनोहरवक महाअद्योन

सुगन्धवरकुसुमकुङ्कुमतगरधूपवासितगन्धसमघमघायमानगन्धस्वानिरामं विश्वालो

महित अत्रु अत्रुलीकातिवन देवतानरुस्मवायोगप देवर नेविश्यातावनवधेमोनविर्वक पहलविमानसुडरीकनामिंदयह १

त्रेसुखं निशब्दं सुखरानिरामपिण्डक मामावलोकि अवलोकितेश्वर ४४ १

१ तिक्षारयधारत्नपिरत्नरेडदेयक फहवयवक मुलकरत्नवङ डीशगीलरत्नमामकरत्न कर्केतनरत्न रागरत्न मरकतरत्न प्रवाला स्फटिकरत्न

१ तत्रपुरुषमणिरत्नगणविशिष्ट नील मामग कार्केयण लोहितक मरगच प्रवाल फलिक

सौगंधिकरत्न इन्द्रनीलरत्न अंकनरत्न चंद्रकान्तरत्न प्रधानरत्नकरीनक दूमिकानप्रविमहरहितठे आकाशलगरुअङआलूक

सौगंधिक इन्द्रनील अङ्कण चन्द्रकान्त वज्रमणिभि मण्डितलक्षिता गगणमण्डलं

रत्नवेनेरहरेड मोहवमरुपर्वतनरुसिरीसुरत्नरेडएरुवरत्नरेडद घरु नेविशालारत्नगमिप्रतिष्ठादयरु ४५ १३

पद्मसदृशं अङ्गमहागिरिमल्लिकाम ... पिण्डक मारख्याणतिकरशमि ४५ १३

वक्रदमरुस्वभ्रिनिड म अधिरधदम रु नेहरुविसुलघणवक्रञलापी ... ली मधुअनरुघीरुमीवानी पहवीक्षालाधूआडारहितधाध

मल्लिका माविरचितस्वप्नपिङ्गलं मञ्जु ... घथापरिमितमालि निर्मलधर्मधातु।

गनी दीपतीङहालानालणरुअञखुनेहनणीःनिरामरुड पकनीधाए ... कञवीणनलरुतरतमयोगसुक्ष पहवीङहाला नेवुम सूद ते णरुकरीडाणमध्ध रुमालोमा हिरु

त्र ज्ञानतालसूर्यप्रभानिरामं नरनमलोकगन्धाल्लिङ्कि कालपक्षाद्धि अन्तमन्दुमित

मरुमनीदामरु ... अभर्धहालानर्व विस्तारनेणरुकरीङाणे आकाशप्रतिमाविमायांत्रठे अतिवेगवंतवमलअप्रिविशालादयरु ४६

अत्युपकन्तपिण्डक माङासुखप्रबणगअम्बरवलक्षपर्यन्तं अद्भवगतवज्रं सिद्धि ४६

१४ इमे एयारिसे सुहे सोमे पियदंसणे सुरूवे सुमिणे दट्ठूण सयणमज्झे पडिबु

द्धा अरविंदलोयणा हरिसपुलइयंगी एए चउद्दस सुमिणे सव्वा पासेइ तित्थयरमा

या जं रयणिं वक्कमइ कुच्छिंसि महायसो अरहा ४६ तएणं सा ति

सला खत्तियाणी एए चउद्दस महा सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा समाणी

हट्ठतुट्ठजावहियया धाराहयकयंबपुप्फगंपिव समुस्ससियरोमकूवा सुमिणु

ग्गहं करेइ करित्ता सयणिज्जाउ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता पायपीढाउ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता अतुरिय

मचवल मसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव सयणिज्जे जेणे

व सिद्धत्थे खत्तिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सिद्धत्थं खत्तियं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पीयाहिं

मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं क ल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं

सस्सिरीयाहिं हिययगमणिज्जाहिं। हिययपल्हायणिज्जाहिं मियमहुरमं

जुलाहिं गिराहिं संलवमाणी २ पडिबोहेइ ४७ तएणं सा तिसला खत्तियाणी सिद्धत्थे

णं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयइत्ता आ

[illegible] ३३

[illegible]

[illegible]

३४

वांछितंइष्टंवांछितं प्रतीछितं एषस्वामी सत्यएषअर्थ तेजिमतुम्हेकहोछो इमकहीनेतेस्वप्नाप्रतइं सम्यकरीनइं

यंसामी इच्छियपडिच्छियमेयंसामी सच्चणंएसमट्ठे सेजहेयंतुब्भेवयहत्तिकट्टु ते

तेस्वप्नप्रति अंगीकरइ करीनइं सिद्धार्थराजाइं आज्ञाआदीधइ थकइ नानाप्रकारनामणिरत्नचित्रामनी

सुमिणेसम्मंपडिच्छइ२त्ता सिद्धत्थेणंरन्ना अब्भणुन्नायासमाणी नाणामणिरयणभ

रचनाइंविचित्र एहवाभद्रासनथकीऊठइ उठीनइ उतावलीनहीं चपलनहीं अणकंपतइं शरीरइ विलंबरहित आलसना

त्तिचित्ताउ भद्दासणाउअब्भुट्ठेइ२त्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलं

बधुं कर्ता राजहंसनीगतिसरीषीगतिइं जि जिहां आपणुंभवनआवासमंदिर जिहां आपणी श

बियाए रायहंससरिसीए गईए जे णेवसएभवणे जेणेवसएसयणि

य्याछे तिहांआवीनइं आवीनइं शय्यानइविषइ बइसीनइं एहवुंबोल्यां ५५ रखेमाहरा उत्तम

ज्जे तेणेवउवागच्छइ२त्ता सयणिज्जंसिनिसीइत्ता एवंवयासी ५५ मामेएउत्तमाप

प्रधान मंगलकारी स्वप्नदीठां अनेरेपापरूपस्वप्नेकरी प्रतिहणासि एहवुंमनिजाणीनइं देवगुरुसंबं

हाणा मंगल्लासुमिणादिट्ठा अन्नेहिंपावसुमिणेहिंपडिहम्मिस्संतित्तिकट्टु देवयगु

धिनी जेदेवगुरुसंबंधिनी प्रशस्तरूपनी मंगलीकमय धर्मसंबंधिनी प्रधान कथावार्त्ताइंकरीनइं स्वप्नराखवानइंअर्थिइं जागतीने

रुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं लट्ठाहिं कहाहिं सुमिणजागरियं

स्वप्नजागरिकाकरणीयंतीयनाजागतीरहइ ५६ तिवारपछीते सिद्धार्थक्षत्री प्रभातकालिपरोढिंसूर्योदयवेलाइं आदेशकारी

पडिजागरमाणीविहरइ ५६ तएणंसेसिद्धत्थखत्तिए पच्चूसकालसमयंसि कोडुंबिय

पुरुषप्रतिनेडावइ तेडावीनइ एहवुंकहइ ५७ शीघ्र पणइअहोदेवानुप्रिया देववल्लभा आजविशेष

पुरिसेसद्दावेइ२त्ता एवंवयासी ५७ खिप्पामेवभोदेवाणुप्पिया अज्जसवि

पणइ बाहिरली आस्थानशाला आस्थान मंडपनेगंधोदकसुगंधपाणीछांटो पवित्रकरोसुरुउ पतलूंस हालिंलीपउ कचरो

सेसंबाहिरियंउवट्ठाणसालं गंध दयसित्तं सुइअसंमज्जिउवलित्तं सुगंध

प्रधानसुगंधजेपंचवर्णफूलनाउपचारकरीसहितकरो अगर मुसवधानकुंदरादिकसुगंधद्रव्यकेधूपदाझतइधूम्रनीगंधइमघमघायमान

वरपंचवन्नपुप्फोवयारकलियं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघंत

उत्पन्नजेगंधतीणइंअभिराममनोहरहइ सुगंधजेवस्तुतेहनीगंधिइंसुगंधवंतकरो सुगंधद्रव्यनीगुटिकासमानउ एहवउमंडपकरोकरावउ करीनइं करावीनइं

गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियंगंधवट्टिभूयं करेहकारवेह करित्ता कारवित्ताय

३५

३६

रुंसि अंधयारे बालायवकुंकुमेणं खचियव्व जीवलोए सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ २त्ता

२ ६० पायपीढाओ पच्चोरुहइ २त्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ २त्ता अ

ट्टणसालं अणुपविसइ २त्ता अणेग वायामजोग्गवग्गणवामद्दणमल्लजुद्धक

रणेहिं संते परिस्संते सयपाग स [illegible] हस्सपागेहिं सुगंधवरतिल्लमाइएहिं

पीणणिज्जेहिं दीवणिज्जेहिं मयणिज्जेहिं विंहणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं सव्विंदि

यगायपल्हायणिज्जेहिं अब्भिंगिए समाणे तिल्लचम्मंसि पडिपुन्नपाणिपायसुकु

मालकोमलतलेहिं पुरिसेहिं अब्भिंगणपरिमद्दणुव्वलणकरणगुणनिम्माएहिं छेए

हिं दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेहा वीहिं जियपरिस्समेहिं अट्ठिसुहाए मं

ससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए चउव्विहाए सुहपरिकम्मणा

ए संबाहणाए संबाहिए समाणे अवग यपरिस्समे अट्टणसालाओ पडिनिक्खम

इ २त्ता ६१ जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २त्ता मज्जणघरं अणुपविसइ २त्ता स

DR. BHAU DAJI [illegible]

मानाविस्तारबंधवाडंगोमनंतहनामसूहनाणरूमनोहरवह नानाप्रकारनामणिरत्नतेणकरबांधियपीठनखूबरूडिहा एहवुमवायोप स्नानकरवानु मंडपतिहा

मुत्ताजालाउलाभिरामे विविहमणिरयणकुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि ना

नानाप्रकारनामणिरत्नेरच्यांविचित्रामबहुरूडिहा एहवोस्नानकरवानामंडपनइविषइपीठतिहांसुखिबइसइ फूलवासितपाणीइ सुग करी

णामणिरयणभत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहनिसन्ने पुप्फोदएहि य गं

धइवासितपाणीइ उन्हापाणीइ करी शुद्धतीर्थादिकनें पाणीइ मंगलीककारीडेमाकडणाशुविधिनीण

धोदएहि य उण्होदएहि य सुद्धोदएहि य कल्लाणपवरमज्जणवि

इमकल्याणकारी तेहवे तिहांकौतकनामहनीपडावइ कल्याणकारीम ज्जनहवइइहइ

हीए मज्जिए तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे प

त्यतसुहालसुगंधकषायवस्त्र तेणइलूहिउ अंग अखंडवस्त्रवलीअतिबहुमूल्यवस्त्रनीणइ सुसंवृतसहीपरि पहइरइ सरस

म्हलसुकुमालगंधकासाइलूहियंगे अहयसुमहग्घदूसरयणसुसंवुडे सर

पाणीमहितसुगंधडेबावनाचंदननीणइसरडिउंशरीरबहुडेहेउं पवित्रमालामुष्फनीरनइकेसरकंकुमादिकमंडनकारीविलेप बांध्यामणिसुवर्णादिकनाआभरण

सरससुरहिगोसीसचंदणाणुलित्तगत्ते सुइमालावन्नगविलेवणे आविद्धमणिसुवन्ने

पामुहारअष्टादशसरहारनवसरहिनइ त्रिसिसरहिनाय पालंबकहइझूंमोनामोतीनउ कणदोरासुखुसअभरणेकीधोशोभाबहुडेहेनइ

कप्पियहारद्धहारतिसरयपालंबपलंबमाणकडिसुत्तसुकयसोहे पिण

पहिरिसाग्रीवेयक मुद्रिकादिकनीआगुली ललितसुंदर केशनइविषइपुष्पादि मुलि सुवर्णनानानारकडगतुडिादिकेस

द्धगेविज्जे अंगुलिज्जगललियकयाभरणे वरकडगतुडियथंभि

अधिकरूपतीणइसश्रीकशोभावंत कुंडल ते अलंकारमुखकडेहइ मुकटिदीपाविउमस्त साधिक आशा

यभुए अहियरूवसस्सिरीए कुंडलउज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए हारुत्थ

दिवउदोकिउनाणहकरीहृदयवक्ष हृदयबहुरूडेहेनउ रत्नखचितसुवर्णनावीटीयेपीली आगुलीछ रूडेहेनी नानुलटकवडिउंडेवसुनेउत्तरीकाधु उत्तरासणबहुडेणइ

यसुकयरइयवच्छे मुद्दियापिंगलंगुलीए पालंबपलंबमाणसुकयपडउत्तरिज्जे

३८

नाना प्रकाराणां मणिरत्नसुवर्णानां निर्मलमहार्घ्याणां विज्ञानी सुवर्णकारस्तेन समारचितानि देदीप्यमानानि प्रभाभ्यां सुश्लिष्टानि विशिष्टानि
णाणामणिरयणकणगविमलमहरिहनिउणोवियमिसिमिसिंतविरइयसुसिलिट्ठ
आभरणमाहिं विशेष मनोहररत्नवलयपरिहिरिया वीरवलयप्रकाश एह घणुं किसुं कहुं कल्पवृक्षनी परि अलंकरिउ
विसिट्ठआविद्धवीरवलए किंबहुणा। कप्परुक्खए विव अलंकियविभूसिए
नरेंद्र सिद्धा राजा कोरिंटपुष्पनी माला सहित छत्रनी माला धरीतडं धिकछे शुक्ला श्वेत
नरिंदे सकोरिंटमल्लदामेणं। छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवर
मरतेधरतछे चवरवर ढलतां मंगलकारी जयशब्द कर्या छे लोक दर्शन अनेक गणाधिपति यक्ष दण्डाधिपति राजा
चामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं मंगलजयसद्दकयालोए अणेगगणनायग दं ३८
डनायग रा ईसर तलवर माडंबिय कोडुंबिय मंति महामंति गणग दोवारिय
अमच्च चेड पीढमद्द नगर निगम सेट्ठि सेणावइ सत्थवाह दूयसंधिपाल सद्धिंसंपरि
वुडे धवलमहामेहनिग्गए इवगहगणदिप्पंतरिक्खतारागणाणमज्झे ससिव्वपि
यदंसणे नरवई नरिंदे नरवसहे नरसीहे अब्भहियरायतेयलच्छी
ए दिप्पमाणे मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ रत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसा
ला तेणेव उवागच्छइ रत्ता सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ रत्ता अप्पणो

[illegible]

[illegible]

४१

[illegible]

पियरा अरहंतमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा अरहंतंसि वा चक्कहरंसि वा गब्भं व
क्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुमिणाणं इमे चउद्दस महासुमिणे पासित्ता
णं पडिबुज्झंति ७४ ते गयवसह॥ गाहा ७५ वासुदेवमायरो वा वासु
देवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं च उद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नयरे सत्त
महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति ७६ बलदेवमायरो वा बलदेवंसि गब्भं व
क्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नयरे चत्तारि महासुमिणे पासि

MEMORIAL

त्ताणं पडिबुज्झंति ॥७७॥ मंडलियमायरो वा मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चउ
द्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नयरं एगं महासुमिणं पासित्ताणं पडिबुज्झंति ॥७८॥ इमे य णं
देवाणुप्पिया तिसलाए खत्तियाणी ए नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अ
द्धट्ठमाण राइंदियाणं विइक्कंताणं तुम्हं कुलकेउं तुम्हं कुलदीवं कुलप
व्वयं कुलवडिंसयं कुलतिलयं कुलकित्तिकरं कुलवित्तिकरं कुलदिणयरं कु
लाधारं कुलनंदिकरं कुलजसकरं कुलपायवं कुलतंतुसंताणविवद्धणकरं सु

कुमालपाणिपायं अहीणपडिपुन्नपंचिंदियशरीरं लखणवंजणगुणोववेयं मा
णुम्माणपमाणपडिपुन्नसुजायसव्वंगसुंदरंगं ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरू
वं देवकुमारोवमं दारयं पयाहिसि ॥७५॥ से वि य णं दारए उमुक्कबालभा
वे विन्नायपरिणयमित्ते सूरे वीरे वि इकंते विछिन्नविपुलबलवाहणे चा
उरंतचक्कवट्टी रज्जवइ राया भविस्सइ जिणे वा तिलुक्कनायगे धम्मवरचाउरंत
चक्कवट्टी ॥७६॥ उरालाणं देवाणुप्पिया तिसलाखत्तीयाणीए सुविणा दिठा जा

व आरुग्गतुठिदीहाउअ कल्लाणमंगल्लकारगाणं देवाणुप्पिया तिसलाखत्तियाणीए
सुमिणा दिठा ॥७७॥ तएणं ते सिद्धठे राया तेसिं सुविणलखणपाढगाणं अंतिए एयम
ठं सुच्चा निसम्म हठतुठ जाव हियए करयल जाव ते सुविणलखणपाढए ए
वं वयासी ॥७८॥ एवमेयं देवाणुप्पि या अवितहमेयं देवाणुप्पिया इछि
यमेयं देवाणुप्पिया पडिछियमेयं देवाणुप्पिया इछियपडिछियमेयं देवाणु
प्पिया सच्चेणं एसमठे से जहेयं उझे वयह त्ति कट्टु ते सुमिणे सम्मं पडिछइ २ त्ता सु

स्वप्नार्थकथकनइं विपुलघणे असनइं अन्न फूलवस्त्र सुगंधद्रव्य फूलमाला आभरण सत्कार सन्मा
गुर लरणेकर घे नइ

विणलक्खणपाढए विउलेणं असणेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्म 7

सन्मानदेइनइं घणुं आजन्म लगइ विजसतां उचितयोग्य प्रीतिकारी स्वप्नपाठकने दइ तिवारपछी सि
दानदेइनइं रजा आपइ बार्थ

णेइ सम्मा विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइ सम्मा पडिविसज्जेइ ॥७३॥ तए णं से सिद्ध

राजा क्षत्रिय सिंहासनथी ऊठे ऊठीनइ जिहां त्रिसला क्षत्रीयाणी छइ

त्थे खत्तिए सिंहासणाओ अब्भुट्ठेइ सम्मा जेणेव तिसला खत्तियाणी

पडदानइं आंतरइं तिहां आवइ आवीने पछे त्रिसला क्षत्रीयाणीनइं एहवुं क

जवणियंतरिया तेणेव उवागच्छइ सम्मा तिसलं खत्तियाणिं एवं व

कहइ ७४ स्वप्नविचारि हे देवानुप्रिये हे त्रिसला स्वप्नशास्त्रनें विषे बइंतालीस सामान्य स्वप्न

यासी ॥७४॥ एवं खलु देवाणुप्पिए सुविणसत्थंसि बायालीसं सुवि

कह्या एहवुं सर्व जाणवुं पूर्ववत्...

णा जाव एगं म

४५

महावक्र कहिउ अर्थ कहइ तो ओपक महास्वप्न मंडलिक माता एक महास्वप्न देखीनइ जागइ ७५ एह स्वप्न देख्यां त्रिसला देवानुप्रिये चउदह महास्व

हासुमिणं सुमिणपासित्ताणं पडिबुज्झंति ७५ इमे य णं तुमे देवाणुप्पिए चउद्दस महासु

सुपना देख्यां ते ताहरां उदार स्फार उत्तम त्रिशला यावत् महिमा थी तीर्थंकर त्रैलोक्यनाथ स्वामी धर्मनइ प्रवर प्रधान चातुर्गति मारा नक्का राजा नी चक्रवर्ति पदवी पुत्र प्रसवसि तिवारपछी

मिणा दिट्ठा तं उरालाणं उमे जाव जिणे वा तेलुक्कनायगे धम्मवरचक्कवट्टी ७६ तए णं से

त्रिशला एहवो अर्थ सांभलीनइ विचारीनइ हर्षपामी मनतोषि हृदय प्रसन्न थइ परम संतोष पामती हवी करतल हाथ जोडी मस्त

तिसला एयमट्ठं सुच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयल जाव ते

किवडावी ते स्वप्नमाहा चीतवइ अंगीकार करइ करीनइ ७ त्रिशला राणी सिद्धार्थ राजाइं अनुज्ञा दीधइ थकइ मा

सुमिणे सम्मं पडिच्छइ सम्मा ७७ सि द्धत्थेणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी ना

नाथ का रत्न भद्र आसनथी ऊठीनइ ॥ उतावली नही मन थिरकरीनइ सकल अचपल मन्दपणें संभ्रमरहित

णामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ सम्मा अतुरियमचवलमसंभंताए

विलंब रहितपणें राजहंस सरिषी गति चाले नीर जिहां आपणुं वासभवन वसवानुं घर तिहां आवइ आवीनइ

अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ सम्मा

पोतानाघरमांक्षिपइवी ८८ जेदिवसथकि श्रमणभगवंत श्रीमहावीरदेव तेसिद्धार्थराजानइंविषइ

संतलवणंआउप्पविहा ८८ जप्पभिइं चणं समणे भगवं महावीरे तंसि रायकुलंसि सा

संक्रमाव्या। तेदिवसथकीआरम्भी सौधर्मधणी एक वैश्रमणधनदनीआज्ञाइंचालइ तीर्च्छालोकनावासीतिर्यग्जृंभकदेवता इंद्रिवचनइ

हरिए तंरयणिं चणं बहवे वेसमणकुंडधारिणो तिरियजंभगा देवा सक्कवयणेणं से

तेवलीजे इवइ पूर्वेकीधाहवाआगला ते हवइं जेह नाभरणाआगहता मोटानिधान तेकहइछइ तेपहवा धणीमुहतानामाहइ

जाइं इमाइं पुरापोराणाइं ते सिद्धार्थनेघरे वरसावि महानिहाणाइं भवंति तं पहीणसा

गरेडेहना धणमुहलानामार्गनादेषाडनारे धणसु हतागोत्र धणीनाघरकोहता विछेदपाम्याधणीजेहनाएहवा

मियाइं पहीणसेउयाइं पहीण गुत्तागाराइं उच्छिन्न सामियाइं उच्छि

विछेदपाम्यामार्गनादेषाडनार विछेदपाम्यांगोत्रनांघरबार गामवाडि सहित नगरलोक नगरगढसहित नाह्नो सहरलेणाकोरक डुंगरडुंलवट नगरनेकसा नदीपर्वतवीटित नगर पासेगाम पत्तन मडलमुर

न्नसेउयाइं उच्छिन्नगुत्तागाराइं गामागर नगर खेड कब्बड मडंब दोणमुह पट्टण

मारगजल-नायमहासा धानीनीपाठ माथ:घवासकटकछत गवडछ:घवामीथा जिवहथी चउवटथी वारमहात्तावाननइंविषइ

पुलवस्थानक नगरते पर्वतपासेते तराठाम नान्दनाठाकुरिम

सम संबाह संनिवासेसु सिंघाडएसु वा तिएसु वा चउक्केसु वा चच्चरेसु वा चउ ४६

चउमुखिमार्ग मोटा पंथमार्गनइं गामकहवत्तां ठाम नगरकहवत्तांठाम गामनापालीनीसरवा नगरनापालीनीसरवाना

मुहेसु वा महापहेसु वा गामठाणेसु वा नगरठाणेसु वा गामनिद्धमणे नगरनिद्धमणे

हाटपाटिनेइंविषइं देवनाथानक सभा पाणीनी परब फूलवाडी वृक्षविशेष

सु वा आवणेसु वा देवकुलेसु वा सभाएसु वा पवासु वा आरामेसु वा उज्जाणेसु वा

श्रीवनायुणपमु मोटावनखंडनइं मसाणनलोकेन सूनाघर गिरिनइंविषइं सांतिकर्मकरवानोमंड पर्वतेकोरीघरकोधातेहवा

वणेसु वा वणसंडेसु वा सुसाणसु न्नागार गिरिकंदर संति सेलोवट्ठाण भ

सिद्धार्थराजानाघरनइंविषइं साहरइ छइ

हेसु वा संनिक्खित्ताइं चिट्ठंति ताइं सिद्धत्थरायभवणंसि साहरंति ॥८९॥

जेरात्रिनइंविषइं श्रीश्रमणभगवंत श्रीमहावीर तेद ज्ञातकुलकहितांसिद्धार्थराजानाकुलनेविषइं तेरात्रिनेंविषइंहिरणकडेपकरीवाध्यु

॥ जं रयणिं चणं समणे भगवं महावीरे नायकुलंसि साहरिए तं रयणिं चणं हिरण्णेणं वड्ढि

सुवर्णेण सुवर्णवधउ धणादिकेंव धनेकरी राजेकरी देशेकरी बलेकरी वाहनकटके करीनें भंडारेकरी धान्यघरेकरी

त्था सुवण्णेणं वड्ढित्था धणेणं धन्नेणं रज्जेणं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोसेणं कोट्ठागारे

णं पुरेणं अंतेउरेणं जणवएणं जसवाएणं वड्ढित्था विउलधणकणगरयणमणिमोत्तिय

संखसिलप्पवालरत्तरयणमाइएणं संतसारसावइज्जेणं पीइसक्कारसमुदएणं अईव अ

ईव अभिवड्ढित्था तएणं समणस्स भग वओ महावीरस्स अम्मापिऊणं अयमेय

रूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणो गए संकप्पे समुप्पज्जित्था। जप्प

भिइं च णं अम्हं एस दारए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते तप्पभिइं च णं अम्हे हिरण्णेणं व

ड्ढामो सुवण्णेणं वड्ढामो धणेणं धन्नेणं रज्जेणं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोसेणं कोट्ठागा ४७

रेणं पुरेणं अंतेउरेणं जणवएणं जसवाएणं वड्ढामो विउलधणकणगरयणमणिमोत्ति

यसंखसिलप्पवालरत्तरयणमाइएणं संतसारसावइज्जेणं पीइसक्कारेणं अईव अईव अभि

वड्ढामो तं जया णं अम्हं एस दारए जाए भविस्सइ तया णं अम्हे एयस्स दा

रगस्स एयाणुरूवं गुण्णं गुणनिप्फन्नं नामधिज्जं करिस्सामो वद्धमाणो त्ति। तएणं समणे वर्द्धमान

भगवं महावीरे माउअणुकंपणट्ठाए निच्चले निप्फंदे निरेयणे अल्लीणपल्लीणगुत्ते

यावि होत्था ॥९४॥ तएणं तीसे तिसलाए खत्तियाणीए अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जि

हडे मे से गब्भे मडे मे से गब्भे चुए मे से गब्भे गलिए मे से गब्भे एस मे से गब्भे पुव्विं एयइ एयाणिं

नो एयइ त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा चिंतासोगसागरं पविठा करयलपल्हत्थमुही

अट्टझाणोवगया भूमिगयदिठिया झियाइं तंपि य सिद्धत्थरायभवणं उवरयमुइंगतंती

तलताल नाडइज्जजणमणुज्जं दीणविमणं विहरइ ॥ ९३ ॥

तएणं से समणे भगवं महावीरे माउए अयमेयारूवं अज्झत्थियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं

समुप्पन्नं वियाणित्ता एगदेसेणं एयइ तएणं सा तिसला खत्तियाणी तं गब्भं एयमाणं

वेयमाणं चलमाणं फंदमाणं जाणित्ता हट्ठतुट्ठ जाव हयहियया एवं वयासी ॥ ९

नथीनिश्चेमाहरुगाई हस्युतहलतोदवइ — नोगोनथी गलितनेसर्व कहिवुं — माहरो गर्भ पहिलो हालतो चालतो नइ — हवइ हालइ छइ

धा॥ नो खलु मे गब्भे हम्मे जाव नो गलिए मे गब्भे पुव्विं नो एयइ इयाणिं एयइ त्तिकट्टु

हट्ठ एवं वा विहरइ तए णं समणे भगवं महावीरे गब्भत्थे चेव इमेए यारूवं अभिग्गहं

गिण्हइ नो खलु मे कप्पइ अम्मापिऊहिं जीवंतेहिं मुंडे भवित्ता अगाराउ अणगारियं

नहि कल्पइ ... मातापिता जीवते ... मुंड थईनइ ... आगार ग्रहवास मुकीने अणगार यतीपणु लेवुं ते

पव्वइए॥ ए प॥ तए णं सा तिसला खत्तीयाणी ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउअमं

नहि ... तिवार पछी ते त्रिसला क्षत्रियाणी ... नाही देव आगलि कर्म ... कीधा कौतक मंगलीक कर्म

गलपायछित्ता सव्वालंकारविभूसिया तेहिं नाइसीएहिं नाइउण्हेहिं नाइतित्ते

मिते प्रायश्चित सर्व विघ्न ... सघले आलंकारे करी विभूषित ... तेणइ भोजने ... अत्यंत टाढुं नथी ... अत्यंत उन्ह नथी ... अत्यंत तीखा ... आहार नथी

हिं नाइकडुएहिं नाइकसाइलेहिं नाइअंबिलेहिं नाइमहुरेहिं नाइनिद्धेहिं नाइ

अत्यंत कडुआ नथी ... अत्यंत कसायला नथी ... अत्यंत खाटा आंबली ... अत्यंत मधुर मीठा नथी ... अत्यंत स्निग्ध घृत ... नथी

अत्यंत लूखा नथी ... अत्यंत आला नथी ... अत्यंत सुका ... सघली ऋतुने विषे भोगवते सुखदाई ... भोजन ... वस्त्र ... गंध माल

लुक्खेहिं नाइअल्लेहिं नाइसुक्केहिं सव्वत्तुभयमाण सुहेहिं भोयणच्छायणगंधम

ल्लेहिं ववगयरोगसोगमोहभयपरिस्समा सा जं तस्स गब्भस्स हियं पत्थं गब्भपोसणं तं

देसे अ काले अ आहारे माणी विवित्तमउएहिं सयणासणेहिं पइरिक्कसुहाए मणाणुकू

[illegible]

लाए विहारभूमीए पसत्थदोहला संपुन्नदोहला सम्माणियदोहला अविमाणियदोहला वुच्छि

विछिन्न दोहला ... प॥ केतला एक आहार प्रीत करइ केतला एक वात करइ केतला एक पित्त करइ केतला एक कफ

न्नदोहला विवणी — करइ ते हस्ताणि निषेध्या है ... वरुणा नी ... राहतो ... रहीने ते स्त्रीरूप ... १ ऋतुस्नान करी ते वाय ... ऋतु ने दिवस थी पा पाली गर्भ धरी ... वसइ नसइ ... आपि अंजन ... अश्रुपातन करइ स्नानन करइ ... मर्दनन करावइ नख कपावइ ... धावन करइ अत्यंत घणुं ... ही अत्यंत ... अतिही न ... करइ ... तोगर्भ ते ... सइ ... माग गर्भ ... ज्ञान ... ता

४९

पोकुर

मिपं x

बालक अधकउ राइतो बालक की पक्षं थाइ स्नान विलेपन घणा थी बालक अनावासे तो थाइ ते ... नावोपन थी न खकतर थी बालक ना नख विलासइ कुत्सा वलो ... थी चपल कउ दस थी रोतल ... जीसका ला थाइ अति बोल थी बालक बकवाल थाइ अतिसा ... बालक बहिरो थाइ ... बालक ... घणु वाय लेवइ सुनु बालक कउ अति सीता आहार लेवइ बालक ... अतिक रु आहार थी। बालक दूबल थाइ अथवा वीर्य रहित ... अथवा ... बालक ... अति तीखा आहार थी ... अथवा ... अति खारो आहार ... [illegible]

[illegible]

ए दोहला सुहंसुहेणं आसयइ सयइ चिट्ठइ निसीयइ तुयट्टइ विहरइ सुहंसुहेणं तं

[illegible]

गब्भं परिवहइ ॥९४॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जे से गिम्हाणं प

अनिल वर्णनेनरदरं निस्नेहेनउत्करंनरति ॥ ... ॥ [illegible] ॥ इति श्रेयः ॥ ॥श्री॥ ॥ [illegible] ॥

५०

[illegible]

ढमे मासे दुच्चे पक्खे चित्तसुद्धे तस्स णं चित्तसुद्धस्स तेरसीदिवसेणं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्ना

[illegible]

णं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वइक्कंताणं उच्चट्ठाणगएसु गहेसु पढमे चंदजोगे सोमासु दिसासु

[illegible]

वितिमिरासु विसुद्धासु जइएसु सव्वसउणेसु पयाहिणाणुकूलंसि भूमिसप्पिंसि मारुयंसि पवायं

[illegible]

सि निप्फन्नमेइणीयंसि कालंसि पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु पुव्वरत्तावरत्तकालसमयं

[illegible]

सि हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं आरुग्गा आरुग्गं दारयं पयाया ॥९५॥ ॥ जं रयणिं च

[illegible]

णं समणे भगवं महावीरे जाए सा णं रयणी बहूहिं [illegible]

जेहनो आदि दिशा आवेइ सुदिनाइ वायवा [illegible] इशान [illegible] देवान दिविइकुति नारकाना भोद

॥ गर्भइ जेह कारण [illegible] तेहिं [illegible] जेहनइ [illegible] गइ [illegible] ते वासुदेव [illegible] त्रि कइ सात [illegible] तीर्थंकर कइ त्रिसि नी वेसवे [illegible] जेहनइ जन्म योगि त्र [illegible] तेहा सघाड त्रि [illegible] पग वीय तिथाइ [illegible] मइ आपणइ कइ जेहनइ जन्म योगि तेमाहि [illegible] सिद्धारथ राजानइ [illegible] अथ तेणइ समइ [illegible] मधरात्रइ मकर लग्न [illegible] तेहनो पाहिलो [illegible] हुवइ कइ १ हवइ श्री वीरनइ जन्म महोत्सव अधिकार लषाइ छइ [illegible] भगवंतनइ जन्म हुवइ अचेतनइ दिसि [illegible] हर्षवंती [illegible] मुकुमाल [illegible] भगवंतना जन्म समयनइ [illegible] जगतनइ [illegible] [illegible] सहस्रा [illegible] इ ५६ दिशि कुमारीना आसन प्रकंप थया [illegible] अहो लोक वासिनी अष्ट दिसिकुमारी आवी जन्मस्थानकइ आवइ [illegible] भोगंकरा १ भोगवती २ सुभोगा ३ भोगमालिनी ४ सुवत्सा ५ वत्समित्रा ६ पुष्पमाला ७ अनंदिता ८ ए [illegible] भगवंतनी माता [illegible] सुआय [illegible] मेघंकरा १ मेघवती २ सुमेघा ३ मेघमालिनी ४ [illegible] विचित्रा [illegible] बलाहिका ८ [illegible] जिननी माताना [illegible] नंदोत्तरा नंदा आनंदा नंदवर्धना विजया वैजयंती जयंती ७ अपराजिता ८ [illegible] समाहारा १ सुप्रदत्ता २ [illegible] धरा ४ लक्ष्मीवती [illegible] चित्रगुप्ता ७ वसुंधरा ८ ए [illegible] रुचक द्वीपनइ [illegible] रुचक पर्वत [illegible] जिन माताने स्नान करावी

अथ जन्मकुंडली

[illegible] विचार [illegible] मंगल मकर [illegible] कर्क [illegible] तुला [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

॥ नेमी ॥

[illegible] इलादेवी १ सुरादेवी २ पृथ्वी ३ पद्मावती ४ [illegible] नवमिका ६ [illegible] सीता ८ [illegible] जिन जिन माता पश्चिम दिशि [illegible] श्री [illegible] जिन जिन माता ॥ [illegible] चित्रा १ चित्रकनका [illegible] सौदामिनी ४ [illegible] जिन जिन माता [illegible] रूपा रूपासिका सुरूपा रूपकावती [illegible] भगवंत [illegible] [illegible] श्री जिन [illegible]

[illegible]

वन्हिं दिवहिं दिवाहिम इव ... यंतहि अप्पयंतहिम दिवाघो

[illegible]

[illegible]

प उप्पयाणेहिं देवसन्निवाया उ   प्पिंजलमाणभूया कहकहगभूया

[illegible]

५२

करतां वेतालिक व३ ३३ अवधी प्रजुंजीने जुओ तुं श्री वीरचरित्र पगे लागी स्वमावी देवताने स्नपन करवानो आदेश दीधो तिहां पहेलो अच्युतेंद्र अभिषेक करे तिहार पछी अनुक्रमे ६३ सूर्यादिक पछे सौधर्मेंद्र च्यार वृषभरूप करी ईशानेंद्र खोले भगवं तने लेइ आठ वृषभ शृंगथी नीसरती पाणीनी धारा तेहे स्नात्र महोत्सव करी आरती मंगलेचु करी गीतगान नृत्य दिव्य महोत्सव करी श्री वीरने माता पासे मुकी अवस्वापिनी निद्रा परिहरी प्रतिबिंब संहरी कुंडल युगल अने वस्त्र युगल [illegible] तथ कु वाधी सोनानुं दडो एवलुं स्वामिने ३२ [illegible] ३२ कोडि रत्न सुवर्णनी वृष्टि आभियोगिक देवता पासे करावी पछे उदघोषणा करावी जे स्वामीने तथा स्वामीनी माता ऊपर विरूउं मन चींतवे तेहतुं मस्तक अर्जुन वृक्षनी मंजरीनी परे सात खंड थाइ एम इन्द्र महोत्स व करी इंद्रादिक नंदीश्वरद्वीपे जइ विषइं अट्ठाई करी आपणे ठामे गया इति श्री वीरजन्म महोत्सव समाप्त ॥

कहइइ इहो

तो हुंवतें ॥९८॥ जे रात्रिने विषइं श्री श्रमण भगवंत श्री महावीर जन्म्या   ते रात्रिने बहवे क० घणा वैश्रमण धनदना आदेश कारी तिर्यकजंभक देव

विहोत्था ॥९८॥ जंरयणंचणंसमणेभगवंमहावीरेजाए तंरयणंचणंबहवेवेसमणकुंडधा-

देशकारी तिर्यकजंभक देवता   ते सिद्धार्थ राजाना घरने विषइ   हिरण्य घडेलुं रूपुं ते   [illegible]   हीरा नी वृष्टि क नइ   हनी वृष्टि करइ   नी वृष्टि करइ   रइ

रिणो तिरियजंभगा देवा सिद्धत्थरायभवणंसि हिरण्णवासं च सुवण्णवासं च वयरवासं च व

[illegible]

त्थवासं च आभरणवासं च पत्तवासं च पुप्फवासं च फलवासं च बीयवासं च मल्लवासं च ग

कल्पबाला०

धवासंव चुन्नवासंव वसुहारवासंव वासिंसु॥५५॥ तएणं से सिद्धत्थे खत्तिए भवणवइ वाणवि-
तर जोइस वेमाणवासी देवेहिं तित्थयरजम्मणाभिसेय महिमाए कयाए समाणीए पच्चूसका-
लसमयंसि नगरगुत्तिए सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी॥२६॥ खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया कुंडपु-
रे नयरे चारगसोहणं करेह २त्ता माणुम्माणवड्ढणं करेह २त्ता कुंडपुरं नगरं सब्भंतरबा-
हिरियं आसियसम्मज्जिओवलित्तं सिंघाडगतिग चउक्क चच्चर चउम्मुह महापहपहेसु सित्त-
सुइ सम्मट्ठ रत्थंतरावणवीहियं मंचाइमंचकलियं नाणाविहराग भूसियज्झय पडागमंडियं

लाउल्लोइयमहियं गोसीससरसरत्तचंदण दद्दर दिन्नपंचंगुलितलं उवचियवंदणक-
लसं वंदणघडसुकय तोरणपडिदुवारदेसभागं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय-
मल्लदामकलावं पंचवण्णसरससुरहिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागुरुपवर-
कुंदुरुक्क तुरुक्क डज्झंत धूवमघमघंत गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं
नड नट्टग जल्ल मुट्ठिय वेलंबग कहग पवग पाढग लासग आरक्खग लंख मंख
तूणइल्ल तुंबवीणिय अणेगतालायराणुचरियं करेह कारवेह करित्ता कार

MEMORIAL

त्तिकाय उस्सदस्सं मुसलसहस्सं च उस्सवेह उस्सवित्ता मम एयमाणत्तियं पच्च

प्पिणह १ तएणं ते कोडुंबियपुरिसा सिद्धत्थेणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव

हयहियया करयल जाव पडिसुणित्ता खिप्पामेव कुंडपुरे नगरे चारगसोहणं जा २

व उस्सवित्ता जेणेव सिद्धत्थे खत्तिए तेणेव उवागच्छइ २त्ता करयल जाव कट्टु सिद्धत्थ

स्स रन्नो एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति तएणं से सिद्धत्थे राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव ५४

उवागच्छइ २त्ता जाव सव्वोरोहेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारविभूसाए सव्वतुडियस

द्दनिनाएणं महयाइड्डीए महयाजुइए महयाबलेणं महयावाहणेणं महयासमुदएणं मह

यावरतुडियजमगसमगप्पवाइएणं संखपणववेरिझल्लरिखरमुहिहुडुक्कमुरजमुइंगदुं

दुहिनिग्घोसनाइयरवेणं उस्सुक्कं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडि

मं अधरिमं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं

५५५ अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलियसपुरजणजाणवयं दसदिवसठिइव

डियं करेति २ तएणं सिद्धत्थे राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य सा

हस्सिएय जाएय दाएय भाएय दलमाणेय दवावेमाणेय सइएय साहस्सिए यलंसेय

ज्झिवमाणेय पडिच्छावेमाणेय एवं विहरइ ४ तएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मा

पियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेंति तइए दिवसे चंदसूरदंसणियं करेंति छट्ठे दिवसे

धम्मजागरियं जागरेंति इक्कारसमे दिवसे विइक्कंते निव्वत्तिए असुइजम्मकरणे संपत्ते

बारसाहदिवसे विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडाविंति २त्ता मित्तनाइनियग

सयणसंबंधिपरिजणं नायए खत्तिए आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कय

कोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं पवराइं वत्थाइं परिहिया अप्पमहग्घाभर

णालंकियसरीरा भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगया तेणं मित्तनाइनियग

सयणसंबंधिपरिजणेणं नायएहिं खत्तिएहिं सद्धिं तं विउलं असणं ४ आसाएमाणा विसाएमा

णा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं विहरंति ५ जिमियभुत्तुत्तरागया वियणं समाणा आ

यंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्तनाइनियगसयणसंबंधिपरिजणं नायए य खत्तिए

विउलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेंति सम्माणिंति सक्कारित्ता सम्माणित्ता तस्सेव

इत्यादिक हित्या आपणा पुत्रादिक संबंधि स्वजनपीनरायादिक संबंधी तेवाही रा मदा सर्वलीज्ञातयत्रीयु आगल ६ पहिलुं पिण

मित्तनाइनियगसयणसबंधिपरीजणस्सणायाणं खत्तियाणंय पुरउएवंवयासी ६ पुव्विंपि

ए अहो देवानुप्रियो अम्हारइ एबालक जन्मतां नहतो कुषिने विषे गर्भपणे अवतर्यइ थकइ एहवउ अध्यवसा

णंदेवाणुप्पिया अम्हं एयंसि दारगंसि कुच्छिंसि गभ्भवक्कंतंसिसमाणंसि इमेयारूवे अब्भत्थि

चितव्यउ प्रार्थ्यउ चिंतव्युं ताम्हजनाबोलतोदा जे दिवसथकी वली अम्हारे एदारक बालक त्रिशलानी कु

ए चिंतिए पत्थिए चिंतिएयत्थिए जावसमुप्पज्जित्था जप्पभिइंचणं अम्हंएयस्सदारए कुच्छिंसि

क्षिनइविषइगर्भपणइ अवतर्यु तेदिवसथकी अम्हे हिरणइ रूपइ वधुं छां हिरणइ वधामो सुवर्णइ वधाम्या धनेकरी वाध्या तांजां स्वापिने धन वि त्यादिकइ करीवाध्या

इगभ्भवक्कंते तप्पभिइंचणं अम्हे हिरण्णेणं वद्धामो सुवण्णेणं वद्धामो धणेणं जावसावइज्जेणं पी

प्रीतिसत्कारइ अतीहिंअतीहिं करीनेवाधी ७ सामंतराजाइ आव्यावलीतेह तेभणीरें अम्हारे एबालकनउ करीवाध्या

इसक्कारेणं अईवईवअभिवद्धामो ७ सामंतरायाणोवसमागया तंजयाणंअम्हंएयस्सदारए

जन्मथास्यइ तिवारें अम्हे एबालकनउ अनुरूपसरिखुं गुणेंकरीनीपनुं तेएहवउ नामधापनाकरस्यइ

जाएभविस्सइ तयाणंअम्हेएयस्सदारगस्स इमंएयाणुरूवंगुण्णंगुणनिप्फन्नं नामधिज्जंकरी

५६

वर्धमानएहवुं तेआजअम्हारेआजमनोरथपूरुंहुंतेनीसंपतिथइ तेहअम्हारेआज मनोरथनी संपत्तिथई वीमनारथपूर्णहुतो तेएहवुं कुमारअ

स्सामो वद्धमाणुत्ति ता अज्जअम्हंमणोरहसंपत्तीजाया तंहोऊणंअम्हं कुमारेवद्धमाणेनामेणं ८

श्रमणभगवंतश्रीमहावीरने काश्यपगोत्र तेश्रीमहावीरना त्रणनामधरइ तेजिम मातापितानोदीधुं

समणेभगवंमहावीरे कासवगुत्तेणं तस्सणं तउनामधिज्जाएवमाहिज्जंति तंजहा अम्मापिउसंति

वर्धमान १ सहजथीराग द्वेषतजीनेमुकतें तेतलीश्रमणनाम २ निश्चल अकस्मिक भयभैरवादिक परीसहउपसर्गविषे क्षमाइकरीक्षमे तेहवा अभिग्रह

एवद्धमाणे १ सहसमुइयाएसमणे २ अयलेभयभेरवाणं परीसहोवसग्गाणं खंतिखमेपडि

मोपालक धीमंत ज्ञानवंत अरतिअनेरतिनुंसहणहार तेहनणीद्रव्यगुणवंत रवइ धैर्यवंत तेहनेदेवताइ नामदीधुं

माणं पालए धीमंताणं अरइरइसहेदविए वीरियसंपन्नेदेवेहिं सेणामंकयं ॥ पछीं ॥ देवेइ तेभगवंत [illegible]

वाधइ त्रिज्ञानसहित

नेभगवंत आमलीक्रीडाकरइ [illegible] तिहांआ

वीसर्पनूपकरीआमलीवृक्षवीटीरहिउसर्वबालकनाता श्रीवीरइतेसर्पनेहलालीनाष्युं तेगयो देवेंनाएपूनेए

हवीहैनही तिवारपछीतेदेवेंबालकरूपकरीबालकरमेंबें तेबालकमध्येरमवालागो तिहांपणिएहवोकीधोछे

जेहारइतेहनेखवेबेसीकुंतलीकसूमिमध्येफरीपाछोवको एमेलेतिवारेतेदेव रमतोजोणीनेहस्यो तिवारेश्रीव

रितेहनेंवांसेवे [illegible] तिवारेदेवतावधवालागो वधतोस्पाततालप्रमाणवध्यो तिवारेंश्रीवीरेंकोपकरीवामोमुष्टिसरो

वरवांमीप्रमुखजोइ अनेकप्रकारनाकोतककरीनेएहवे अवधिज्ञानेंश्रीवीरनें वलीतिवारेवीरेंदेवचरित्रजाणी

विसुं कीदेवतानूमिकाइप्म्या तिवारपछीतदेवश्रीवीरनेपगेलागी प्रत्यक्ष थई जगवंतनेपगेलागीखमावी पाछोवल्यो
इंद्रजाणीमहावीरनामदीधं मोहस्यकीमातापिता आश्चिकेरा पद्रसहवीजाणी नेमंघलीकलालेवाने थिनिसाल
गतणुकरे मातापिताइ रूडु लग्नमुहूर्त्त जोपी महामोहुत्सवमांही हाथीघोडा शृंगार्या सघलाइ इत्तिनजिमाडिव
स्त्रतालूलादिक आपी पवित्र [illegible] पाणीनेणकरी श्रीजगवंतनेस्नानकरावे वलीश्रीजगवंतनेपुष्पमाला पह
रावीने विशेष आजरणेकरीअलंकरी सुवर्णसांकलेकरीअलंकरित हस्तिनि स्कंधेबेसारी मेघाडंबरछत्रधरीने
धवलचामरयुगलविंजाते घणावाजित्रवाजते महादाननेदेवराते चिरंजीवएहवावचनलाटलोकनेतेणि [illegible] लणति
नगरनारीइआसीस [illegible] देते एणिपरिमहारिद्धिसहित आडंबरे श्रीवीरपंडितनेबारणेपधार्या पंडितवारूवस्त्र पहि
रीआसनसज्ज करइ एहवेइंद्रतेआसनप्रकंपमानथकुं हाथीनाकाननीपरेंचलतिं [illegible] महालवालाग्युएहवेंअवधि

नेकरीनेजाणुं एहवुं स्वरूपजाणी इन्द्रब्राह्मणनुंरूपकरी तिहां आवि [illegible] बोल्यो आंबेतोरणबांध्यु सरस्वतीनेंसणग
र्यु चंद्रमानेंधोलवउ एकषाणसाचो जेनीं थकिरने निसालगरणुं करवुं जिममांआगलिमुंसालिवषाणवुं ले कान
गराइलहिरीयाने वषाणवुं समुद्रने जिमलवणनुलेटणुं तिमस्वामीआगलिवचनविलासनुंकरवुं जेहलणी तिर्थंकरदे
वसरणाविनाविल्हासजाइ इन्द्रइरहित अनेपरमेश्वरकहिवराइ आतरणरहितपणेसोलागीजाइ तिर्थंकरतिकारपछी
इंद्रेजोयुंलगवंतनुं गंतीरनापणुं जेस्वकुंजा [illegible] पणुंतणा थुंनहीजो [illegible] हेयपिणुं अथवाएनोसांघुंजिजेवालाग्या
जणाजाइ असारप्रा धर्मांहिं प्राहिं आकुं बरजाइ सोनेतेहवीरणकोनजाइ जेहवुं कांसानेवाजेजाइ तिकारपछीइं
द्र स्वामीने पंडितनाआसनेबेसारी संदेहरूप जगवंतनसमीपेव्याकरणप्रगटकर्यो जगवंतसवालाषव्याकरणप्रका
सितं अनेराप्रमाणादिग्रंथसुगमेंप्रकासिया तिकारेंवापंडितना संदेहछेद्या पंडितकीतेतेमनुष्यमात्रनहीं तिकारेंइंद्र
कहें अरेविप्रसामान्यकोनहीं एत्रिजगतनोस्वामी श्रीवीरदेवाधिदेव सर्वशास्त्रपारगामी विप्रवितर्वं एकहाथ

आदतेज्ञ
कापियन
गाणिनोप्र
किय आइवा
यध कथको
उष्मआको
र लाविय
ममत्रवरा।
। विर
५७

नोप्रासाद व्याखहा थओदेव गदि आणानीगोत्रजमणनोटीलो एकषाणसाचोथया तिकारें इंद्रें कह्यं एलगवंत
जगमनोगुरु एविप्रमनुष्यकीटकएमोटोअंतरछि मेरुजनेंपाषाणकरीरअनेंकल्पवृक्ष साकरअनेंकाम
रतेहनी [illegible] परेंगइविासिथकोजगवंत [illegible] एजानसहितजाइएणि [illegible] लेजगवंतन
तम [illegible] हिमांप्रगकीधउजग [illegible] वंतनेंनमीनेंइंद्रे [illegible] वलोकें
गयालग [illegible] वंतनेहस्तिस्कंधेचडी आपणे [illegible] आवासिपधार्या।।२।।इतन्न [illegible] । निशालग
लणाधिका रसमाप्ता।। हवेंश्रीजगवंतबालनावमुं कीयौवनावस्थाप्राप्तहुवा जांणी मातापिताइ अन
मूरूप लेसुंलग्नइ यशोदाराजकुमरीनोपाणिग्रहणकराविउ तेहसंघाति पंचविषयमनुष्यसंबंधियाकाम जाग
जोगवतां जगवंतनें प्रीयदर्शनाकुमरीपुत्रीहवी तेजमालीनेंपरणावी एतलेंजगवंतनें अठावीसवरसहुयां एहवें

माता पिता स्वर्गेथिहता श्रीवीरनउवर्ष अठ्ठावीसथया तिवारें नंदीवर्द्धनराजानेंराज्यथापुं प्रश्नोत्तमेलीनें तिकारपछ
नंदिवर्द्धनराजाप्रमुख सवस्वजनवर्गप्रतिं हवेंदीक्षालीजइं तिकारपछी नंदिवर्द्धनराजा कहें अरेलाइ ते
चांदीरूप परिवारकाढ्यें एकमातापितानुंमरणनुंदुष एबेंविरहदुःखनषमाइं एजगवंतपरमप्रेमसहित
लाइनुंवचनउल्लंघीनसके तेहतणीविवरसकीरखलहि पणिफासुएषणी यआहारलेताहवा सचित्तपाणी
यमात्र टालताहवा तेदिवसथीब्रह्मचर्यधरताहवा हवइ चौदस्वप्नसूचितजगवंतनोजन्महवो तिकारइंले
कमांहिप्रसिद्धहवी चक्रवर्तिजाइस्यइ [illegible] तेहतणीश्रीलिकवंत प्रमुखसेवाकरतानें सर्वत्रोपत्रपणेवामे
गया।। श्रीः।। ।।श्रीः।। ।।छ।। ।।श्रीः।। ।।छ।।
एकसुंकासेः सोपनसदभिमहर्तुमतथाए, नियमरूवमरुदीं जणेइपयदस्पीं प्रजै त्र विवाहादिजेय [illegible] उतीदनाषोरउपरतधी

रजापुरवाल
नाय कामल
सहरवूतो
निमापना नो
गासमदनाहे
आप्याप्रिय
नायधारस्या
तिहरीखारिक
यधके महत
भामतेकूले
थयदाये
कारितेपाणी
यसल वशो
रावरनाय
कलाय २
पँचपिता

श्रमणभगवंतमहावीरनो २२ श्रमणभगवंतश्रीमहावीरनापिता तेहनोकाश्यपगोत्र तेहना त्रिण

समणे भगवं महावीरे ॥२१॥ समणस्स भगवओ महावीरस्स पिया कासव गुत्तेणं तस्सणं तओ

नामएहवा कहीइं तेजिमकहे सिद्धार्थ१ श्रेयांस२ यशस्वी३ श्रमणभगवंतम

नामधिज्जा एवमाहिज्जंति तंजहा सिद्धत्थेइवा सिज्जंसेइवा जसंसेइवा समणस्स भगवओ

वीरनीमातानुं माता वाशिष्टगोत्र तेहना त्रिणनाम एहवा कहीइं तेजिम त्रिसला१

महावीरस्स माया वासिट्ठगुत्तेणं तीसे तओ नामधिज्जा एवमाहिज्जंति तंजहा त्रिसलाइवा

प्रीतिकारिणी२ विदेहदिन्ना३ श्रमणभगवंत श्रीमहावीरनइं पीतरिउसुपार्श्वनाम

पियकारिणीइवा विदेहदिन्नाइवा समणस्स भगवओ महावीरस्स पित्तिज्जे सुपासे जि

वडोभाई नंदीवर्द्धन बहिनीसुदर्शना भार्यायसोदा कोडिन्नगोत्र श्रमणभगवंत

ट्ठेभाया नंदिवद्धणे भगिणीसुदंसणा भारियायसोदा कोडिन्नागुत्तेणं समणस्स भगव

श्रीमहावीरनी बेटी तेहनोकाश्यपगोत्र तेहनाबेनामएहवा तेजिमकहेछइ तेजिम अनोज्जा१

ओ महावीरस्स धूआ कासवगुत्तेणं तीसेदो नामधिज्जा एवमाहिज्जंति तंजहा अणुज्ज ५८

वा प्रियदर्शना२ जमाली श्रमणभगवंत श्रीमहावीरनी पुत्रीनीपुत्री तेहनो काश्यपगोत्र तेहनाबेनाम

इवा पियदंसणाइवा समणस्स भगवओ महावीरस्स नत्तुई कासवगुत्तेणं तीसेदो नामधिज्जा

एहवा कहीइं तेजिम शेषवती१ जसवती२ १५ श्रमणभगवंतश्रीमहावीर सघलीकलाइं

एवमाहिज्जंति तंजहा सेसवईइवा जसवईइवा १५ समणे भगवं महावीरे दक्खे दक्खप

[illegible]

इन्ने पडिरूवे आलीणे भद्दए विणीए नायपुत्ते नायकुलचंदे विदेहे विदेहदिन्ने विदेहजच्चे

[illegible]

विदेहसुमाले तीसं वासाइं विदेहंसि कट्टु अम्मापिईहिं देवत्तगएहिं गुरुमहत्तरएहिं

[illegible]

अब्भणुण्णाए समत्तपइन्ने पुणरवि लोयंतिएहिं जीयकप्पिएहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं

[illegible]

जाव वग्गूहिं अणवरयं अभिनंदमाणाय अभिथुव्वमाणाय अभिनंदमाणाय अभित्थुव्वं

बुमाणाय एवंवयासी ११ जयर नंदा जयर भद्दा भद्दंते जयर खत्तियवरवसहा बुज्झाहिं भ
गवं लोगनाहा सयलजगजीवहियं पवत्तेहिं धम्मतित्थं हियसुह निस्सेयसकरं सव्व
लोए सव्वजीवाणं भविस्सति कट्टु जयर सद्दं पउंजंति १२ पुव्विं पि णं समणस्स भगवओ महा
वीरस्स माणुस्सगाओ गिहत्थधम्माओ अणुत्तरे आभोइए अप्पडिवाई नाणदंसणे हुत्था तए णं सम
णे भगवं महावीरे तेणं अणुत्तरेणं आभोइएणं नाणदंसणेणं अप्पणो निक्खमणकालं आ
भोईए अप्पणो निक्खमणकालं चिच्चा हिरणं चिच्चा सुवणं चिच्चा धणं चिच्चा रट्ठं एवं बलं वाहणं कोसं को

ट्ठागारं चिच्चा पुरं चिच्चा अंतेउरं चिच्चा जणवयं चिच्चा विपुलधणकणगरयणमणिमोत्तियं
संखसिलप्पवालरत्तरयणमाईयं संतसारसावइज्जं विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता दाणं दायारे
हिं परिभाइत्ता १३ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जे से हेमंताणं पढमे मासे
पढमे पक्खे मग्गसिरबहुले तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं पाईणगामिणीए छ

यए॥ लोकनें अग्निं रूपना ते हत्तणी लोकांतिक देवता सारस्वत १ आदित्य २ वह्नि ३ वरुण ४ गर्दतोय ५ तु
षित ६ अव्याबाध ७ अग्निच रिष्ट ८ ए नव प्रकारे लोकांतिक देवता वरसादिवसथाकतो रुतिकाले आवीय
बे लगवंत संवछरी दांन देई चारित्र ल्यइ ते दांन प्रभात थी बघडी लगें वरवरो एह वीउद घोषणा करे नगरमाहे
एक सुवर्णनी कोडि अनें क परि लाष एतलुं दांन बघडी माहि दीइ तेवर सि एवं त्रिणसइ कोडि अठ्या
सी कोडि अनइ ८० लाष एतलु संवत्सरी दान देइ तीर्थंकर देव हवइ भगवंतनइ दीक्षानउ महोत्सव जिम थाइ बइ सवत्स
री दान दइनइ वली भगवंत नंदीवर्धन राजानइ पूछीनइ दीक्षानइ समइ संकल्प था एतलें नंदिवर्धन राजा न कुंभ पुर

नगरनइ विषइं धूजमघ्येवल्लखवालि वामिरमावाबाधइ एणिमिलइ नगरकंगारी स्नात्रमहोत्सव करी तिहारपवी जन्मस्नात्रनी परइं करेलसइ करी देवतासंबधी बावन्नेचंदनेसरीसवी कल्पवृक्षादिक फूलमाला कंठिआरोपी धवलदेवदूष्य पहिरावी मुकुट हारकुंडल केयुरादिक मुख्यआभरणि करी पालखीइ बइसा तेपालखीपहिलुमाणस उपाडइ रोमांचउल्लसइ नइ पछइ तेपालखीइं इंद्रनागेंद्र वहइ पालखीनेमान पचासआयाम धणुण विस्तीर्णपत्न वीसंतु बत्रीसयमुच्चत्ता साहावइइ पहासणीया १ अर्थ तेपालखी पंचास धनुष लांबी पचवीस धनुष पहुली बत्रीस धनुष ऊची तिहने तामध्ये प्रसापालखी तिहां सुवर्णसिंहासन तत्र धरत्तिइ बइसे स्वामी इन्द्रा नेद्र साधर्म इं बिहु पासइं चामर ढालइं देवता पंचवर्णी फूलवृष्टि करइं नंदीवर्धनराजा अंतःपुर सहीत पूठइं आवइं वाजित्र स्वरमधूर वाजइं आकाश नइ विषइ देवदुंदुभि वाजइं आगलि मंगलीक तेकेहा साथीउं नंदावर्त श्रीवत्स वर्धमान मत्स्य मिट्टन दारासनकलसमनसदुरमय आगल मौजाइ ॥ श्री ॥ ब ॥ ब ॥ ब ॥ ब ॥ श्री ॥ श्री ॥

जांइ पाछ साइमी आव अमाणआय सुव्रतइ दइहना विजयनामेमुहूर्त्त चंद्रप्रभा
लापोरसी नी शरीरप्रमाणे मेंदिवस नइ विषइ

याए पोरिसीए अभिनिविट्टाए पमाणपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं चंदप्पभा

नामे पालखीइ सहित देवता मनुष्य असुर मंनुष्य पारातु ता सी जे परषदा यंषवृजा चक्रआस्त सुवर्ण
बेसीने संघाले चालता ते भर मय

ए सीयाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणुगम्ममाणमग्गे संखिय चक्किय नंगलि

लक्ष्याकार मुखवमं वर्धमान पंथ तेहिं कीधा वक्तउ मगध पुरा उनाम तेहनइ अंमित सोमामधुर लक्ष्मी
मंगलीक पाचक लितस्थानी यजाइ धंटवजावि राउलीयाते मुइ मता

य मुहमंगलिय वद्धमाण पूसमाण घंटियगणेहिं ताहिं इट्ठाहिं जाव मियमहुरसस्सि

काणि एवं वचनइ हर्षसहीत इहइ करइं एकचन्नीपाउं जस्वजे लोकमांते कुसैष १४ जयरवलीजोवंदि
वनेचकरइ जयवन्त इकारो

रियाहिं वग्गूहिं अभिनंदमाणा य अभिथुव्वमाणा य एवं वयासी ॥११४॥ जय जय नंदा जय

लोमंगलिक तउ क्षत्रियमांहि श्रेष्टसहित निरतीचार ज्ञानदर्शनचारि जेअजयवन्तइ रागादिक
तेहीजयपा मा वृषमान णा त्रे करीने अतेजीप

जय भद्दा भद्दं ते जय जय खत्तियवरवसहा अभग्गेहिं नाणदंसणचरित्तेहिं अजियाइं जिणाहि

इन्द्रियादिकजीती जीतीने पा चारित्रधर्म जीतां विघ्नइ लेखुं तुं वास करि हेदेव सिद्धिमांहइ लोभादिक इतो
तउ चारित्रधर्ममांहि निरन्तर प्रवर्त्तइ नि

२ इंदियाइं जियं च पालेहि समणधम्मं जियविग्घो वि य वसाहि तं देव सिद्धिमज्झे निहणाहि

रागद्वेष रूप मल्ल तपसंतोष करी अतिनिश्चल कछे ह मर्दतो आठकर्म रूप शत्रु ध्यानइ उत्तम जे शुक्ल
अति करउ इहा मनतहरह री ध्यान करीने

रागदोसमल्ले तवेण धिइधणियबद्धकच्छे मद्दाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्के

ध्यान तेणे अप्रमत्तपणा आराहि केतलो आराधनपताका अने पाप तिमिररहित उत्कृष्ट केवल
सको श्रीवीर

णं अप्पमत्तो हराहि आराहणपडागं च वीर तेलुक्करंगमज्झे पावय वितिमिरमणुत्तरं केव

ल वरनाणेणं गछय मुक्ख परंपयं जिणवरो वइडेणं मग्गेणं अकुडिलेणं हंता परीस

हचमूं जय जय खत्तियवरवसहा बहूइं दिवसाइं बहूइं पक्खाइं बहूइं मासाइं बहूइं

वरिसाइं बहूइं उऊइं बहूइं अयणाहिं बहूइं संवच्छराइं अभीउ परीसहोवसग्गाणं खं

तिखमे भयभेरवाणं धम्मे ते अविग्घं भवउ तिकट्टु जय जय सद्दं पउंजंति ॥१५॥ तए णं सम

णे भगवं महावीरे नयणमालासहस्सेहिं पिछिज्जमाणे २ वयणमालासहस्सेहिं अ

भिथुव्वमाणे २ हिययमालासहस्सेहिं उन्नंदिज्जमाणे २ मणोरहमालासहस्सेहिं वि ६२

च्छिप्पमाणे २ कंतिरूवगुणेहिं पिच्छिज्जमाणे २ अंगुलिमालासहस्सेहिं दाइज्जमाणे २ दाहिणह

त्थेणं बहूणं नरनारिसहस्साणं अंजलिमालासहस्साइं पिच्छिज्जमाणे भवणपंतिसहस्साइं समइ

च्छमाणे २ तंतीतलताल तुडिय घणमुइंगगीयवाइयरवेणं महुरेणय मणहरेणं जयजयसद्द

घोसमीसिएणं मंजुमंजुणा घोसेणय पडिबुज्झमाणे २ सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलेणं सव्ववाहणेणं स

व्वसमुदएणं सव्वायरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वसंगमेणं सव्वपगईहिं सव्वना

डएहिं सव्वतालायरेहिं सव्वओरोहेहिं सव्वपुप्फगंधवत्थमल्लालंकारविभूसाए सव्वतुडियसद्दसन्निना

मोटी रुद्धइंकरी मोटीकांते मोटेबल टकेकरी मोटा पालखी प्रमु मोटे समुदाइं मोटी स्फ मोटा रवा
रवीवाद तें
एणं महया इड्ढीए महया जुइए महया बलेणं महया वाहणेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय
जिनेंद्र समकाले संख वाद्य मेरी झल्लरी नरवल खरी मादल काहल मृदंग मादीनो देवदुंदुभि मोटा नादे
वाजिंत्र वजाडीने नीपजाव्यो कोलाहल पामीने वाध्या मय त्रि नायकना
जमगसमगप्पवाइएणं संखपणवपडहभेरिझल्लरिखरमुहिहुडुक्कमुरजमुइंगदुंदुहिनिग्घोसनाइ
नादकरी क्षत्रीकुंड नगर प्रते मध्य मांहि निकलीने जिहां ज्ञातखंड वन उद्यान मांहि छइ जिहां अशोक नामइ
नीसरीने नवइ
यरवेणं कुंडपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव नायसंडवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपा
वृक्ष तिहां आवइ आवीने २८ अशोक नामे वृक्ष तले तिहां पालखी राखे राखीने पालखीथी उतरइ उतरीनइ
उइ
यवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता १६ असोगवरपायवस्स अहे सीयं ठावेइ २ त्ता सीयाओ पच्चोरुहइ २ त्ता स
आभरण आभरण अलंकार प्रमुख मालादिक पोताने हाथे पंचमुष्टीक लोच करइ करीने छठ बेतुं उपवास पाणी
रहित करी नइ करे
यमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ २ त्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ २ त्ता छट्ठेणं भत्तेणं अप्पा
रहित उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे चंद्रमा योग प्रवर्त्ते एक देवदूष्य वस्त्र लेई एकाकी मुंडित थई नइ घरथी अणगार
णेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं एगं देवदूसमादाय एगे अबीए मुंडे भवित्ता आगाराओ

साधुपणो धरतो

अणगारियं पव्वइए ॥१२॥ ॥अत्र पूर्वं श्री वीरो अष्टजीतीमृत्पाणीतो वीरवलयी रुजासां अंगदे कंठ
तोदार कर्णे तथा कुंडलैः मस्तकाभूषणमुकुटवस्त्रस्यती तत एतानी आभरणानी कुलमहत्तरी कोस्याहंस लक्षणपाटशाटके
न गृह्णाती तदनंतरं सवयस अवादीत् इक्ष्वाकुकुले साएउम् जाया कासवगुत्रेमीएउम् जाया उदीतोदीत नायकुल
नहयलमीयकसीह अइउरकंतीअसरूतेसाएउम् जाया नव्वस्क्रीयाएणी एतीमाला एसुतेसि एीउम जाया देवीदन
देवपहीअसूकीर्तीसारेउम जाया इत्यासवकमाल अस्य गकृअस्यालंबेअ अहासंपूर्णमहद्वयं धरो अबजाया अ
सिवणं अठनापमाएअर्थ इत्यादिविवनेउको वदीत्वा नमस्कृत्य एकतोऽपक्रामति ततो भगवान् एकया मु
ष्ट्या कूर्चस्य चतसृभिर्मुष्टिभिश्च शिरोरुहान् लुंचयति एवं स्वयं पंचमुष्टिकं लोचं करोति नित्तनाथ अत्र श्री वीरए
काकी प्रव्रजित अन्ये तु तीर्थंकरास्तु एवं स्वयं पंचमुष्टिका चतसृभि श्रीरूषभादीनां राज्ञां चतुःसहस्राण्यहर्द्दीक्षमा
दे श्रावणपार्श्वौ च त्रिभिस्त्रिभिः राज्ञां शतैः सहवासुपूज्यो षट्शत्या सह शेषाण्येव सहस्रेण सहप्रव
जिता अत्र एव वारोऽनेकतायइति हवे श्रीवीरस्वामी दीक्षाविधी तथा पंचमुष्टी लोच करीने भगवंत सामाइक न
ओ रचावीको तीनाइ दइ खाजी वनस्कोलाहल तीवीरहू नमो मायाथा एकवचनेकहा भगवंत करे मीसामाइयं सव्वं स
वज्जजोगं पच्चक्खामी इत्यादि कह्यु हवइ अराहंत पोते आमाठि इहां ते तेनके चारीत्र लेता पछी मन वीत्त मन पर्याय
ज्ञानतपव पञ्चइद्रादिकवीरतई वादो संस्थानकीपाया तती श्रुत गोपइगया यात्रा मही बवधीकारी पचम व्याख्यान
संपूर्ण ॥ अनंतर तत्र साध्या पञ्च आत्मआत्मस्थाने अनतर कृतवइ तथा मीठ दीनो थेय तो शासबासुहे तेम भी सा वनीश
वगुणा थिक पाटइ नमस्कार कर्यो हवइ अंत य नकूभार स्वरसीकल्याणी आवा हेना अकलो अ श्री वीर कथा तें प्रत्ये

तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर १ वरसऽनें दोढ मासें वस्त्रनां धारणहार तिवारपछी त्यजेउक श्रोघमास
सहित वा थया

तए णं समणे भगवं महावीरे संवछरं साहियं चीवरधारी होत्था तेण परं अचेलए पाणिपडिग्ग

पछीकरे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर झाझेरो बारवरसलगे नित्यसुठकरिएं वोसिरावी के कायमेलें श्री जेउपसर्ग
पात्रीथका २ अथवासर्व कांयां वेदेह तेण

हीए समणे भगवं महावीरे साइरेगाइं दुवालसवासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ

स्पर्शनु छिकवानु दवेतासंबंधीया मनुष्यनासंबंधीया तिर्यंचसंबंधीया अनुलोमते स्त्रीया प्रतिलोमक० देवीप्र
वाकउपजई मा दिकनाकस्त्री मुखनाकरया

उवसग्गा उप्पज्जंति दिव्वा वा माणुस्सा वा तिरिक्खजोणिया वा अणुलोमा वा पडिलोमा वा ते

तउपसर्गप्रतें शरीरइतेतत्वाधकने सुवातनामर्नसमसहतउयने ।। इहां सावाधिविस्तारीई छिइ ।। अतएव
विषउदासीनतुछिके जेहुता श्रवतिषमवा सुमरह्हे व श्रोहियासें अचलपणें एतलें पडिलव
यसिकलितसझावनाइ परिणम्यावीर

उप्पन्ने सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।। २७ ।। भगवंत बंधुवर्गनिइ रुषी विहारनें अर्थेवाल्या बंधुव
उदासीनथईउपसर्गादिकनें स्वरूपमात्रें अनुभवेंइत्यर्थः ।। भगवंत बंधुवर्गनि ई रजी विहारनें अर्थे चाल्या बंधुव
र्गपिण जिहां लगे भगवंतनें नजरेंदीठा तिहां लगे तिहां थोली आंसुसुंकेता पोतानें घरे पुहता श्रीमहावीरनें दी
क्षामहोछवें नरदेवताइं चंदनफूलादिकेंइ स्पर्श्या तेहनो गंधसाढाच्यारमास लगि रह्यो तेमाटि तिहां भमरी आ ६३
वीशरीरनें डसें वली वानक्रु षगंधनें लोभें उपसर्ग करइं स्त्री पणि भगवंतनें अद्भुतरूप गंधइस हितसरीर देषी
कामपरवशथईआवी अनुकूल उपसर्ग करें भगवंत तपिण मेरुनी परि निश्चलथकाइ मसवसहता विहारक
रइ ते किमनेहजदिवसें पाछली घडी बेघाक तेकुमारग्रामनें उद्यानें भगवंत काउसग्गरह्या एहवेंकोइकगोव

लिआ भगवंतपासेइ बलदमूकीनें घरेंदोहवानें गयोः बलदपणचरवनमाहें चरवागया अनेकामनें कार्यकरीनें आव्योः तेणो पडल
दतिहांनदीठाः भगवंतनें पुछ्याः भगवंततो बोल्या नहीः पछें बलदनें वाचेंवनमाहें तेरात्रलगेंतपाया श्रनेतेनाचंतपासेंपोतानीमे
लिआव्याः बलददीठा निवारें क्रोधपामी एणें संताड्याहताः अमनें निर्धकसप यरात्रलगें नपाम्या एम चिंतविनें गोवालिइ रसेल
कउपाडी भगवंतनें मारवानें दोड्या एटलेंअवसरें इंद्रअवधीज्ञानें जोइनें इत्तांतसर्व पछें गोपनें शिषदीधी इंद्रें विनति किधी
हेस्वामिभगवंतउपनें अपनेघणाछें माटें बारवरसलगें वेयावच्चनें अर्थे उपायकरह निवारें भगवंतें कह्युं हेदेविंद्र एवंभुः
श्रो न एयं भूयं न एयं भव्वं न एयं भविस्सं जन्नं अरिहंता वा देविंदस्स असुरिंदस्स वा निस्साए केवलनाणं उप्पाडिंसुवा नेसिद्धिं गयासुं
ति अरिहंता सएणं उट्ठाणं बलवीरिएणं पुरिसक्कार परक्कमेणं केवलनाणं उप्पाडिंसुवा उप्पाडेंति वा उप्पाडिस्संति वा सिद्धि
चावच्चंति इमसगवंतनुं वचन सांभली मारणांतिक उपसर्ग निवारवाइं इंद्रें सिद्धार्थनामा श्रीवीरनो मासियाई व्यंतरदेवता भगव

ननी सेवाइं मूक्यो नमस्कार करीइंद्र देवलोकें गयो बीजें दिनें भगवंत कोल्लाग सन्निवेशइं बहुलब्राह्मणनें घरें पात्रे माह
रीपरमान्नइं पारणुं कीधुं तिहां पांचदिव्यप्रगटथयां वेलोत्क्षेप १ गंधोदकवृष्टि २ दुं
दुभिनाद ३ अहो दानं रएहवी उद्घोषणा ४ वसुधारावृष्टि ।। ५ ।। इहां प्रसंगीवसुधारानुं मान कहीइं छिइं ।। उत्कृष्टरसको
डि जघन्यसाढीबारलाखसोनईयानीवसुधारा अवश्य होइ तथा तातनो जेणनमानतावरसासीत्रमाण आयतप्र
धुलवसुधाराज्ञातवीपहथूलभगवंत विचरता मोराकसंनिवेसनें विषें दुइज्जंत नामना तापस आश्रमइं आव्या तिहां सिद्धार्थ
नानो मित्र कुलपति भगवंतआव्यानाणीमिलवा आव्यो भगवंतनेपिण आवालक्ष्मीअल्पासंधीबांहपसारीमिल्यो तेह
नाआग्रहथी एकरात्रि तिहां रही नीरागविचरता पिण तिहां वोमासानो आग्रहमांनी आठमास अन्यग्रामें विहार
करीवलीचोमासा करिवा तिहां आवी कुलपतिइं दत्त तृणना उटजमां रहिया एहवें वरसातनें अभावें अन्यतापस
संबंधी उटजनां तृणगावां आवतां पस्समहतेतापसहाकें भगवंततो निस्पृहमाटें हाकें नहीं एकदा तृणसवपि

षाधेजते उघाडुंउमदवलुं देषी कुलपतिइं कह्युं हे स्वामिन् पंषियापिण पोतानामाला राचवें वें अमेतोराजएं अघम पोतानो आश्रय साचवें। नंधिसक ना एघटेनहिं तिवारें भगवंतेविनचुंजे एहनेमुक माटिंअप्रीतकपनी तोइहां नरहेवुं इमचिंतवी भगवंतआसाढशुनिमधी १५दिवसगइंथके। के तिवारइं ५अभिग्रहधर्या तेकिहा। पहेलुं जिहां अ प्रीतकपजें तिहां नरहेवुं २ निरंतरकाउसग्गरहिवुं॥२॥३ हस्तनोविनयनकरवो ३ यथासंभवें मोनपणेरहिवुं ४ हाथेंभोजनकरवुं॥५॥ इमेपअभिग्रहधरी अस्तिग्राम नगरें चोमासुं रहिंइहां पार्श्वनोगसंबंधिकालमानने प्रसंगे वेस्त्रभोगनेसंबंधिहेउके कालमानविचारीइ बिइं वें एकदा प्रभु विहरतइं भगवंत दक्षिणवाचालपुरनेसमीपें सुवर्ण वालुकानदीनेकांठें वृलगीअर्द्धदेवदूष्यवस्त्रपडिंजतइं पावुंफरीजोयुं इहां वृद्ध इमकहें छइं शुद्धभूमिंपडयुं कें अशुद्धभूमिंपडयुं तेजिवारेंजोयुं तिवारेंइं वस्त्रनो कांटेवीधाणु तेणें करी भगवंतनाशासनधूणीपीओस्युं कंटालाऊ मतिकपभ्रम्यो पिणविश्वरूपें शक्रपीठाटाळ्युं स्थाप्रवर्ता वियुं इहांपरमार्थनोलिखवु चलउंते अर्द्धवस्त्र तदकों

तब्राह्मणेतिहांथी लिधुं तेब्राह्मणनें जदर्वें देवदूष्यवस्त्र अर्द्धकरी भगवंतें आपुंछे तेकिमतेदरिद्रीब्राह्मण प्रथमभगवंतनादानमां वेलाइं परदेसेंगयोहतो। तिलाभपिणथी निःशरण घरें आव्यो स्त्रीइं निर्भछ्यो अरेभाग्यहीन जिवारें भगवंतें वरसीदानदीधुं तिवारें आव्योनहीं तितणुं नीर्धन जन्तोस्यंझूषदेषाड्यो लाजतोनथी स्त्रीलें गोवृरु सरिषा भगवंतनेहपासेंजइमागि जिमताहरुंदारिद्रजाइं इमस्त्रीनेंवचनेंप्रेर्यो ब्राह्मण भगवंतपासेंइं करुण स्वरनेंवीनवें हेकृपासागर तेंविश्वनादारिद्रहरिकीधा जंतिलाभ पुण्योपर तेदाननेसमें हतोनहीं बाहुमेंपेरते अधिस्यास्यांचेष्टिततकस्मा अतः किंकिंनेकथं कोकोनपृष्टितकहकहेननामित्वंमीस डभ्ररउभूरस्सकए किंनकथंकिंनकायं॥॥ अनेकमेजंतस्पासेंआव्यो माहरुंदारिद्रहरिकरि इमयाचनाब्राह्मणेंकरुणावं तभगवंतें देवदूष्यवस्त्रनो अर्द्धचीरी आप्यो अर्द्धखंधस्थिते रह्यां पछे वरसीदानदायक भगवंतइंजे अर्द्धवस्त्र

आपुं तेभगवंतनासंतानीयानें थाइं वस्त्रपात्रकपरिमट मूर्छाधस्ये तेसूचवुं पछेते अर्द्धवस्त्र लेइनेइं ब्राह्मण दसीआवी रफुकरावबाऊनारानें देषाड्युं तिवा रें तेनारिकहुं नोब्राह्मणवलीभग वंतपासेंजइमा गि भगवं तनिर्लोभीमाटिंइकदाच अर्द्धवस्त्र आपस्ये तेलेइ॥ आविजिम बेउं रुएकवाकरी आउलाषद्व्य॥ तेअर्द्ध अर्द्धविहिंची लेस्युं आप णुदारिद्रभागस्ये पछइवि प्रभगवंतपा सेंआवीनेरह्या॥ इं अणमागतो खरलगेंसाथेंभम तोहवो एकदा कांटे लायुं वस्त्र देषी। लेइघरेजइब्राह्म णइनाराननेदीधुं इत्तिविधिवेंतेणें फलपाम्युं एणप्रकारें थाइं साधुइं वस्त्रधरवुं तेजणावेवा भगवंतनें ऊणफेरा रव रसभगें वस्त्रनोभोगहवो वलीछद्मस्थकिरीति दमासभगें पात्रनोगनोपिणसंभवहवो पछेश्रीवीरजा वजीव भग अचे

लअनेंपाणिपात्रथया वलीएकदाविचरता भगवंतगंगानदीनेंतटें सूक्ष्मरेतिमांहिं प्रतिबिंबितपगलानी श्रेणिनें विप वकेल जे अकस्मात् प्रभुस्वलक्षण देषी ७ पुष्पनाम सामुद्रिक शास्त्रनो जेणहारवो तेवचालागो अह रलक्ष तोएकागलीं शके वनितिकोइइक जाइं छे तिहांजइतेहनीसेवा करुं इमचि तेवी कमवलो पगलाने अनुसारें भगवंतनापासे आव्यो भगवंतनेंइंदे षीअहो म सामुद्रिक कोकहतस्युं जे एहवालक्षणनो धणी भिक्षा करीनेंभमारें एसास्त्र फो दु खंडनदवुं विनचीपोणीपे बोलवालागो एहवेंइंदेअ वधीजानें एहनोजणीपणइं जाण्यो वीन ज वेतने वा व्या श्रीवीनोतरिनवरोंवी ७ष्फकेरापस्त्र बोलतो निवार्यो पछे भगवंतनागुणग्रामकरीइंद्रस्थानकेंग याइंइनाहा थयीमणिकनकादिकपामी हर्षपामतो। अल्पपिणपोतानेंदेसंग यो भगवंतें अन्यदेसेंविहार

कीधो एक राजलोक चालतो हिवण कनकखल नामि तापसने आश्रमे चंडकोशियो सर्पनइं प्रतिबोधवा
भगवंत आव्या ते चंडकोसिउ पाछलि भवि जतीहतो पारणें विहरवा जातो मार्गमें मेडकी चंपाणी चेलें पडिकम
णनी वेलाइं संभारी गुरुनें रीस चढी मारवानें धायो थांभे आफलाणो मरण पामी ज्योतिषी देवता थयो तिहांथी
चवी पांचसें तापसनो धणी थयो चंडकोसीउ तापस थयो तिहां पिण राजानापुत्र पोताना आश्रम की फल
त्रुटता देषी चंडकोसीउ फरसी लेइनें धायो धावतां कुवामां पड्यो फरसीइं विंधाणो तिहां चंडको
शीउ पाछिला कर्मना उदयथी दृष्टिविषसर्प थयो ते चंडकोसीइं सर्प भगवंतने काउसग्गे रह्या देषी क्रोधे
करी ज्वालारूप मान सूर्यसांहमुं जोइ भगवंत प्रतिं ते ज्वाला नामुकवा लागो तेसर्वज्वाला निष्फल थइं माहा
विषनो आक्रमण जोता पणि स्परश्यो प्रभुने तो पण तेमा हिमकदे इनें वेगलो जाइ गायनाद्व्धसरीषा धवलु

भगवंतनुं लोही देषी तिवारें भगवंतनें एहवुं कह्युं रे चंडकोसिया बूझि २ एहवुं वचन सांभली जातिस्म
रण पाम्यो भगवंतनें त्रण प्रदक्षिणा देइनें अणसण कीधुं रषे माहरी बीहामणी दृष्टि बीजे ऊपरें जाइ तेमाटे
मुष बिलमां दिघा ली नें रहिउं धीनी वेचणहारी स्त्री भक्ति करें घृत दूध दहीइं करी पूजे तेथी गटनी लीधी क
डी तेणे पीड्यो भगवंतनी कृपादृष्टि दृष्टि सीच्यो पन्नर दिवसनो अणसण पाली सहस्रार देवलोकें गयो एवं क
रुणापरोपकारी भगवंत तिहांथी अस्थिग्रामें शूलपाणी यक्षनें देहरें चोमासुं रहिवा आव्या ते शूलपाणी यक्ष
वर्धमान धनदेव वाणियानो बलद हतो एकदा तेणें पांचसें गाडां कादवमां कचरी माह्या ताथका त्यारें तस्या तेश्र
मथी शरीरनो संधाना त्रूटयें आवी कण धोरी जाणी वर्धमान गामना लोकनें दाणं चारादि निमित्तें द्रव्य आपी
ते बलदनें सुषी धनदेव शोक करतो देशांतरें चाल्यो केडें थी ग्रामलोकें बलदनी सार संभाल न कीधी ते बलद

पतिषा नी पीडाइं करी मरण पामी [illegible] अकामनिर्जरायथी व्यंतर थयो तेणें पाछिलो वृत्तांत जाणी तेगाम
मांहि मारकी विकुर्वी तिवारें घणा लोक मरण पाम्या कलेवरना संस्कारनें अणकरवइं लोकें बाहिर मडदानां ढेर तेणें
गामें हाडनी वाडि थइ तेहनुं नाम वर्धमान नाम टली अस्थिग्राम थयुं मरता लोकनें आराधतें जक्ष मा
नथइ व्यंतरें लोक पासें देहरुं करावी प्रतिमा स्थापी मांहिं ते पूजा करता ल्या तेणें मंदिरें रहिनां श्रीवीरनें सर्व लोकें वार्या ते
इहां दुष्ट व्यंतर रात्रिं वासो रहि तेहनें मारइ माटें ए देहरामांहि म जाइस तोहिं पिण यक्षप्रतिबोधवा निमित्तें श्रीवीर रा
त्रि काउसग्गे रह्या एहवुं भगवंतनी परीक्षा निमित्तें भूमि भेद करी अट्टहास हस्तिरूपें सर्परूपें पिशाचरूपें उपसर्ग
करी पछें मस्तक १ कान २ नासिका ३ आंषि ४ दांत ५ पूंठि ६ नख ७ विविध वेदना उपजावी भगवंतने अक्षोभ्य जाणी स
रु प्रतिबोध पाम्यो एहवें सिद्धार्थें तिरस्कार कीधो हे शूलपाणि यक्ष एसुं अकार्य कीधुं जाइ जाणस्ये तो नाहरो वाम

टालस्यं इम सांभली बीनो थको यक्ष विशेषें भगवंतनइं खमावी नाटिक स्नात्रादिक करवा लागो तेगीनादि कसां
भली अस्थिग्रामना लोक चिंतववा लागा व्यंतर एणि मुनिनें मारी शस्यइ गीतगांन करे छे भगवंत पिण च्यार पहोर
लगें अति उपसर्ग वेदना भोगवी प्रभातें क्षणएक निद्रा पामी दश स्वप्न देषी जाग्या एहवें तिहां सर्व लोक मिल्या उत्प
लनामा निमित्तिउ पिण भगवंतनें दिव्यगंध चूर्ण पुष्प इम स्थ्या देषी खुस्या तिवारें वालोक सर्व ने इम कहि तो हवो आहो
भगवंत उमें पाछली रात्रि दस स्वप्न दीठा तेहनुं फल कहुं छुं पहिले स्वप्नें तालपिशाच हण्यो तेहनुं फल प्रभु घोडा दिवस
मांहिं मोहकर्म हणस्यो १ बीजे स्वप्नें श्वेत कोकिल दीठो तेणें शुक्लध्यान ध्यास्यो २ विचित्र कोकिल दीठो तेणें द्वाद
शांगी प्ररूपस्यो ३ गोधन चारो तो दीठो तेणें चतुर्विध संघ उमनें सेवस्ये ४ समुद्र स्वप्नें जाइ तरयो दीठो तेणें उमे आलव संसा
रसमुद्र तरस्यो ५ ऊगतो सूर्य दीठो तेणे थोडा वरसमांहि केवलज्ञान पामस्यो ६ उमे आंत्रें करी मानुषोत्तर पर्वत
वींट्या तेणें त्रिभुवनमें उमारी कीर्ति विस्तरस्ये ७ उमे मेरुपर्वत ऊपरि चडि काइ बेंठा तेणें उम्यों सिंहासनें बेसी धर्मोपदेश
देस्यो ८ उमे देवताइं सेवित पद्मसरोवर दीठो तेणें उमारी च्यारि निकायना देवता सेवा करस्ये ९ उमे जे फूलनी माला

दीवी तेहनो अर्थ किंन थी जाणतो । तिवारें भगवंतें कह्यं बिं प्रकारें धर्म कहीइ यतीधर्म अनें श्रावकधर्म त
ेहनो मारगनो ए अर्थ जाणवो ॥ १० ॥ तिवार पछी भगवंतनें वांदीनें स्वस्थानकें गयो । तिहां भगवंत आगणा
स रषमणे प्रथम चोमासुं पूर्ण करी तिहां थी मोराक सन्निवेसें पारणुं करी प्रतिमाइं रह्या तिहां भगवंतनी सो
भा धारवा निमित्तें भगवंतनुं शरीर अधिष्ठिनें सिद्धार्थ निमित्त कहितउ हवो तिवारें भगवंतनो महिमा देषीनें छेद
नें वस अछेद कहेइ हाथे तृण लेइ प्रश्न करे छे ए आयति एम भागस्ये के नहीं भागे तिवारें सिद्धार्थ कहिउं एहं न
भागइ तेणे त्रिणना गं भाग्या तेणे अयम की धो पणि भागुं नहीं एहवे इंद्रे अवधिज्ञानें एह वात जाणी वज्रें तेहनी आंगुली
छेदी तिवारें क्रोध पामी सिद्धार्थ लोकनें कहिं तो हवो ए अछेद कचोर छे ए एणें कर्मकरना वीरनी वाटि को वारीनें रख्यां छे
बेरा कहे वीजुं इकणमां नो घेटो मारी एणे षाधो तेहनां अस्थि बोरडीतले दाट्यां छे त्रीजुं एह नीजा
कहिस्ये तो कहेइ नाथानें इंद्र छेद नायाकि कहे एणें पापीइं पातानी बहिननें भोग वेवेड मसांत ली अछेदक

लाज्यो भगवंत पासें आवी वीनती की धी हे भगवंन तुमे सर्वत्र पूजाइंछो मा हरे तो इहां जीववुं तिवारें भगवंत तेहनें
अप्रीतकपनी जाणी तिहांथी विहार कीधो अनुक्रमें श्वेतांबवांतनगरीइं नागसेनें षीरान्नें प्रतिलाभ्या तिहां प
ंच दिव्य थया तिवारपछी श्वेतंबिका नगरीइं परदेशी राजाइं भगवंतनो महिमा वधार्यो तिवारपछी भग
वंत सुरभिपुरे गंगा नदी उतरवानें अर्थे पधार्या सिद्धदंत नावाइं भगवंत तथा अन्य लोक पणि बेठा तेहवें घूह
डनो शब्द सांभली क्षेमिल नामा निमित्तियो बोल्यो अहो लोको आज मरणांतकष्ट उपजस्ये पणि एम हापुरुष
नें पुन्यें विलय जास्ये एहवें भगवंतें त्रिपृष्ठ वासुदेवनें भवें विदार्यो सिंह मरीनें सुदाढ नामे नागकुमार देव
थयो छे ते भगवंतनें देषीनें पूर्व वैरें नावानें बोलवा लागो तेहनें कंबल संबल नामे देव ना नागकुमारें वास्यो इहां
संबल कंबल उत्पत्ति कहे छे मथुरा नगरीइं जिनदासश्रावक तेहनें साधुदासी श्राविका छे ते नगरमध्ये बेहुं नें पांच
व्रतें निवृत्ति चोपद तुं पछेरका ण कीधुं छे तेहनें आहीरसाथें मंत्र देवनं थी संनो छे एकदा धुरपाधरें मिलता आही

रनें विवाह नामे विपगरण मेले आप्या वीवाहनो उछव संपूर्ण थयें हुंतें श्री तपांमी आहीर सेठ निघरे बलान्कारें बेन वाछ
डला बांधी गयो तिवारें सेठें विचार्युं जो ना कहीसतो अन्य जायगाइं वेचस्ये तिहां बलद रहेस्ये एह बुद्धीं तिणें
अंतुकं पाइं घरे बेबलद पोस्या कंबल संबलनामदीधु एहवे तिहां आठमिचौदस प्रमुख पर्वनां पोसह करी मे पुस्तक
वांचइं तेमां सांभली बलद भद्रक थया जे दिवसें सेठ उपवास करइं ते दिवसें ते वृषभ पणि तृणादिक वावरें नहिं एरीतें कालन
गमें छइं अन्य दाने मेवनें मित्रे ते वृषभ बलिष्ठ पुष्ट देषी जिनदासनें आपूछ्या वगिर लेजोतरी मेरी वने यक्ष्यात्राइं जातां
एं दोडावतें करी शरीर त्रूटा सेठनें घरे पाछा आण्या सेठें तेह वात देषी बलदनें अनशन करावी नोकार दीधे ते
मरण पामी नें विकं नागकुमार देव थया ते कंबलसंबल तेहवें उपसर्ग निवारी भगवंतनें आगलि नाटिक करी वा
ख वा मिथुनता भगवंत पिण विहार करता राजगृह नगरीइं नालिंदे पाडें वणकरनी शालाइं एकदेशें प्रथम मासखम
ण करी रह्या तिहां मंखलिपुत्र गोसालो आव्यो गजवडालखे तनी गोसालो निज मनो माटे मासो ते कहिवाणो अनु

क्रमें ते भगवंत पासें चूमनो धको आव्यो तेहवें मासखमणनें पारणें विजयश्रेष्ठीइं कुरादिक विपुलभोजनें प्रतिलाभ्
ा देषी गोजननी लालचिं भगवंतसाथें शिष्य थइ रह्यो पछें बीजुं पारणुं नंदें पक्वान्नादिकें करी कराव्युं त्रीजुं पारणुं सुनंद
परमान्नादिकें कराव्युं चोथुं पारणुं कोल्लाक सन्निवेसें बहुल ब्राह्मणनें घरें कीधुं तेहवें श्रीवीरनें कराव्युं तेहवे पाप
नीमितें मस्तकें मुंडावी विरूप पहिरी पाविल थीने लोहीई ना हर्योदीक्षाम्य के नें हाइम कहीगोशालो सामुंविमसर्वा लागो
भगवंतसुव र्ण खल गामें जतां मार्गें कोइंक गोवाल खीर नीपजावता देषी गोशालें भगवंतनें कह्युं स्वामी इहां पुर
पाइं नइं जइइं तिवारें सिद्धार्थें कहिउं हंगो शाला एषीर उपात्रनो भाग स्ये पूर्वें गोशालें जइनें यत्न कराव्युं तो हांडी
भांगी तिवारें मंखलिपुत्रें कह्यं जे थानार होइं ते थाइं ए एहवी नियतपक्ष वगीर तिवारपछी स्वामी वें बि मासिन पूर्व
चपाइं वहमासि करता २ पछें पृष्ठ चंपाइं चउमासी तप चउमासुं करीसा वुछीइं आवी भगवंत कायोत्सर्गे रह्या तिहां सि
ंहीं धर्मि खिल भगतनें कह्युं आज तुम्हें मांसखाईस एहवुं वचन फोक करवा वणिग ने घरे निः सरण इं दिगं धाए हवे तिहां पिठर
[illegible]
साडा १३-२६

[illegible]

वाणियानी सार्थभृतवछाठे तेहनेतिमिजसर्वेक सुंदत्तुं जेबालिकनुमांसहक्षमांहिरांधीनिछक करेनेआप

ते जिमतारहेबालिकरुडीवसें तेस्त्रीइतिमज करावीरगोसालानेआपी गोसालइंनोजनकीधुं स्त्रीइंघरबार

सरापनइंरखे तइंकरखुं तिहांथीनगवंतपासेंआवीसिद्धार्थनइं गोसालेंकह्युं जंपरमानजिमो सिद्धार्थेंकह्युं

उमासजिमो पछेंगलुंमांहिआगुलीघालीन्नाहारपाडीवमी तेलेंमांसनाखंडदीठा पछेक्रोधपामीतेहनेंघरें

तेगयो घरलाधुंनही तिवारेंआरवीसेरीनेंसापदीधो जेमाहराधर्माचार्यनातपप्रभावथीएसरीबलियो इमते

सेरीबली ४ वलीतिहांथीविहारकरताभद्दिकाइंत्रउमासीतपइंकरी चोमासुंकरी तिवारपछीआलीआगाम

नेंउद्याननेंकाउसग्गइंरह्या तिहांघणावनमांहि त्रिपृष्टवासुदेवनेंनवेंअपमानीतास्त्री व्यंतरीथइछे तेणेंनगवंतनें

देषीक्रोधपामी तापसीनुरूपकरी माहमासनीताढिमांहि जलेंनरीजटाइंछांट्या नगवंतनेंशरीरआलीबनावी व्यं

तरीखवामेंगइ शीतवेदनासहतानगवंतनेंतिहांछठनेंतपेंतिहांलोकावधिज्ञानऊपनुं ५ छठुंचोमासुंभद्दिकाचोमासी

तपइंपर्णकरीविहारकरताइंवा ६ अनेजं[illegible]विकानगरीइंसातमुंचोमासुंकरी ७ आठमुंचोमासुंराज

गृहनगरीइंरह्या पछेंवज्रभूमिकाइंघणाउपसर्गजाणीनेनवमुंचोमासुंवीररह्या तिहांथीकुर्मग्रामेंजातांमार्गे

तिलनोछोडदेषीगोसालेंनगवंतनेंपूछ्युं एतिलनोछोडतेनीपजस्येंकेनही नीपजे नगवंतेंकह्युं एसात तिलफू

लनाजीवमरीनेंएकसिंगबनेंविषेतिलथास्यइं तेवचननिःफलकरवानेंतिलनोछोडऊषेडीनेंनाख्यो तेना

तेहवें तेस्थानिकाइंगायनाखुरइंरुंधाणो तिलसंबंधथिरथइपाछोऊग्यो नगवंततोकुमारग्रामेंपधार्या तिहांआ

तापनाग्रहवानेंमाकडजांमेंकोजटामांहिंघणीजूंदेषीगोसालें वैश्यायनतापसनीहासीकरी तुलोजूनोघरछो

तिवारेंक्रोधारुणथइ तेतापसइंतेजोलेश्यामूकी नगवंतेंदयाइंकरीशीतलेश्याइंतेजोलेश्यानिवारी पछेंनग

वंतपासें तेजोलेश्यानोविधिगोसालेंसांभल्यो तेकिमआपतापनालेइंछठछठतपकरीएकउडदपिंडएकचलुजलु

त्रमाणउस्पीरकंपारणुकरसो पुरुषनेइं छमासमांतेजोलेश्याऊपजे एसामास्पविधिधार नगवंतसा

[illegible]

घेसिद्धार्थपिरजाता गोसालेतिलस्तंबदषी तिलजांबाविहारीतिहांसातनीनुहीण तिवारेंदृढनिश्चयनवार

घसा अनुक्रमेनगवंतथीज्दाथइ तेजोलेश्यासाधीपार्श्वस्थशिष्यपासें अष्टांगनिमित्तसीषी आजीविकामतथ

[illegible] दृढपकरी

[illegible] दीक्षानते

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] विक्र

विविअग्निलगाडेअनपचावेंखनाषामुखनापरवेआविउंडा कानप्रमुखमांहिलाखासुंपवरावेंरपरबहु

डरेंकरीनगवंतनेंउचाटखाते [illegible] कालचक्रनापरलमाडइं २० सहस्त्रनारउपचक्रमेंकह्यातेणेंनगवंतदी

चणलगेधरतीमांपेठा २० पछेंअनेनवि क्रुहीसगमेंकरुह देखता देगोचरीइंजाउतिवारेंइनगवंतेंज्ञानेंकरीरा

त्रिजाणी २० पछेंदेवांगनानाघणप्रकारीउपसर्गकरें एवुएकरात्रिमांहिंवीसउपसर्गकीधा २० पछेंछमासलगें

शुद्धआहारनिवार्यो तोहिंनगवंतनेंनिश्चलजाणी सुराधमसंगमोषेदषिन्नथइदेवलोकेंगयोइंद्रपणि

हादीनविमणोथइरह्यो छेएहवेपापिष्टसंगमनें आवतोदेषीइंद्रिं तिरस्कारकीधो देवलोकथीबाहिरकाढ्यो

तेमेरुनीचूलाइंजइरह्यो नगवंतेंगाकलमांहिं वत्सपालीनामेंवृद्धस्त्रीइंपारणुंपरमान्नेंकराव्युंतिहांपंचदि

व्यप्रगट्यांतिहांथीविशालानगरीइं ११ चोमासुंरह्यासुसुमारगामेंगया तिहांचमरोत्पातथयोपछेंकौ

संदीइं ध्या तिहां शतानीक राजा मृगावती राणी परमश्राविका छें तिहां भगवंतें पोस वदि १ अभिग्रह कीधो
द्रव्यथी उडद ना बाकुला ते सूपना खूणा में होइ क्षेत्रथी एक पग उंबरमांहि १ पग बाहिर राषे कालथी भिक्षा
चर निवर्ते तिवारे भावथी राजपुत्री दासपणुं पामी माथे मुंडी पगे बेडी धरती आंषे आंसु मुकती अठम
नें तप सहित एहवी थकी जो भिक्षा दे तो पारणुं करवुं इम अभिग्रह करी श्रीवीर गोचरी इं नीसर्या मइ
तिहां मंत्रीस्वर प्रमुखे अनेक उपाय कर्या पिण अभिग्रह पूर्ण न थयो ते हवें शतानिकें चंपा नगरी भांजी दधिवाह
न नासो एहवे तेहनी स्त्री धारणी वसुमती पुत्री एबिहुं कोइकें सेवकनें हाथ आव्या धारणी घरेणां लीस एहवु ते
ह सु षेक हुंते वा तेमां तत्काल धारणी जीभ चांपी मरण पामी वसुमती को बीइं आणी वेचवा कोटें ह बे
ध नावाह सेठें वेचाती लेइ चंदना एहवुं नाम देइ पुत्रीपणें थापी एकदा सेठना पग पषालता चंदनानी वेणी

भूमि लोटती देषी सेठें उंची लीधी ते देषी मूलाइ मनमांहि चिंतवुं ए रूपवंत कन्या सेठ घरेस्त्री पणें राषस्यें मा
हे रूप टाली एहथी सिव विरकं करुं इम चिंतवी चंदनानें इम लोक मुंडी पगे बेडी पहेरावी घरमांहि गोनी ता
ली एहवे त्रीजे दिवसें ग्रामांतरथी सेठ आव्या पछी स्ववृत्तांत सांभली तालुं उघाडी ने अवस्था इं सहित च
दना प्रति कहे बेरंइ सुकोस्त्र प्रजानें स्थले उडदना बाकुला आपीने बेडी लेवा लोहार तेडवा सेठ गया
ते हवे चंदना इं चिंतवुं जे कोइक अतिथि अभ्यागतने आपीने षाउं इम विचारी वेठी छे तेहवे भगवंत पध्या
र्या चंदनापिण हर्षवंत थकी बाकुला देवा लागी भगवंत पिण अभिग्रह मध्ये रुदन उं ते देषी पाछा वल्या तिवा
रें चंदना दिलगीर थइ रोवा लागी भगवंतें इं पांच दिवस ऊणे छमासें तप नुं पारणुं कर्युं अनुक्रमें भगवंतें
चंपा नगरीइं बारमुं चोमासुं रह्या तिहां जिनीनी शालाइं कीधुं तिवारपछी विहरता भगवंत षमानिक गाम

मैं गया तिहां काउसग्गें रह्या छे तिहां एक गोवालिउ बलद रषी गाममांहि जइ पाछो आव्यो तिहां बलद
अणदेषी च्यार प्रहर लगें रात्रि गोवालियो बलद जोवा गयो पणि बलद तिहां नहीं प्रभाति भगवंत पासें
बलद ना देषी तेणें भगवंतना कानमांहि षीला घाल्या जिम कोइ देषे नहि तिम करया अग्रभाग कापी
ते पूर्व भवें त्रिपृष्ठ वासुदेव नें भवें शय्यापालक नें कानें तरूउं घाली उ पाप्युं ते इहां उदय आव्युं शय्यापालक
पिण अनेक भव भमीइं हांं गोप थयो तिहाथी भगवंत मध्यम अपापाइं आव्या तिहां वणिक नें घरे गोच
रीइं पहुता सिधा र्था नामें वाणियो तेहने घरे खरक वैद्यें भगवंत स्वामीनें देषीनें सपरिवारें वणिग साथें उद्यानमांहि
इं साणसें करी षीला काढ्या ते षीला काढ्या तेहनां भगवंतने अरराट शब्द करी मूर्छा पाम्या धरतीइं पर्युंपी
ठे बेंवाधया ते पीडा देषीने श्री कउद्यान नतये करघवुं मा टिंतिहां लेरवेना मा उद्यान कहिवाइं छइं पछे

वणसंरोहिणी औषधि इं कांनसमाधि कीधि अनुक्रमें वणिक वैद्य स्वर्गें गिया गोप सातमी नरकें गयो
गोपथी उपसर्ग मांड्या गोपसेंहीज थीया इम जघन्य मध्यम उत्कृष्ट उपसर्गनें विजय करतां श्री वीर विचरे छइं
इहां चरित्रानुसारें वर्धमान स्वामी चोमासानी संख्या कहि छइं १ अस्थिग्रामें पहिलुं चोमासुं रह्या
बीजुं चोमासुं नालिंदइं ३ त्रीजुं चोमासुं चंपाइं ३ चोथुं चोमासुं पृष्ठचंपाइं ४ पांचमुं भद्दिलपुरें ५ छठुं भद्रि
काइं ६ सातमुं आलंभिकाइं ७ आठमुं राजगृहे ८ नवमुं वज्रभूमिइं ९ दशमुं सावत्थीइं १० इग्यारमुं वि
शालाइं ११ बारमो चोमासुं चंपाइं १२ ॥ इति श्री उपसर्गाधिकार संपूर्णम् ॥ आगलि सूत्र कहिवें
तिवारपछी श्रमण भगवंत श्रीमहावीर तथी घर छोड्या ते ईर्यासुमति वालें भाषासमितें वालें बेंतालीस दोषरहित उपगर
तत्र आहार सहित पाडिहा
१८ तएणं समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए इरियासमीए भासासमीए एसणासमीए आय

ण भंडमत्तनिक्खेवणासमीए उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाणपारिठावणियासमीए मण
समीए वयसमीए कायसमीए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अकोहे अ
माणे अमाए अलोभे संते पसंते उवसंते परिनिव्वुडे अणासवे अममे अकिंचणे छिन्नगं
थे निरुवलेवे कंसपाईइव मुक्कतोए संखोइव निरंजणे जीवेइव अप्पडिहयगई गगणंइव
निरालंबणे वाउव्व अप्पडिबद्धे सारयसलिलंव सुद्धहियए पुक्खरपत्तंव निरुवलेवे कुम्मोइव गु
त्तिंदिए खग्गिविसाणंव एगजाए विहगईव विप्पमुक्के भारंडपक्खीव अप्पमत्ते कुंजरोइव सोंडि
रे वसहोइव जायथामे सीहोइव दुद्धरिसे मंदरोइव अप्पकंपे सागरोइव गंभीरे चंदोइव सोमले
से सूरोइव दित्ततेए जच्चकणगंव जायरूवे वसुंधराइव सव्वफासविसहे सुहुयहुयासणेइव तेय

६९

सा जलंते ॥ इमेसिए याणं छन्नि विसंग हणिगाहाउ ॥ २७ ॥ कंसे संखे जीवे गगणे वाउय सरयसलिले
य पुक्खरपत्ते कुम्मे विहगे खग्गेय भारंडे ॥ १ ॥ कुंजर वसहे सीहे नगराया चेव सागरमखोहे चं
दे सूरे कणगे वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥ २ ॥ नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ से य प
डिबंधे चउव्विहे पन्नत्ते तं जहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउ सच्चित्ताचित्तमीसएसु दव्वेसु
खित्तउ गामेवा नगरे अरन्नेवा खित्तेवा खलेवा घरेवा अंगणेवा नहेवा कालउ समएवा आ
वलियाएवा आणपाणुएवा थोवेवा खणेवा लवेवा मुहुत्तेवा अहोरत्तेवा पक्खेवा मासेवा उ
ऊवा अयणेवा संवच्छरेवा अन्नयरेवा दीहकालसंजोए भावउ कोहेवा माणेवा मायाएवा
लोभेवा भएवा हासेवा पिज्जेवा दोसेवा कलहेवा अब्भक्खाणेवा पेसुन्नेवा परपरिवा

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

वा अरईरइवा मायामोसेवा मिछादंसणसल्लेवा ११९ तस्सणं भगवंतस्स नो एयं भवइ १२१ सेणं
भगवंवासावासवज्जं अट्ठगिम्हहेमंतिए मासे गामे एगराइयं नगरे पंचराइयं वासीचंदणसमा
णकप्पे समतिणमणिलेट्ठुकंचणे समदुक्खसुहे इहलोगपरलोगअप्पडिबद्धे जीवियमरणे निरुवकं
खे संसारपारगामी कम्मसत्तुनिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए एवंचणं विहरइ १२२ तस्सणं भ
गवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणु
त्तरेणं विहारेणं अणुत्तरेणं वीरिएणं अणुत्तरेणं अज्जवेणं अणुत्तरेणं म
द्दवेणं अणुत्तरेणं लाघवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तराए गुत्तीए अणुत्त ७०
राए तुट्ठीए अणुत्तरेणं सच्चसंजमतवसुचरियसोवचियफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं

त्थावेमाणस्स दुवालससंवच्छराइं विइक्कंताइं तेरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं
दुच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे तस्सणं वइसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं पाईणगामिणीए छाया
ए पोरिसीए अभिनिविट्टाए पमाणपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं जंभियगामस्स नगरस्स
बहिया उज्जुवालियाए नईतीरे वेयावत्तस्स चेइयस्स अदूरसामंते सामागस्स गाहावइस्स क
ट्ठकरणंसि सालपायवस्स अहे गोदोहियाए उक्कुडुनिसिज्जाए आयावणाए आयावेमाणस्स छ
ट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणु
त्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ॥१२०॥ तो अधिकारली
खिइं खिइं ॥श्रीभगवंतनें जंभिका नगरी बाहिरि केवलज्ञान उपनापछी देवताइं समवसरणनी रचना कीधी तिहां ला
भ विरति नपखेर काण अण जं तेतांणी भगवंतें आचार भणी लगारेक देसना दीधी तिवारपछी देवताइं सुवर्णकमल रच
नें तिहां पग धापीनें अपापा महानगरी नें विषे महसेनवननें मांमी समोसर्या तिहां सोमिलनामें ब्राह्मण यज्ञकरवानें अ

नेविप्रमाणमाण उपन्नेजिणवराण इवकं वीरस्सयपढिमेज पमाणपन्नायचरिमाए १ उमेन सम्पइदिमाले वीरस्सगणहरालीयावीर

थई इग्यारगणधर ब्राह्मण मुख्य तेम्हां छे तेहनां नाम इंद्रभूति १ अग्निभूति २ वायुभूति ३ व्यक्त ४ सुधर्मा ५ मंडित ६ मोर्यपुत्र ७ अकंपित
८ अचलभ्राता ९ मेतार्य १० प्रभास ११ ए इग्यारनें संदेह छे। पहिलाने जीवनो संदेह १ बीजाने कर्मनो संदेह २ त्रीजाने जीव शरीर ए
क अर्थ छे ३ चोथाने पंचभूतनो संदेह ४ पांचमानें जेजेहवा छइं तेतेहवा थाइं मनुष्य मरी मनुष्य थाइं स्वान मरी स्वान थाइं ५
छठाने बंधमोक्ष छे के अथवा नथी ६ सातमाने देवता छे के नथी ७ आठमाने नारकी ८ नवमाने पुण्य ९ दसमानें परलोक १० इ
ग्यारमाने मोक्ष छे के नथी ११ एहवो संदेह। एहनो परिवार पहिला त्रणनो पांचसेनो परिवार पहिला पांचने ए परिवार छठा ७ माने
अठसेनो परिवार आठमा नवमानें दसमा इग्यारमाने त्रणसेनो परिवार एवं ४४०० मई बीजा घणा ब्राह्मण मिल्या
छइं यागने अर्थि एहवे भगवंतना समोसरणनी देवदुंदुभि सांभली ब्राह्मण मनमां ष्याल्या ए यागनी आकृति कोह बीजे द
वता हुता आव्या देवदुंदुभि वाइ बे एहवे कोई इंके स्यूं जे ताई तं कोई सांभल्यूं ए देवदुंदुभि सर्वज्ञ वीतराग आव्या छे तिहां
देवसदुंभने देवदुंदुभि वाजे बे अने देव सर्व जाइ छे समवसरणें इहां आवता नथी ए वात सांभली मनि गर्वथिणो धरता हव
एहवे अभिमान धरतो इंद्रभूति चिंतवे जे सर्वज्ञ कुंण छइ हां बीजो सर्वज्ञपणुं किम कहवरावे ए वचन कानने कठु लागे ए
णे धूर्त धूर्तता स्यादीसे छे जेमाटि यज्ञनि अनि मुकने मुकी ते ए सर्वज्ञ पासें जाइ छे एहनो सर्वज्ञपणुं न सम्मु आकाशनि विषे जि
म सूर्य एक षेत्रे साथें कोनहीं एक गुफाइं जिम बे सीह न होइं एक म्यानमांहिं जिम बे तरवार न रहे तिम बे सर्वज्ञ इ
हां न रहें एहवें भगवंतनि वांदीनि आवता लोकनें हासीइं पूछिइं इंद्रभूतिइं छ तो हवो लोको का छ सर्वज्ञ दीठो ते सर्वज्ञ के
हवो छे केहवु स्वरूप छे तिहारें लोके कह्यूं यदि त्रिलोकीगणना परा स्यात् तस्याः समाप्तिर्यदि नो युषः स्यात् पारे परार्द्धं
गणितं यदि स्यात् गणेयनिःशेषगुणोपि स स्यात् १ एहवां लोकनां वचन सांभली इंद्रभूति चिंतवे छे निश्चे ए सर्वज्ञ महाधूर्त दीसे
छे एणें सर्वलोक विस्मय माहि पाड्या माटे जिम सूर्य अंधकार टालवाने पंक पेनहीं तिम ए हने षमु नहीं इं पिण गाम
इनापंडित मुक आगल हरिण या गुजरातना पंडित श्रम पाम तां हवा मालवाना पंडित मुंगा थया तिलिंग देशना पंडि
ते तिलमां न थया माटे इहां बीजो कोइ सुकू उपशांत सर्वज्ञनहीं हवणां ताए सर्वज्ञपणु धरावे छे माटे जइ नइ एहनुं सर्वज्ञपणुं
मुकावु बीतुं माहरा तागपनी मेजे ए वादी आव्यो हवे जीलनें कोट कि आजटा लीसें नेमाटि लक्ष्मण शास्त्र नि विषमुक

यमवणति कडिन लवित विप्रय एण प्रलाप मान मकंड मिवल मंदमरा मीमम संस्त्रा मामली मदो फल प्रातनी प्रक्क मलयागरी मंदर षवध्माण भाव स्थल
वर अंगीर अरहमा आतल आभरी इलाम श्रीकोल आणचिढ अषाढ मार वपर यतक बीजोरा बैकुल इमाल साल नकलोल

अथश्रीमहावली सरस्वतीकंठाभरण वादीविजयलक्ष्मीशरण वादीमदगंजण वादीमुखभंजन वादीराजसिंह वादीश्वर लीह वादीसिंह अष्टापद वादीविजय

नेद कुणपणु वं साहित्यशास्त्र संहितानी परिमति वं तर्कशास्त्र कर्कशमति छे एहवु कोण शास्त्र वे जिहां मे अभ्यास नथी क
र्यो जिम चंद्रने काइ अनेद्यन थी जिम सोटा ने असाध्य काइ नथी जिम तृष्णाने अपायवस्तु काइ नहीं इं जिम खलने कांइ
अवाच्य नथी तिम माहरे ए अजेय नहीं इम चिंतवी पांचसें छात्र परिवर्या इंद्रभूति भगवंत पासि आवी समवसरणें नें प
गथीइ रही विचार ना हवा ए स्वयंभू ना कि वा महादेव कि वा ब्रह्मा कि वा सूर्य इत्यादि तेहवे भगवंतें कह्यूं हे गौतम आवे इम
ने नाम लैने बोलाव्यो मधुर वाणीइं इंद्रभूतिनें नाम गोत्र सहित सुखशता पूछि भगवंतें बोलाव्या तिवारें वली अहं
कारमांहिं चढ्यो इंद्रभूति चिंतवे बोलाव्यो एनो माहरू नाम गोत्र प्रसिद्ध जाणे तोही संदेह छे अथवा माहरू नाम जगमे विष्यात को
ए न जाणे पिण्य माहरा मननो संदेह कहे तो साचो सर्वज्ञ तिवारे भगवंते कहिउं अरे इंद्रभूति स्यूं तुझनें जीवने विषे निश्च
नित्यपणानो संदेह छे ते वेदना पदनो विचार जोतें किम विज्ञानघन एवेतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति न
प्रेत्य संज्ञा अस्ति इहां एवेद वाक्यनो अर्थ तुं एहवो करे छे विज्ञानघन कहेतां गमन आगमनादिक चेष्टाव
त आत्मा संसारी जीव एतेभ्यो भूतेभ्यः कहितां ए पृथ्वी अप तेउ वाउ आकाश रूप भूत थकी समुत्थाय कहितां मद्यांग
थी मदशक्ति नीपजे प्रगट थइने तान्येवानु कहितां तेहज भूतमांहि तं अनुविनश्यति कहितां जलपपोटानी परि विनाश पामे
ते माटे भूत थकी अलगो आत्मा नथी तथा न प्रेत्य संज्ञास्ति कहेतां मरीने वली अवतार जन्म छे नहीं ए अर्थ इहां घटे नहीं
हवे हे गौतम जे ए वेदवाक्यनो अर्थ कहूं ते तुं सांभलि विज्ञानघन कहितां प्रतिप्रदेशे अनंत ज्ञानपर्याय तन्मय आ
त्मा एतेभ्यो भूतेभ्यः आवणनि अनुरोधि ए घटादिक पदार्थ मांहि संनिकर्ष पामीने तेने उपयोग रूपें समुत्थाय कहितां प्रगट
थइने तान्येवानुविनश्यति कहितां ते घटादिक पदार्थ नष्ट थये ते उपयोग रूप नाश पामे अन्य उपयोगपणे करी अथवा सा
मान्य रूपें रहे पिण न प्रेत्य संज्ञास्ति कहितां वली घटादिक उपयोग संज्ञा रहे एतले पर्यायथी जीव अनित्य छे हवे वेदवाक्य
नी आविं नित्य जीव कहिइं छइ ददद कहिइं दमो दानं दया ए त्रिण्य प्रकार जे जाणे ते जीव कहिइ अने शरीरने अजीव कहीइं
ते माटिं जिम दूधमां हिं घी तिलमांहिं तेल काष्ठमांहिं अग्नि तिम शरीरथी जूदो नित्य आत्मा छे इत्यादिक भगवंतना वचन सांभ
ली जीवना संदेहनो भंग थयो ते पांचसें छात्र सहित गौतमें दीक्षा लीधी पछे भगवंतें त्रिपदी उपनेइ वा विगमेइ वा धुवेइ वा ए त्रिपदी पामीने

त्रिपदी लहीने १ द्वादशांगीनी रचना करी वीरें ए द्वादशांगीनी रचना करी ...

हादशागीरचीइति प्रथमगणधरथापना॥ इमवीजोनाई अग्निभूति आव्यो भगवंतेंक हैं उक्तनें वेदवाक्य उपरि कर्मनो
संदेह छे पुरुष एवेदं ग्निं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यं इत्यादि श्रीइति वाक्या तेकारें जे अतीतकालनेविषे हूवुं तेक० थयुं जे हुस्ये
ते कु० जे भावीकालनेविषे थास्ये ते सर्वक० ते सर्व इदं पुरुष एकक० आत्मा ने एव नि० इहां निश्चें कर्म ईश्वरादिकनो निषेध
जाणवो एवचनेंने मनुष्य देवता तिर्यंच पर्वत पृथ्वी प्रमुख वस्तु दीसेछे ते सर्व आत्मा ज माटे कर्मन थी ए अर्थ उक्त करे छे ते योग्य न
थी एपद पुरुषनी स्तुतिरूप छे जिम जले विष्णुः स्थले विष्णुः विष्णुः पर्वतमस्तके सर्वभूतमयो विष्णुः तस्मात् विष्णुमयं जगत्॥
एवचनें करी पुरुषनो महिमा कह्यो तिम इहां पुरुषनो महिमा जाणवो इम न होइ तो एक सुखी एक दुःखी एक स्वामी सेवक एवमादि
विचित्र व्यवहार घटे नही एवचन सांभली प्रतिबोध पाम्यो पांचसें साथें अग्निभूतिं दीक्षा लीधी ए बीजो गणधर ३ त्रीजो वायुभू
ति भगवंत पासें आव्यो भगवंतें बोलाव्यो हे वायुभूति उक्तनें शरीर तेहज जीव के भिन्न एहवो संदेह छे माटे जे वेदना
पद विचारतो सविज्ञानघन एपदनो अर्थ किस्यो छे ते अर्थ करी आत्मा शरीरथी जुदो छे एवुं सांभली प्रतिबोध पामी
वायुभूतिइं दीक्षा लीधी ए त्रीजो गणधर ४ चोथा व्यक्तनें पंचभूतनो संदेह छे यतः स्वप्नोपमं वै सकलं इत्येष
ब्रह्मविधिरंजसा विज्ञेय इति किं करे तो निश्चें सकल ते क० पृथिव्यादिक स्वप्नोपमं क० स्वप्नसरिखुं अलीक कह्यं एवेदवच
नें पंचभूत नथी एवुं पोतें थयुं यतः एवाक्य आत्मा दिशाइं धनादिक पाठ हतो अनित्यना सूचक वेदपण छे तस्मात् अनि
क नथी माटे वचन इति बोध्यो गणधर ५ पांचमा सुधर्माने संदेह छे पुरुषमरी पुरुष थाइ पशुमरी पशु थाइ यतः वेदमांहि
कह्युं छे पुरुषो वै पुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्वं इत्यादि अर्थ मुहें हनहीं तो कारणें काइक पुरुष पापादिक गुणें पुरुषनें आउखो
धी मरी पुरुष थाइ पिण सर्व पुरुष पुरुष न थाई इम न कहेतुं इम सांभली प्रतिबोध पाम्या ए पांचमा गणधर ६ छठा मंडितनें बंधनो सं
देह छे ते वेदमांहि कह्युं छे स एष विगुणो विभुर्न बध्यते संसरति वा मुच्यते मोचयति वा इति एजीव विगुणक० सत्वादिक गुण
रहित विभुक० सर्वव्यापी न बध्यते क० पुण्यपाप बंधातो नथी संसरतिक० संसारमां हिंडतो नथी मोचयति क० कर्म थी
मुकातो नथी अनेपरनें मुंकावतो पिण नथी माटे अरूपी जीवनें द्रव्यकर्मनो बंध नथी तिवारें भगवंत बोल्या हे मंडित इहां ७२
अनेकांत अर्थ घटे छे ते किम विगुणक० छद्मस्तने गुण रहित विभुक० केवलज्ञानरूपें सर्वव्यापी एहवो एजीव पु

ण्यपापें नथी बंधातो ए निश्चय व्याख्यान जाणवुं व्यवहारथी आत्मा द्रव्यकर्में बंधाइ छे इम निश्चय व्यवहारें अनेकांत उपदेश सांभली
मंडित प्रतिबोध पाम्या ए छठो गणधर ७ देवता छे के नथी एहवो संदेह छे मौर्यपुत्रनें भगवंतें वेदपद कह्यो को जानाति मायोपमान्
गीर्वाणान् इंद्र यम वरुण कुबेरादीन् इहां मायोपमान् कहि तो व्यक्ति देवताइं पिण अनित्यछे सामान्यपणें तो देवता छे ए माटे
देवतानो संदेह टल्यो ए सातमो गणधर ८ आठमा अकंपितनें नारकी के नथी एहवो संदेह छे तेउपरि भगवंतें वेदपद कह्या नहवै प्रेत्य
नारके नारकाः संति इहां मेरुपर्वतनी परि परलोकें कोइ नारकी नित्य शाश्वता नथी जे पापकरें ते नारकी थाइ माटे नारकी
नो संदेह टाल्यो आठमो गणधर ९ नवमा अचलभ्राताने पुरुष एवेदं ग्निं एवाक्य जे श्रीवीर पासें संदेह टाली दीक्षा लीधी ए
नवमो गणधर १० दशमा मेतार्य विज्ञानघन एवाक्यें परभवनो संदेह टाली श्रीवीरें दीक्षा दीधी ए दशमो गणधर ११ इग्यारमो प्र
भासनें मोक्षनो संदेह जरामर्यं वा यदग्निहोत्रं ए पद सर्वदा स्वर्गार्थी अग्निहोत्र करें तो अर्थी अग्निहोत्र तो मोक्षसाधक
क्रिया करें माटे मोक्ष नथी इम प्रतिबोधी श्रीवीरें दीक्षा दीधी ए अग्यारमो गणधर त्रिपदी लेइ द्वादशांगी रची गणधरपदनी थापना
श्रीवीरें करी तेहनो महोत्सव इंद्रें कीधो इम अनुक्रमें संघथापना जाणवी॥ श्रीगणधरवाद संपूर्णम्॥ श्री : ॥ :

तिवारपछी श्रमण भगवंत श्रीमहावीर नइं — अरिहंतपणुं थयुं रागादि जीत्या केवल संपूर्णज्ञान — तत्कालना सर्वज्ञ सर्वदर्शी — सहित देवता मनुष्य असुर
तएणं समणे भगवं महावीरे अरहा जाए जिणे केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुयासुरस्स
लोगस्स परियायं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं मणो माणसियं
भुत्तं कडं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणवयकायजोगे व

इमाएणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ २४ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे
भगवं महावीरे अट्ठिअग्गामं नीसाए पढमं अंतरावासं वासावासं उवागए चंपं च पिट्ठिचंपं च नीसाए तओ अं
णयरवालि यग्गामवाणि माणइवाल ३३ तरावासे वासावासं उवागए वेसालिं नगरिं वाणियगामं च नीसाए दुवालस अंतरावासे वासावासं उवागए रायगिहं नगरं नालंदं च बाहि
रियं नीसाए चोद्दस अंतरावासे वासावासं उवागए छ मिहिलाए दो भद्दियाए एगं आलंभियाए एगं सा
वत्थीए एगं पणियभूमीए एगं पावाए मज्झिमाए हत्थिपालस्स रन्नो रज्जुसभाए अपच्छिमं अंतरावासं
वासावासं उवागए तत्थ णं जे से पावाए मज्झिमाए हत्थिपालस्स रन्नो रज्जुसभाए अपच्छिमं अं

७३

तरावासं वासावासं उवागए १२६ तस्स णं अंतरावासस्स जे से वासाणं चउत्थे मासे सत्तमे पक्खे क
त्तियबहुले तस्स णं कत्तियबहुलस्स पन्नरसी पक्खे णं जा सा चरमा रयणी तं रयणिं च णं सम
णे भगवं महावीरे कालगए विइक्कंते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतग
डे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे चंदे नामं से दुच्चे संवच्छरे पीइवद्धणे मासे नंदिवद्धणे पक्खे अ
ग्गिवेसे नामं से उवसमे संवच्छरे पीइवद्धणे मासे नंदिवद्धणे पक्खे अग्गिवेसे नामं से दिवसे
उवसमित्ति पवुच्चइ देवाणंदा नामं सा रयणी निरतित्ति पवुच्चइ अच्चे लवे मुहुत्ते पाणुथे

चंद्रमानोयोगआवे कायस्थितिनवस्थिति

वेसिद्धे नागकरणे सव्वट्ठसिद्धे मुहुत्ते साइणा नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं कालगए वइक्कं

ना कालधर्म को विनिक्रम्या ॥ १२३ जे रात्रि श्रमण भगवंत श्रीमहावीर

ते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे १२३ जंरयणिं च णं समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सव्वदुक्खप्प

तेणीरात्रि घणादेवता आवता आवता रगमना मनुष्य

हीणे सारयणी बहूहिं देवेहिं देवीहि य उवय

ईहां स्वरूप लखिउ पांचमे अनुसारे संवत्सर मास रात्रि दिवस ना नाम लखीई छइं एक युगनइ विषे पांच संवत्सर ना नाम चंद्र १ चंद्र अभिवर्द्धित

द्वे मास ना नाम अभिनंदन १ सुप्रतिष्ठ २ विजय ३ प्रीतिवर्द्धन ४ श्रेयान् ५ शिशिर ६ शोभन ७ हैमवान् ८ वसंत ९ कुसुमसंभव १० निदाघ ११ वनविरोधी १२ श्रावण...

[illegible]

७४

ञमाणेहिं उप्पयमाणेहि य उज्जोविआ आविहुत्था १२४ जंरयणिं च णं समणे भ

गवंमहावीरे जावसव्वदुक्खप्पहीणे सारयणी बहूहिं देवेहिं देवीहि उवय उप्प

य उप्पिंजलमाणभूयाकहकहगभूया॥ आविहुत्था १२५ जंरयणिं च णं समणे भ

गवंमहावीरे कालगए जावसव्वदुक्खप्पहीणे तंरयणिं च णं जिट्ठ

स्स गोयमस्स इंदभूइस्स अणगारस्स अंतेवासिस्स नायए पिज्जबंधणे वुच्छिन्ने अ

णंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने १२६ जंरयणिं च णं समणे

॥र्दय॥गौतमस्य प्रतिरूपमो पमुपदर्शयितुमाह॥ रत्नत्रयस्य वधिरमनः वल्लज्ञानविनामय

नागपत्तनाणगति प्रथमसंघयणधारी प्रथमसंस्थानवंत बहुतप धारक तेजोलेश्या शीतलेश्यावंत आमोषधिविवि। पर्यायिधपज्ञानधर द्वादशांगीकारक असंख्यात। गुणसमूह: एकदा श्रीवीरदेशनायां प्रबुद्ध छह

कारक क्षमा आर्जव मार्दव। लोभधीलच्छिसहित मति नवमूल्यपकवक कि चमानगरीस्वामी

महावीर कालगते: स्कंधाय मुक्तस्तगवंतजी तेणीरात्रिइंवली नवमल्लिकजातिनाराजा नवलेच्छिकजातिनाराजा कासीदेशाधिपमल्लिकाः कोसल

जाव सव्वदुक्खप्पहीणे तं रयणिं च णं नवमल्लई नवलेच्छई कासीकोसलगा

देशाधिपमल्लिकिना अठारदेशनामिका तिपकवा मिलजीते गणराज शब्द इसमारनवदेसहतपाराभोगकहीइ अघवापारकहइ छता। रत्नादूसूकातेह चउदयामउस्सहितउपवासकरनाइवा। वलीकेना।

राजाकहीइ अठारराजा पोसहवतधरनावपञ्चमावास्यानइदिनिपा चहपालगइ आनोग विस्तारइ बझडइत पारानोग आवम्ह लोपककहइ वारानोगात इछउ अर्थ आनोग जोईइनेवाराभोग

अट्ठारस वि गणरायाणो अमा वासाए पाराभोयं पोसहोववासं

पहलइदीवानेह प्रतिकरनाइवा पोसहकहइतो आहारवाड॥ पनावरउद्योतपदीप्तकरवउरुद्रव्य उद्योतकहीयइ॥ मइवाउ।

बाहूनगड्युनावउद्योत ज्ञानरूपदीवउभगवंत उज्ञानरूपदीवउपनावउद्योतजातिवउ ७५ ईणीरात्रिइं

पट्ठविंसु गए से भावुज्जोए दव्वुज्जोयं करिस्सामो। ७५ जं रयणिं ७५

मातअनंतइमहामातआप सप्पा श्रावीरनइ छूटी॥ जलीआयणासुजनइ

णीनगिनीकापिल्पस्य स्वामी आपणांगेलसुजनइराज गौतमस्वामि प्रतिबोधानेलेराजकउइछ तिहां राजादेइ मातापितासहित बाहिरलीधु श्री॥

ईंदीज्ञानलीधी एकादशांगी सूत्रता गणितेडूधमस वीरसदवानइगौतम

माधिइजाता मार्गिइ केवलज्ञानऋपद्ध यशोमती पटराणी गांगिलनी भावनाइ गौतमइचीनविउ मइप्रतिबोधीसुजनइन बीकेवल एहनउमहाना। पाणइनइजपन एहवउस्समतायधराचीनविउ आणइ नविसुजनइकेवलमांझ नहीकइ एहवइदेव॥ ता नासुपधी श्रावीरनउकहिउमानलिउ श्रीगौतम इ डे आपणीलब्धिआस्रष्टा पदतीर्थवादइ तात ण इ नविसिध्यामइ निकारपवी श्रीवीरसूबात्र हा प दतीर्थयात्राइ आवइ सूर्यना किरणअवलंबी अ रयपदतांचिवइआ तिहांदक्षिणदिशिबारणइ ध्वजि व पश्चिमद्वारि चिहुंबिंब उत्त रिधबिंब पूर्वद्वारिइबिंब इ। मध्यऋषभेइ तीर्थंकर। प्रतिमानमस्कारी सुडा। काध्ययनिवयस्वामितज नपतिर्यकजंभकदेवनाप्रतिबोधी अष्टापदथाका। तरता कोडिन्नदिन्नसेवालत्रण त्रिणि अष्टापदतीर

समण भगवंत श्रीमहावीर॥ जाव दुक्खइ कीधु तेणीरात्रिइंव

णं समणे भगवं महावीरे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे तं रयणिं

त्रिजुमेपलाणरहियावइ तपवउवाइवच्चरअक्षमउ। पारणइसविनकदमूलरसूकाफलपत्रइसूझमेवा। खइ इमत्रिजुंनइतपपारणां एकेकानइपपपतायमवाया। रवार तिहश्रीगौतमस्वामिआपणीलब्धिइअक्षयतादि धीइयपास्या गौतमवाक्या॥ गौतमवंचाप्रतिबोधपास्या श्रीवीरवादवा गौतमसमघा। तिजाता मार्गिआहारवला इगौतमिइबिंविपारण। उ कइ तापसकहिउ रुवकतमाण मानसाहइगा त मइस्वहिउ तापसपरमा नकहिउ गाममाहिका ई प रमान्नविहिरीआव्या एकपडघुअइतोणस ण मी लब्धिइसकहनइ उइ उपावसइएकतइगौतम उ णवातवताकेवलज्ञानऊपनउ पांचसइएकतीवर न श्रीवारनइवादवाजा ताकिवलऋपनउ पइरनइ। भगवंतनउसमोसरणादिखाकेवलज्ञानऊपनउ पनरसइइत्रि। डीनरइस्वइदेखीणादेइ कि वलीमनाइसुहता गौतमकहइ पाकेवलीमनाइवांद्रवस्वामिजाउ श्रीवीरइकहिउउकेवलीनी आशातनामकरि ति

कारकं गौतमपेधध्रवालागा अनवंतश्रामदिक हेगौतम त्वंश्राईनेटिमिरिसाघडूमि श्रीवीरनिर्वाणसमयश्रापणत्वंदकस्तुंज्ञाणी दे
वश्रार्माश्रास्त्रणप्रतिबोधवागो तमामोकल्या तिहनाबामीतिह्यावाभूरहिया तिणाकरा। त्रिशदेवतानीगमनागमनवी
श्रीवीरनवनिर्वाणज्ञाणी॥ व ज्ञाहतघया श्रीगोतमस्कणाकशून्यविश्नहवा का। ह हवालागा हवहूमिथ्या
वस्तुपश्रवकारसमस्त श्रि ती संघुकमसरिया कुनिक्कडमरस्कपावारखग। ट घ या श्रीवीरस्वरूपस्वयं
श्राघिमिकमघरूपकमल व नमाकोयाणु श्रमतरूपतारावल्लभ्यो वकेराक्षेय मि डुंगागतडिमज्ञाणतारिह
तकुंड तिमश्रीवीरज्ञातकुल। रताज्ञानारहितहवस॥ श्राजसर्वसघश्रनाघघ। सुएहवयंकहहताऽःख
धरवालागा श्रारवीरतडूस्तुकीधु डिणपीनवलाडु। ज्ञानकीधउ क्षिम्फश्राहुमाडीबालकनीय

लीलक्रमस्वनावीकुप्रत्यंत नम्मराशिपणहनामिक्रमोटवय हश्रीसमुत्र्यवकसमग्रह मिमहमहतबोपकहरतशिरस्कपहवामि

णंवणं खुद्दाएभासरासीनामं महग्गहे दोवाससहस्सवि

रिविलगत श्रघवा क्रिमफंमाहरुणपमनुहरूपरि। कारिसुहरु कहरश्रागलिकहार वारयघरबार
लागी हामहीजाणिश्रु जिवातरागगतत्वरहकुडु माहसा। श्रुद्गमणजिमरुश्रातापतदायागतदाधु जिहरतणीम
गवंतहनास्तुबद्धपणाहना आमाकोई पमूधीश्रतित्पमतावनासावतापनघानाक मंक्षयकरीकेवलज्ञानक
पाया श्रीगौतमहेजिह न णीलास्तुबद्ध मुरकमगापवनाए मिणाह्लावजा मे खवा वीरज्ञावतपज्ञा
नु गाघामाज्ञानक व जी ॥२४॥१४॥ मोक्षमार्गप्रपन्नजीवतद्भूत्वह ते व ज्ञमयमाकालज्ञाण
वी जिहतणीश्रावीरज्ञ १ वतागौतमनइकेवलज्ञानजपनउ कार्तिकशुदि१ दि निहिवसीदयावजाइ
केवलश्रीगौतमपाम्या दि वतापउश्रवकीधु तेश्रीगौतमगुरुवामिवरमयपवित्र। मरुपवलसूपणह २४वर
साकेवलीपणहप्पयवरसमर्वश्रायुपालीमोक्षिपहुता॥ इतिश्रीगौतमस्वामिसंबंधः संपूर्णः॥ श्रीवीरनिर्वाणसमय। ९६

णं समणे भगवं महावीरे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे तं रयणिं च णं खुद्दाए भास
तिजेरत्नीतेश्रीमहावीरनेजन्मनक्षत्रइजन्म
राशिसंक्रमित्र श्रावित्र
रासीनाम महग्गहे दोवाससहस्सट्ठिई समणस्स भगवओ महावीरस्स जम्मनक्खत्तं स
३२ जेदिवसथकीतेवली तेक्षुद्रस्वनावीभस्मराशिमाटउग्रह बिहजारवरसनीस्थिति श्रमणभगवंतश्री
कंते ३२ जप्पभिइं च णं से खुद्दाए भासरासी महग्गहे दोवाससहस्सठिई समणस्स भग
महावीरनइ राशिते जन्मनक्षत्र संक्रमित्र ३३ तेदिवसथकीतेवली श्रमणयतीने निग्रंथनइ निग्रंथीसाध्वीनइ
वओ महावीरस्स जाव जम्मनक्खत्तं संकंते ३३ तप्पभिइं च णं समणाणं निग्गंथाणं निग्गंथी
नहीउदयउदयपूजाश्राहारसत्कारादिहोनतहीप्रवर्त्तइ ३४ जिवारइतेक्षुद्रकरतो श्रालावुंताजन्मनक्षत्रथकी
णय नो उदिए उदिए पूयासक्कारे पवत्तई ॥३४॥ जयाणं से खुद्दाए जाव जम्मन॥

ते व्यतिक्रमइं कतरस्यइं तिहां श्रमण यती निर्ग्रंथ साधुनइं निर्ग्रंथी साध्वीनइं उदयरता

एकत्ताउ विइक्कंताउ लविस्सइ तयाणं समणाणं निग्गंथाणं निग्गंथीण य उदए ह

त्कारकस्यइं ३५ जेणी रात्रिं वली श्रमण भगवंत श्री महावीरनीवी कालथया तेजा मध्ये जाइइ

यासक्कारे लविस्सइ ३५ जं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सव्वदु

एकतउ दुःखहवो तेणी रात्रइं वली कुंथुया जीव नाना सूक्ष्म उधरी न सकीइं एहवा ऊपना जे हालइं रह्याने कुंथुआ आला हालता

क्खप्पहीणे तं रयणिं च णं कुंथु अणुद्धरी नामं समुप्पन्ना जा ठिया अचलमाणा छउ

साधुसाध्वीनइं निर्ग्रंथ निर्ग्रंथीने नयनु लोचन नेगोचरइ जातो नथा फरतो ३६ तेजीवदेखीअणसणकीधां कोईकइं नावेएहवासूक्ष्म घणानइं

मत्थाणं निग्गंथाणं निग्गंथीण य नो चक्खुफासं हव्वमागच्छइ ३६ जं पासित्ता बहू

घणा निर्ग्रंथ अनेघणी निर्ग्रंथी सातअन्नपाणी पञ्चख्या तेस्यामाटेगुरु कहोलइ श्रीजाणवीसंयमपालिवु

हिं निग्गंथेहिं निग्गंथीहि य भत्ताइं पच्चक्खाइं से किमाहु भंते अज्जप्पभिइं संजमे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दुःखइं आराधतुं हस्यइं ३७ तेणइं कालइं तेणइं समयइं श्रमण भगवंत श्री महावीरनइं इंद्रभूति

दुराराहे लविस्सइ ३७ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स इंदभू

श्री गौतमप्रमुख गणधर चौद श्रमण सहस्र उत्कृष्टी श्रमणनी संपदा हवी ३८ श्रमण भगवंत श्री महावीरनइं

इपामुक्खाणं चोद्दससमणसाहस्सीउ उक्कोसिया समणसंपया हुत्था ३८ समणस्स णं अ

आर्य चंदना साध्वी प्रमुख छत्रीस सहस्र आर्जिका साध्वीनी संपदा हवी उत्कृष्टी साध्वीनी संपदा हवी

ज्जचंदणपामुक्खाउ छत्तीसं अज्जियासाहस्सीउ उक्कोसिया अज्जियासंपया हुत्था स

श्रमण भगवंत श्री महावीरनै शंखशतक प्रमुख श्रमणना उपासक श्रावक एक लाख ओगणसाठ हजार

मणस्स णं संखसयगपामुक्खाउ समणोवासगाणं एगा सयसाहस्सी अउणट्ठिं च

उत्कृष्टी श्रमणोपासक श्रावकनी संपदा हवी ४० श्रमण भगवंत श्री महावीरनै सुलसा रेवती प्रमुख

सहस्सा उक्कोसिया समणोवासगाणं संपया हुत्था ३९ समणस्स णं सुलसा रेवइ प

श्रमणोपासिका त्रिणलाष अनइ अटारसहस्र उत्कृष्टी श्रावि

मुस्काणं समणोवासियाणं तिन्निवाससहस्सीउ अट्ठारससहस्सा उक्कोसियासम

कानी ऋद्धिसंपदा हुवी ४१ श्रमणभगवंतश्री महावीरनइ त्रिणसइ चउद पूर्वध

णोवासियाणं संपयाहुत्था ४१ समणस्स भगवउ महावीरस्स तिन्निसया चउदसपु

रीहूआ केवलीनहिं पण केवलीसरिखा सघला अक्षरनेहूनी संजोजना केवलीनीपरइ साचा अर्थनाकहण करइ

व्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्निवाईणं जिणोविव अवितहं वागर

हार एहवी उत्कृष्टी चउदपूर्वधारीनी संपदा हुवी ४२ श्रमणभगवंतश्री महावीरनइ तेर अवधिज्ञानी

माणाणं उक्कोसिया चउदसपुव्वीणं संपयाहुत्था ४२ समणस्स० तेरससया ओहिना ७८

नी अतिशयवंत उत्कृष्टी अवधिज्ञानीनी संपदा हुवी ४३ समण० भगवंत सातसे श्रीमहावीरनइ

णीणं अइसेसपत्ताणं उक्कोसिया ओहीनाणीणं संपयाहुत्था ४३ समणस्स० सत्त

केवलज्ञानी साधु पणि केहवा संभिन्न कहितां सिद्धसेन दिवाकरनइ मति मालोमांहिं मिल्या एक समइ ज्ञानदर्शन धरइ एहवा उत्कृष्टी केवलज्ञानी साधुनी संपदा

सयाकेवलनाणीणं संभिन्नवरनाणदंसणधराणं उक्कोसियाकेवलनाणीणंसंप

हुवी श्रमणभगवंतश्रीमहावीरनइ सातसइ वैक्रियलब्धिवंत देवता नहीं पणि देवतानी ऋद्धि विकुर्वइ एहवी उत्कृष्टी, वैक्रिय

याहुत्था समणस्स० सत्तसया वेउव्वीणं अदेवाणं देवड्ढिपत्ताणं उक्कोसियावे

लब्धिवंत साधुनी संपदा हुवी ४४ श्रीवीरनइ पांचसइ विपुलमति मनःपर्यवधारक अढीद्वीपनइ विषइ बिस

उव्वीणं संपयाहुत्था ४४ समणस्स० पं चसया विउलमईणं अड्ढाइज्जेसु दी

मुद्रनइ विषइ तेहमांहिं जे जीव छइ वर्तइ संज्ञीया पंचेंद्रिया पर्याप्ता मनोगत भावप्रतइ

वेसु दोसु य समुद्देसु सन्नीणं पंचिं दियाणं पज्जत्तगाणं मणोगए भावे

जाणइ उत्कृष्टी विपुलमतिवंत यतीनी। संपदा हुवी ४५ च्यारसइ वादी हवा पणि ते केहवा देव

जाणमाणाणं उक्कोसिया विउलमईसंपयाहुत्था ४५ चत्तारिसया वाईणं सदेव

तामनुष्य असुरकुमारनी परिषदाइं अणजीता एहवा साधुनी उत्कृष्टी वादीनी संपदा हुवी ४६ श्रीमहा

मणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाईसंपयाहुत्था ४६ सम

वीरस्य मानमस्यांतेवासी शिष्यमोक्षंगता तावत्सर्वलेषु कर्मदुःखक्षयकृता चतुर्दश आर्यिकासाध्वीनां।

णं सत्तअंतेवासिसयाइंसिद्धाइं जावसव्वदुक्खप्पहीणाइं चउद्दसअज्जियासयाइं

सिद्धाः श्रीमहावीरस्य अष्टशतानुत्तरविमानेषु अनुत्तरवासी गतिप्रधानदेवतानांगतिप्रधान स्थितिप्रधानसर्वदेवतानां स्थितिप्रधानस्थिति

सिद्धाइं समणस्सभ० अट्ठसया अणुत्तरोववाईयाणं गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं

देवभवीआगमिष्यतिमनुष्यभवे मोक्षंगंता उत्कृष्टा अनुत्तरवासीनांसंपदाहुवी ४७ श्रीवीरस्य द्विप्रकार अंत

णं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया। अणुत्तरोववा० ४७ समणस्स दुविहा

अंतकारीसमारसंवेदीकारीभूमिकहुता युगप्रमाणकाल कालविशेषकारेयुगरूपपर्यायपरंपरा तेह्रिमतेयुगांतकृता
मानविशेष मर्यादाज्ञानभूमिकेवलज्ञानउत्पन्नापर्याय कीश्री मध्युरूपपर्यायपरंपरा तत्वरहितमोक्षमार्गविरहित वीरः

अंतगडभूमीहुत्था तं जुगंतगड   भूमी परियायअंतकडभूमीय जाव

मोक्षंगतापर्यायीत्रिविष्टमपि मोक्षमार्गविरहित पर्यायांतकृतभूमिकहाय श्रीवीरस्य।। केवलपर्यायपर्यायी विक्रमसंवत्मोक्षमार्गविहितमादि उत्पन्नज्ञानभूमिकहायक तस्मिन्कालि

तच्चाओपुरिसजुगाओ जुगंतकडभूमी चउवासपरियाए अंतमकासी ४८ तेणंका

तस्मिन्समय श्रमणभगवंत श्रीमहावीर त्रीसवर्षलगइ अगारकहता गृहवासमाहिरह्या सुखभोग

लेणं तेणंसमएणं समणेभगवंमहावीरे तीसंवासाइंअगारवासमज्झेवसित्ता सा

मासेअधिकाबारवर्षलगइ छद्मस्थावस्थाउ पर्यायपूर्णमालीनइ देशेऊणइत्रीसवर्षलगइकेवलज्ञानउ प

इरेगाइंदुवालसवासाइंछउमत्थपरियागंपाउणित्ता देसूणाइं तीसंवासाइं केवलिपरिया

र्यायपूर्णप्रतिपाली बइतालीसवरस श्रामण्यचारित्रउ पर्यायपूर्णप्रतिपालीनइ बहुत्तरिवरसलगइ आयुषउ

यंपाउणित्ता बायालीसंवासाइंसामन्नपरियागंपाउणित्ता बावत्तरिंवासाइंसव्वाउयं

प्रतिपालीनइ क्षयहूतइवेदनीकर्म आयुनामकर्मगोत्रक। एव्यारिकर्म अवसर्पिणीकालनइविषइ दुःषमसुषमा

पाउणित्ता खीणवेयणिज्जाउयना। गुत्ते इमीसेओसप्पिणीए दूसमसु

रूपरउ वितिक्रमहूंतइ त्रिणिवरस। अष्टमिमासाआठमास बाकीनइ अपापावासइ

समाएबहुविइक्कंताए तिहिंवासे। हिं अद्धनवमेहियमासेहिं सेसे

अपापामध्यमानगरी हस्तिपालराजानी लीहाणी। तीसमाइ एकलाकर्मरहित बिहुंउपवासइ चउविहार

हिं पावाए मज्झिमाए हत्थिपालस्सरन्नो रज्जुगसभाए एगेअबीए छट्ठेणंभत्तेणं अपा

स्वातीइ स्वातिनक्षत्र चंद्रमायोगिप्रवर्त्तनइ प्रभातसमयनइ विषइ एहनइसूर्योदयवेला विक्रम हि लगइ पद्मासनिबइठा

णएणं साइणानक्खत्तेणं जोगमुवागएणं पच्चूसकालसमयंसि संपलियंकनिसन्ने

परि

MEMORIAL

पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाणफलविवागाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागा

इं छत्तीसं अपुट्ठवागरणाइं वागरित्ता पहाणं नाम अज्झयणं विभावेमाणे कालगए

विइक्कंते समुज्जाए छिन्नजाइजरा- रामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अं

तगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्ख- प्पहीणे ५५ समणस्स जाव सव्व

दुक्खप्पहीणस्स नव वाससयाइं विइक्कंताइं दसमस्स य वाससयस्स अयं असी

इमे संवच्छरे काले गच्छइ वायणंतरे पुण अयं तेणउए संवच्छरे काले गच्छइ इति 80

दीसइ ५१ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए पंचविसाहे हुत्था

तं जहा विसाहाहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते विसाहाहिं जाए विसाहाहिं मुं

डे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए विसाहाहिं अणंते अणुत्तरे नि

व्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने

विसाहाहिं परिनिव्वुए ५२ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणी

ए जे से गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तबहुले तस्स णं चित्तबहुलस्स च

उत्थीपक्खेणं पाणयाउकप्पाउ वीसंसागरोवमट्ठिआउ अणंतरंचयंचइत्ता इहे

वजंबुद्दीवेदीवे भारहेवासे वाणारसीएनयरीए आससेणस्सरन्नो वम्माएदेवी

ए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वि साहाहिंनक्खत्तेणं जोगमुवागए

णं आहारवक्कंतीए भववक् कंतीए सरीरवक्कंतीए कुच्छिंसिगब्भ

त्ताएवक्कंते १५२ पासेणंअरहापुरिसादाणीए तिन्नाणोवगएआविहुत्था तं ज

हा चइस्सामित्तिजाणइ चयमाणेनजाणइ चुएमित्तिजाणइ तेणंचेवअभिलावेणं

सुविणदंसणविहाणेणं सव्वंजावनियगंगिहंअणुपविट्ठा जावसुहंसुहेणं विहरइ

१५३ तेणंकालेणं तेणंसमएणं पासेअरहापुरिसादाणीए जेसेहेमंताणं दु

च्चेमासे तच्चेपक्खे पोसबहुले तस्सणं पोसबहुलस्स दसमीपक्खेणं

नवण्हंमासाणं बहुपडिपुन्नाणं अ द्धट्ठमाणंराइंदियाणं विइक्कंताणं पुव्व

रत्तावरत्तकालसमयंसि विसाहाहिंनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं आरोग्गाआरोग्गं

दारयंपयाया १५४ जम्मणवद्धावण नवरंपासाभिलावेणं भाणियव्वं जावतंहोउणंकुमा

श्रीपार्श्वजिनस्य ५६ श्रीपार्श्वस्य रिहंतस्य॥ समवायांगे स्थानांगे

एपासस्सणं ५६ पासस्सणंअर हओपुरिसादाणीए दसगणादसगणहरा

८२

व पडिरूवा अट्ठाणं तद्दिवसं विणीए तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता पुणरवि लोयंतिए

तएहिं जियकप्पिएहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं जाव एवं वयासी ५७ जय जय नंदा

जय जय भद्दा जय जय खत्तिया। वरवसहा जाव जय जय सद्दं पउंजंति ५

८ पुव्विंपि णं पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स माणुस्सगाओ गिहत्थधम्माओ अणुत्तरे आ

गाहेसए तं चेव सव्वं जाव दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता जे से हेमंताणं दुच्चे मासे तच्चे पक्खे
पोसबहुले तस्स णं पोसबहुलस्स इक्कारसीदिवसेणं पुव्वण्हकालसमयंसि विसाला-
ए सिबियाए सदेवमणुयासुराए परि- ... -साए तं चेव सव्वं नवरं वाणारसिं नयरिं म-
ज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव ... आसमपए उज्जाणे जेणेव असोगवरपा-
यवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे सीयं ठावेइ ठावित्ता सीयाओ पच्चोरु-
हइ पच्चोरुहित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ क- ८३

-रित्ता अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं विसाहाहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं एगं देवदूसमादा-
य तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवि- ... -त्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए पए पा-
सेणं अरहा पुरिसादाणीए तेसीइं राइं- ... -दियाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे
जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति तं दिव्वा वा माणुस्सा वा तिरिक्खजोणिया वा अणुलोमा वा पडि-

णिआ वा ते उप्पन्ने सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ६० तएणं से पासे

भगवं अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए जाव अप्पाणं भावेमाणस्स ते

सीइं राइंदिआइं विइक्कंताइं चउरासी मस्स राइंदियस्स अंतरा वट्टमाणस्स

जे से गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तबहुले तस्सणं चित्तबहुलस्स चउत्थीप

क्खेणं पुव्वण्हकालसमयंसि धायइपायवस्स अहे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं विसाहा

हिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे जाव के

वलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने जाव जाणमाणे पासमाणे विहरइ ६१ पास

स्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा हुत्था तं जहा

अज्जघोसे य वसिट्ठे बंभयारि य सोमे य सिरिहरे चेव वीरभद्दे जसे वि

य ८ ६२ पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अज्जदिन्नपामुक्खाओ सोलस समणसाहस्सी

१६ छप

DR. BHAU DAJI

उ उक्कोसीसाधुनी संपदाऽभवी ६३ श्रीपार्श्वनाथस्य पुष्पचूलाप्रमुख अष्टत्रीससाध्वीनासहस्रनी

उ उक्कोसियासमणसंपयाहुत्था ६३ पासस्सणं पुप्फचूलापामोक्खाओ अट्ठतीसंअज्जि-

३८००० उत्कृष्टीसाध्वीनी संपदाऽभवी ६४ श्रीपार्श्वनाथस्य सुव्रतप्रमुख श्रमणो

यासाहस्सीओ उक्कोसियाअज्जियासंपयाहुत्था ६४ पासस्सणं सुव्वयपामोक्खाणं

पासकश्रावकनी एकलाख ऊपरिचउसठ॥ सहस्र १६४००० उत्कृष्टी श्राव

समणोवासगाणं एगासयसाहस्सी। ओचउसट्ठिंचसहस्सा उक्कोसियास-

कनी संपदाऽभवी ६५ श्री॥ पार्श्वनाथस्य सुनंदाप्रमुख श्राविका त्रि

मणोवासगसंपयाहुत्था ६५ पास। सुनंदापामोक्खाणं समणोवासियाणं

लाख ऊपरि सत्तावीस सहस्र ३२७००० उत्कृष्टी श्राविकानी संपदाऽभवी ६

तिन्निसयसाहस्सीओ सत्तावीसंचसहस्सा उक्कोसियासमणोवासियाणंसंपयाहुत्था

६ श्रीपार्श्वनाथस्य अर्द्धचतुर्थशत३५० चउदपूर्वधारी केवलीनथीपणिकेवलीसरिखा सर्वाक्षरसन्निपातलब्धि

६६ पास० अद्धुट्ठसयाचउद्दसपुव्वीणं अजिणाणंजिणसंकासाणं सव्वक्खरजावचउ

त एतलाचउदपूर्वधरनीसाधुनीसंपदाऽभवी। श्रीपार्श्वनाथस्य चउदसउ१४००अवधिज्ञानधारीसाधुहुवा दससउ१०००केवल-

दसपुव्वीणंसंपयाहुत्था ६७ पास० चउद्दससयाओहिनाणीणं दससयाकेवलनाणीणं

ज्ञानीहुवा इग्यारसउ११००साधुवैक्रियलब्धिवंतहुवा अमरूढ़५००ऋजुमति वंतसाधुहुवा दससउ१०००यतीसिद्धा वीससउ२०००साध्वीसिद्धिवरती साढासउ

एक्कारससयावेउव्वीणं छसयारिउमईणं दससयासिद्धा तीसंअज्जियासयासिद्धा अद्धट्ठम

७५०विपुलमतिमनःपर्यायधारीसाधुहुवा छसउ६००साधुवादी। हुवा बारसउ१२००साधुअनुत्तरविमानिगहुवा एकावतारी श्रीपा र्श्वनाथस्य बि

सयाविउलमईणं छसयावाईणं बारस। सयाअणुत्तरोववाईणं पासस्सणं दुवि

धांतकारअंतकृतभूमिहुवी तंकिम युगांतकृतभूमि पर्यायांतकृतभूमि ते डोमाक्षमुक्तिपाल्या... केवलज्ञानऊपनापछी... पर्यायांतभूमि

हाअंतगडभूमीहुत्था तंजुगंतगडा। भूमीपरियायंतगडभूमीय जावच

श्रीपार्श्वनाथस्य... पाटलगिमोक्षमार्गविहि युगांतकृतभूमिकहीइ श्रीपा। र्श्वनाथस्य केवलज्ञान ऊपनापछी त्रिहुवरसमोक्षमार्ग वहिचरणअंतः कृतभूमिकहीइ तेणइकालिइ

उत्थाओपुरिसजुगाओ जुगंतगडभूमी तिवासपरियाए अंतमकासी ६८ तेणंकालेणंते-

तणइसमइ श्रीपार्श्वअरिहंत पुरुषमांहिप्रधान त्रीसवरसलगिइ घरवासिवस्या आसीदिवसलगिइ

णंसमएणं पासेअरहापुरिसादाणीए तीसंवासाइंअगारवासमज्झेवसित्ता तेसीइंराइंदिया

८५

इंछउमत्थपरियागंपाउणित्ता देसूणाइंसत्तरिवासाइंकेवलिपरियागंपाउणित्ता पडिपु

ण्णाइंसत्तरिवासाइंसामन्नपरियागंपाउणित्ता एगंवाससयंसव्वाउयंपाउणित्ता खीणे

वेयणिज्जाउयनामगुत्ते इमीसेओस प्पिणीए दूसमसुसमाएबहुविइक्कंत

ाए जेसेवासाणं पढमेमासे दुच्चे पक्खे सावणसुद्धे तस्सणंसावणसु

द्धस्स अट्ठमीपक्खेणं उप्पिंसम्मेयसेलसिहरंसि अप्पचउत्तीसइमे मासिएणंभत्तेणं अ

पाणएणं विसाहाहिंनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वग्घा ८६

रियपाणीकालगएविइक्कंते जावसव्वदुक्खप्पहीणे ॥६९॥ पासस्सणंअरहओपुरिसादाणी

यस्स जावसव्वदुक्खप्पहीणस्स दुवालसवाससयाइंविइक्कंताइं तेरसमस्सणंअयंतीसइमे

संवच्छरेकालेगच्छइ ॥७०॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं अरहाअरिट्ठनेमी पं

चचित्तेहोत्था तंजहा चित्ताहिंचुएचइत्ता ग ब्भंवक्कंते तहेवउक्खेवो जावचित्ता

हिंपरिनिव्वुए ॥७१॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं अरहाअरिट्ठनेमी जेसेवासाणं चउत्थे

मासे सत्तमेपक्खे कत्तियबहुले तस्सणंकत्तियबहुलस्स बारसीपक्खेणं अपराजि

अपराजियाओ महाविमाणाओ बत्तीसं सागरोवमट्ठिइयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दी

वे भारहे वासे सोरियपुरे नयरे समुद्दविजयस्स रन्नो भारियाए सिवाए देवीए पुव्व

रत्तावरत्तकालसमयंसि जाव चित्ताहिं [illegible] गब्भत्ताए वक्कंते सव्वं तहेव सुविण

दंसणदविणसंहरणाइयं इत्थ भाणियव्वं।

ॐ ९२ तेणं कालेणं तेणं समए

णं अरिहा अरिट्ठनेमी जे से वासाणं पढमे मासे दुच्चे पक्खे सावणसुद्धे तस्स णं सा

वणसुद्धस्स पंचमीपक्खेणं नवण्हं मासाणं जाव चित्ताहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं

६३

अथ एकदा वसंते [illegible] श्रीनेमिः [illegible] आयुधशालायां [illegible] श्रीनेमिकृष्णयोः [illegible] बलतुलना [illegible]

[illegible]

आरोग्गा आरोग्गं दारयं पयाया ॥

जम्मणं समुद्दविजयाभिलावेणं

[illegible] श्रीनेमिः [illegible] श्रीवासुदेव [illegible]

रिउ ऋष्ठकुवाशाधाईजिमवानरधीवड़ तिमदीमवालागा कष्ठडपवड़बाऊशुकीथांनविउ सहीपवलवन्नरमाहरुंराज्यलेमिड़ वलउ
उिवादवीआगलिकहूडा॥ कोकीउथ्यामशुउअतिवलवन्नरमाहरुंराज्यालमिड़ वलउशिवादि बीमहड़ वहुउजाणडवड़
पनाईराज्यलेमिड़ पणि प ममारविरक्त पाधरीएककन्यापरणउनधी तिहनडराज्यउ स्तु घप एहशुमानलीछ
लडकहिउमानाप। या न परण्वानीमडमनाववी पहवडश्रीनेमिमाटीघ। डो प लीईकेलिकरता
जाणी माधवआपणीर ६ महमूराणीमोकलेड़ कहडनेमिनडवीवाहमनाउ तेणी ६ मोलश्रृंगारमारी हर्ष
धरतीगङगतिवालती निहा आवी एकहाथिसुवर्णशृंग। कहाधिउक्तमलनाल एकहा॥ थकलमालईपडाघलीई
खहती कस्तूरककस्तूरीकेमरखूआवदनवशुपशुगंधकूल माहिमहती जलक्रीडाकरतांश्रीनेमिनडछाटइ देवरत

परिजाणवउ मिछार्धराजानइवामिमसुवविस्तयनूनामक छिशु जातजअमरस्रशिष्टनेमिनाम तकश्रशिष्टनेमि

नियाघा जावतांहाकणंकमा॥ एश्रशिघातमीनामण तांहाकणं

णीघणीआलिकरड़ मरागवधनबोलड़ एकनाशिपरथु नटोल नाशिविणनरश्रतिलत्तउखंवंकहिवाड़ कवीखंअ
धारिपणिधनातिहनडनादवाड़ २ घरघरणीवलणिनही म कंडकहडममारि गहीनडहकिणिनणड़ निणिपरशुएकना
रिए अनिअलवलतवसन। पु अस्तघीयघीकहिवाड़ एक नारिनडपरणवड़ कणिकहाकी घाड़ उनघा अनिमुदृपवस्त
नणउ अस्तमीयघीकहड़ ड़ वाड़ ध नेमिस्वामिजाणउवडजेनारिनिर्वहवानेचहिली पणि ने मुक्तजीणीमाहमीमोहि
ली घरनारमर्वचल १ व ड़ नरतारनडनिश्चितकरावड़ ५ कुउडस्मारुनाडं। उ १ महमूनिर्वहडवड़
निमएकउस्मारी निर्वहड़ मि ड़ एहवाघणीउमनवचनविलादनावोलतांश्रीनेमिस्त्राणवा॥ स्था रम्पा एतलडगोमागन
एकजिउ बीवाहमानिउउ। श्रीनेमिपवडजललीडाकरीघरिआवी श्रीसमुद्रविजयनडकहिउ जे श्रीनेमिनाथपरणवउमानि
उं मबडउप्रमनरीजाननीवेटी राजीमतीमिउअम्हडवीवाहश्रीनेमिउमेलिउ तउनीधउ वीवाहमामयीमपलीएकरी लोटामाड

बाघाल्या मलाघकुआवांध्या मलीश्रांतोरणस्बीए आकनिवारीए वर्धमबीए दानिछावनपबीए खजनवर्गपोषीए महमनायीए उसवनिरपीड़ माय
बापमहुं ऊपीड़ झीपणविधि मावड़ मधवमीमगलवड़ बाहवस्रुपणुपहिरावी छपपहडरावी ह श्रीनड़कांधिड़श्रीअगलवडान
मिमकलश्माविअलक री रथिवडमारा बाधाबाडारघपायकडपरवरिया जानकरवी। ऊ उवाजनड़ पायनारतड़।
मायनगानड़ अफ उ अ वधानड़ मकलयादवमहित उग्रमेनरायनडघरि। मु ह वड़ परणवा ऊमिड़य
मानिगुपनडविधडवड़ यी गजीमतीमपीमहितपरिवारिमखरी श्रीनेमिनडनिहालड़। म पीस्पानेमिरूपदेखीक
हड़ धन्यराजीमतीनोहमत रविनय जाउपहवावरनडवारमि पकमषीकहड़ आडाराजीम। नीआपणमिउरमडवड़ मवड़।
पाणिग्रहणकस्यायवीएमाहमुनदीजेड़ वलउवीजीकहड़ डमाहपुजाडउमदी नहीजउडनही पणिएवरेउवरसु।

ड अरिवश्य नयवन दक्षरावारामीश्रविना वडमाहनी पत्रालाबुराजाडेत्रिणमहेरमकमारपणडइ

अरिहाअरिहनेमी दारकजावा तनिवामपन्याइकुमार आगार

अयनलडआपणडमनीए पहयुकहडनराजीमनीबी लीअरेमपीमाहरुंजिमणुलोचनफरकडवड़ नेहतणी
कोडएकपोहडडामिड़ नकालमपलीमपीअुजाकारकरड़ जेन नडश्रीनेमिउरथनारणिआविउ पतलइयाडवनिडपरवन
डञ्चिमिमाडावरनडहरिण हरिणीपशुमडाघ्रमेलीयाडडघा॥ व्याडड मोरपारखालावीनीनर। पश्रववपीआमाडारपाहया क
व्यानस्यायापडाबाकह। क रमा मानलाश्रीनेमिकमुणापनिस्ड मारथीप्रतिड़ मिक्कार्य ण एजीवमामदामेलीमिहल्या
वलउमारथीकहडड खा मी अझरीजानमनडअर्थिडएमर्वकाजिआवमिड एहघुमा न ली कुमणपरसामीडश्री।
प्रणकानमाअडनआपी म वडीयएमाकलाकरवनिमडकामा मुणिडएपाममविकडावा ऊ पजाधिकवानमुधिमीएए
पाणिग्रहणडाजेणएवड॥ जीवमहेर अयणडपाणिग्रहणमारवडमर्वधानिपम निवारकरीरथप रथवालीघोरकाकडीमवा
अम्दानदेई धोरिकाधीनिस्वाविडीई महमायनमाहिडंकर्मयमत्तीधउ रत्नवालिनउदयाराजीमतीकहडड कापरघपानीवेस्या पसमाहेसुने

कालमूर्बायांमी खूमिकांइपडी मरवाणबावन्नवंदनरसेबांटीताढेवाएकरीवेतवाजिउं राजीमतीनीसामुखकताएहखुंकहइ देखुमाहरुं मू
घंपणु जिमहऊ्राणजाणिइं। तिमिमिउरागधरिउ उक्तंहलुईघई यतः विज्ञआनहरमाणमह जेत्र षुरागधरति मूकइहाडिमीत्र
रलजिम लालहपट। म रति २ सहीमाहरूएवखुनाम्पनघी जिजगन्नाघमाहसमाणि य हणकारि पणिकागनीः
कोटिहुरत्नमाला न बा डइ हमविलापकरती विनवइ धीमसुखम्प। णी धी मूकेजीघणवमेला
हे श्रीमिकलाक्षम॥ ला या पडिवज्जिउंजउबलिवन्ना १ पहिलुकहइतीमघोबो॥ ली राजीमतीएवाकूहइ उ
उपरणीनघी जइपरणीना॥ इसुकत उअपघेउपामत पिम्म। रहिउंमिपिउमहि पउंमा॥ वमारेमिपिउनाव पिम्मपं
रंकिपिवरं अन्नवंरतकरिस्मामा य एववतमावलीका। नहाकीरही रिमघोएववनमके उइसूवंवमस्थिमिमू

हवाममाहिरहीवमीनइ बनीत्ताकातिकादिवता॥ आवइ जीनआचारनिश्चइवमुजहनइ पहि

वासमग्गेव सिन्नाणं सुणरविल्ल

ल्हिंतिएहिं जिग्गकप्पिएहिं दि

कागइ उहरुतेमिविनाअनेमनही कहइतमिवुमाघ॥ संयमकहमाघ मघीकहइधम्पहोराजीमती जेहंशी
लवनीशिरामणि त्रिलोवनमाम्पु पहवइश्रीनेमिनोघणि रिनारिगयाजाणी हारओडती केसकलापवोडती वलया
मोडती आनरणनाजती। दीनवयनबोलती इमकहेवा॥ अइवडतीपडतीआखडतीन मिकहइताइनीमरी वेस्मा
तवरमतइ आगताव॥ मु नीजातइ बीजावयतइ मेघगाजतइ खलहलतीरवहतइ॥ मु विमुहती बाटइवमुना
ताजगववानइस्त्र धि इ सुफामाहिगया आरीरतीममस्तवमुअगाब्या तिहाउ धा रि रयानमिश्रीनेमिवु
खुहहुमाईहत तिणा। इ राजीमतीनामर्वअवस्थवादघीमरागमय्यु मवलकरिउ पंत्तल इ राजीमतीमुमचइतघया
आगलिआवीरघानमिय नीकहइ मानलिराजीमतीजाएश्रीनेमिवुलक्तेवाई आवउआप णपेघरिजाइइ सुखविलसी
प पवहवइपणिवा रि अलीजीमिइ पहवउवचनमानलीवलउकहइ कहइउवं म उआहारलिइ उउस्मा

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

रूववंतमानउतिकारेरघनेमेकयन एतोस्वानेजाइनेकरवलउराजीमतीकहेजं नम्मापवुमीअनेउस्वागोगोस
नधीउबुसु१धिरूखुतनसीकामीजातजीविअकारणावउइ खुमीआवेउसेश्रेतमरणनवेश्रअरवेतनीगरायस
नवमित्रधाविकुणोमाकलेगधणाहामा सजमनिकउवराउ जइउकाइसीनावजाताहि खुमीनारिउतायाश्रेठघ
अडिअणारिवसिसिघनमिसीवुघणसोहा सनयासुनामिय अकसेणजहानागाधमेसंपनिवाईउ करोने
सुकाप निआप वियसकणविणीयई तितोगेसजहासेपुरिसोनमो त्रिबेमि इएणीपरेयतिबोधीश्रीनेमकनेजइव

वजेउं नेहसर्वजणावु तोजोटानवेवुयानकाहिकनेधनविहिं आपइ आपनिइ ७३ नेवर्षारात्रिवु
वता
वीज्ञापइजानीने

वेहिं तं चेव सव्वं नाणं यव्वं जाव दाणं दाइयाणं परिभाएइ परिभाइत्ता ७३ जे से वासाणं
पहिलुमास बीजोपखवाडो आवणसुदि नेथानइदिनइ छठनइदिवसइ विपुकरनीवेलाइ

पढमे मासे दु ५ च्चे पक्खे सावण सुद्धे तस्स णं सावण सुद्धस्स छट्ठी पक्खे णं पुव्वण्ह कालस
उत्तरकुराइसहइनामइपालखीइ देवेतामनुष्यअसुरकुमारनीपरखदाइ तेणइसहित अणुगम्म का
बइगा
मयंसि उत्तरकुराए सिबियाए सदेवमणुआसुराए परिसाए अणुगम्ममाणमग्गे जा
रकोनगरीमाहइ मध्यइमध्यइथईने निसरइ नीसरीनइ जिहारवतकाचनउद्यानक्ने तिहांआ
वइ
व बारवईए नगरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छइत्ता जेणेव रेवइए उज्जाणे तेणेव उ

श्री...

वागच्छइ २ त्ता असोगवरपायवस्स अहे सीअं ठावेइ २ त्ता सीयाउ पच्चोरुहइ २ त्ता सी
याउ पच्चोरुहइ २ त्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ २ त्ता सयमेव पंचमुट्ठिअं लो
यं करेइ २ त्ता छट्ठेणं भत्तेणं अप्पाणएणं चित्तानक्खत्तेणं जोगमुवागएणं एगं देवदूसमा
दाय एगेणं पुरिससहस्सेणं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए १७४ अरहा
णं अरिट्ठनेमी चउपन्नं राइंदियाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे तं चेव सव्वं जाव पणपन्न
गस्स राइंदियस्स अंतरा वट्टमाणस्स जे से वासाणं तच्चे मासे ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

छिनी-यपत्र ८९

मासे पंचमे पक्खे आसोयबहुले तस्स णं आसोयबहुलस्स पन्नरसीपक्खेणं दिवसस्स
पच्छिमभाए उज्जिंतसेलसिहरे वेडसपायवस्स अहे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं चित्त
नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं झाणंत रियाए वट्टमाणस्स जाव अणंते अणु
त्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे सम मुप्पन्ने जाव सव्वलोए सव्वजीवाणं
भावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ १७५ अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठारस गणा अट्ठा
रस गणहरा हुत्था १७६ अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स वरदत्तपामुक्खाओ अट्ठारस समणसा

हस्री उत्कृष्टी श्रमणनी संपदाहुयी ११ श्रीअरिहंतश्रीअरिष्टनेमिनइ साध्वीयक्षिणीप्रमुख च्या

स्सीउ उक्कोसिया समणसंपया हुत्था ११ अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अज्जजक्खिणीपामोक्खाओ चत्त

लीस साध्वीनामहस्री उत्कृष्टी साध्वीनी संपदाहुयी श्रीअरिहंतश्रीनेमिनाथनइ नंद

त्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया हुत्था १२ अरहओ णं नंद

प्रमुख श्रावकनी संपदा एकलाख। अनइ उगणोत्तरि सहस्र उ

पामोक्खाणं समणोवासगाणं एगास यसाहस्सीओ अउणत्तरिं च सहस्सा उ

त्कृष्टी श्रावकनी संपदाकहिइ बी १३ श्रीअरिहंतश्रीनेमिनइ महासुव्रता

क्कोसिया समणोवासगाणं संपया॥ हुत्था १३ अरहओ णं महासुव्वया

प्रमुख श्राविकानी कोडि त्रिणिलाख॥ एकअधिक छत्रीस सहस्र उत्कृ

पामोक्खाणं समणोवासियाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ छत्तीसं च सहस्सा उक्कोसि [illegible]

ष्टी श्राविकानी संपदाहुयी १४ श्रीअरिहंतश्रीअरिष्टनेमिनइ च्यारिसइ चउदपूर्वधारी

या समणोवासियाणं संपया हुत्था १४ अरहओ णं चत्तारिसया चउद्दसपुव्वीणं अ

जिन नहीं जिनसरिखा सर्वाक्षरसंनिपातलब्धिवंतहुया १५ पन्नरसइ अवधिधरसाधुहुया पन्नरस

जिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरजावसंपया हुत्था १५ पन्नरससया ओहिनाणीणं पन्नरस

इकेवलज्ञानीहुया पन्नरसइ वैक्रियलब्धिवंतहुया दसनइ विपुलमतिवंतहुया आठसइ वादीहुया सो

सया केवलनाणीणं पन्नरससया वेउव्वियाणं दससया विउलमईणं अट्ठसया वाईणं

लसइ अनुत्तरविमानिगतीऊपना पन्नरसइ श्रमणा सीधा त्रिणिसहस्र साध्वीसि

सोलससया अणुत्तरोववाईयाणं पन्न रससमणसया सिद्धा तीसं अज्जियासयाइं सि

द्धहुती श्रीअरिहंत श्रीनेमिनइ बिहु प्रकारअंतःकृतभूमिहुयी तेकिम युगांतकृद्भूमि

द्धाइं अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स दुवि हा अंतगडभूमी हुत्था तं जुगंतकडभू

अनइपर्यायकृतभूमिनइ जांआउपाट। लगइ श्रीनेमिनाथशिष्यपरंपराइ मोक्षमार्गवहितउ युगांतकृतभूमिकहीइ बारवरसमश्रीनेमि

मीय परियायंतकडभूमीय जाव अट्ठमाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकडभूमी दुवालसपरि

केवलपाम्यापछीमोक्षमार्गवहितउ तणइकालिइ तणइसमइ श्रीअरिहंत श्रीनेमिनाथ त्रिणिसइवरसलग

याए अंतमकासी १६ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी तिन्नि वाससयाइं

इकुमारपणाइ रह्यानइ चउप्पन्नदिवसलगइ छद्मस्थपणा भोगवीनइ चउप्पन्नदिवसऊणा

ड्कुमारवासमज्झेवसित्ता चउप्पन्नराइंदियाइंछउमत्थपरियागंपाउणित्ता देसूणाइंसत्त

सातसइवरस केवलज्ञान पर्यायपालीनइ सम्पूर्णसातसइवरस चारित्रनउपर्याय प्रति

वाससयाइंकेवलिपरियागंपाउणित्ता पडिपुन्नाइंसत्तवाससयाइंसामन्नपरियागंप

पालीनइ एकसहस्रवरस सघलउंआयु प्रति पालीनइ क्षयगइतइवेदनीयकर्म नामकर्मगोत्रक

ाउणित्ता एगंवाससहस्संसव्वाउयंप ालइत्ता खीणेवेयणिज्जाउयनाम

र्मआयुक्षयगइतइ एअवसर्पिणीकालनइविषइ दु सुसमसुखमआरा घणउविनिक्रमतइ जेउन्हा

गुत्ते इमीसेओसप्पिणीए दूसमसुसमा ए समाए बहुविइक्कंताए जेसेगि

ळकाउ चउथउमास आठमउपखवाडउ आसाढ सुदि तेणीआसाढ आठिमी आठमितइदिवस

म्हाणं चउत्थेमासे अट्ठमेपक्खे आसाढसुद्धे तस्सणंआसाढसुद्धस्स अट्ठमीपक्खेणं

ऊपरिगिरिनारशिखरनइ विषइ पाचसइ छत्रीस अणगारयती संघातिइ मासिदिवसनीसंलेषणा ज

उप्पिंउज्जिंतसेलसिहरंसि पंचहिंछत्तीसेहिं अणगारसएहिंसद्धिं मासिएणंभत्तेणं

पाणीरहितउपवासनइ चित्रानक्षत्रि चन्द्रमायोगप्रवर्त्ततइ मध्यरात्रिनइविषइ कालगतहया निषद्यामा

अपाणएणं चित्तानक्खत्तेणं जोगमुवागएणं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि नेसज्जिएका

नकर्या यथाय जांसर्वदुःखक्षयहवा ८६ अरिष्ट नेमीश्वरनइथकइ जांसर्वदुःखक्षयहूआतां

लगए ७०० जावसव्वदुक्खप्पहीणे ७४ अरहओणंअरिट्ठनेमिस्स जावसव्वदुक्खप्पही

चउरासीसहस्रवरसगया पंचासीमासहस्रवरस

णस्स चउरासीइंवाससहस्साइंविइ॥ क्कंताइं पंचासीइमस्सवाससहस्स

नवसइवरस अतिक्रमतइ दसमउ वरसआविउ

नववाससयाइंविइक्कंताइं दसमस्स यवाससयस्स अयंअसीइमेसंवच्छ

मोक्षिगयानइ मोक्षिपहुतापछी जांसर्वदुःखक्षयहूआपछी

रेकालेगच्छइ ७५ नमिस्सणंअरहओकालगयस्स जावसव्वदुक्खप्पहीणस्स पंचवा

सहस्रवरस चउरासीसहस्रवरस नवसइवरस अतिक्रमतइ दसमावरस

ससयसहस्साइं चउरासीइंचवाससहस्साइं नववाससयाइंविइक्कंताइं दसमस्सवा

मञ्चाविद् ६मीमिवर्मि मिद्यानघ्नकंघडिन ८५ १०श्रीवुनिसुव्रत अरिष्टनमद् काल
[illegible]
क्रुञ्चापवी ञामर्वद्:स्कन्धक्रान्द् ६स्पारस्लापवरम वज्रामीदव मद्घवरम कं
[illegible]
परिनवमङ्वरम अतिक्रमनद् दमघ्नुवरम आविद् नदनद् ६मीमद् वर्मिद्मिद्यान
[illegible]
घ्नकंघडिन ८६ १७श्रीमल्लिअरिष्टनमद्।
माक्षिघ्नद्नापवी पामछिस्लापवरम
[illegible]
ञानमहघ्नलापक्वहाद् वज्रामीवल्ली मद्घवरमञ मरिनवमङ्वरम अतिक्रमनद् दमसामुता अ
[illegible]
मीवरमञाविद्८७ मिद्यानघ्नक्रिद् वडिन ८७ १८श्रीअरनाथ अरिष्टनमद्माक्षिघ्नद्नापवी
[illegible]

पक्वरमनी काडिनवमद्घवरम अतिक्रमनद् पाक्वमघल्वहमहनाघ्नञानवृ नवल्लीपामछिस्लाप
[illegible]
वज्रामीवर्मद्म विनिक्रमनद् नपदमनद् श्रीमहावीरनिर्वाणिघ्नद्ना निष्ठारवी नवमङ्ञमीवरमगद्
[illegible]
दमघ्नुवरम आवनद् अमीमद्वर्मि॥ मिद्यानघ्नक्रि वडिन पणीपरि आगनि
[illegible]
श्रीश्रेयाममनादिमवीत ८७ १९श्रीक्कुन्थुनाथअरि
रिष्टनमद्माक्षिघ्नद्नापवी पंकघ्नद्मानिमल्वा मनमद्विनिक्रमनद् पामछि
[illegible]
लापवरम पाक्वमलिनापवनीपरिद् २६श्री आनिनापअरिष्टनमद् पक्वमल्वापमवज्रवमनागमनपद् वि
[illegible]
निक्रमिद् पामछिवल्लीलापवरम पाक्वमल्लिनापवनीपयरि १५श्रीधर्मनाथअरिष्टनमद् ञामर्वद्:स्कन्धक्रान्द्
[illegible]

२५श्रीअरनाथ १७श्रीक्कुन्थुनाथ विविक्रमकाडि मद्घवरमक्र ...

१५श्रीधर्मनाथ आदिनाथगरीप ...

१०श्रीवुनिसुव्रत ... २०श्रीमल्लि ...

७९ ९

१७श्रीक्कुन्थुना ... १८श्रीअरनाथ ...

त्रिभिसागरोपम व्यतिक्रमितं मार्महिसाघवली [illegible] २ आर्य [illegible]

णस्य त्रिभिसागरोपमानि विष्कम्भितानि पञ्चछिन्नं संसारक्लेशछिन्नस्य ।१। आर्यमन्त्रणि ज्ञान

सप्तसागरोपम व्यतिक्रमतः [illegible]

सत्त्वस्कन्धप्रभास्य सप्तसागरोपमानि विष्कम्भितानि पञ्चछिन्नं संसारक्लेशा ।२। विमलस्य

ज्ञानोक्तिस्वरूपनायकी मालसागरो यमतः विनिक्रमतः [illegible]

णं ज्ञानसत्त्वस्कन्धप्रभास्य मालस्य सागरोपमानि विष्कम्भितानि पञ्चछिन्नं सं

[illegible] ३ आर्यवासुदेवस्वनः मोक्षिस्वरूपनायकी [illegible]

संक्लेशछिन्नस्य ।३। वासुदेवगणेश प ज्ञानसत्त्वस्कन्धप्रभास्य बाष्पानी

[illegible] व्यतिक्रमतः [illegible] ४ आर्य [illegible] मोक्षिस्वरूपनायकी

सागरोपमानि विष्कम्भितानि पञ्चछिन्नं संसारक्लेशा ।४। सिंहेन्द्रमणि ज्ञानसत्त्व प

[illegible] ५ आर्य [illegible] मोक्षिस्वरूपनायकी

णसागरोपमानि विष्कम्भितानि संसारक्लेशा ।५। मीनाक्ष्मणेश्वर ज्ञानस्कन्धप्रभास्य पण

सागरोपमनीकोटि त्रिभिवरम [illegible] क्षणीगतधिकतः वि

सागरोपमकोटि त्रिवानत्रिंशतवसामाछिन्न बाष्पानीमवासमाछिन्न क्लेशणिष्पाविष्

[illegible]

क्ता पञ्चसिंहमणवीरनिर्वाण तत्रविशणेपरतवामसमाष्विष्कम्भितास्वसमस्तया

[illegible] ६ आर्य [illegible]

समस्तस्य आर्यश्रीसमन्तभद्रस्य [illegible] ।६। सुविछिन्नमणेश्वर

[illegible] मोक्षिस्वरूपनायकी [illegible] सागरोपमनीकोटि व्यतिक्रमतः [illegible]

सुखकृतस्य ज्ञानस्कन्धप्रभास्य दशम सागरोपमकोटीत्रविष्कम्भितात्र संसं

[illegible]

क्लेशछिन्नस्य तवदशतिवानत्रिंशतवसामाछिन्न बाष्पानीमवासमाछिन्न क्लेशणिष्

[illegible] मोक्षिस्वरूपनायकी पञ्चसागरोपमनी कोटि

विष्कम्भितानि स्वाहा ।७। वदनकमलमणेश्वर ज्ञानस्कन्धप्रभास्य पञ्चसागरोपमकोटि

सहस्सा विइक्कंता सेसं जहा सीयलस्स । १९९ । पउमप्पहस्स णं अरहओ जाव प्पहीणस्स दस सा-

हस्सा विइक्कंता तिवासअद्धनवमासाहिय इच्चाइयं सेसं जहा सीयलस्स । २०० । सु-

विहिस्स णं अरहओ जाव सव्वदुक्खप्पहीण । स्स एगं सागरोवमकोडिसयसहः-

स्सा विइक्कंता सेसं जहा सीयलस्स तिवासअद्धनवमासाहिय बायाली-

स वाससहस्सेहिं इच्चाइयं । १ । अभिनंदणस्स णं अरहओ जाव प्पहीणस्स दस सागरोवम-

कोडिसयसहस्सा विइक्कंता सेसं जहा सीयलस्स । २ । संभवस्स णं अरहओ जाव प्पही-

णस्स वीसं सागरोवमकोडिसयसहस्सा विइक्कंता सेसं जहा सीयलस्स । ३ । अजियस्स

णं अरहओ जाव प्पहीणस्स पन्नासं सागरोवमकोडिसयसहस्सा विइक्कंता

सेसं जहा सीयलस्स तिवासअद्धनव मासाहिय बायालीसं वाससहस्सा-

इं इच्चाइयं । ४ । तेणं कालेणं तेणं । समएणं उसभे अरहा कोसलिए च-

उउत्तरासाढे अभीइपंचमे होत्था । तं उत्तरासाढाहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते जाव अ-

भीइणा परिनिव्वुए । ६ । तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभे अरहा कोसलिए जे से

गिम्हाणं चउत्थेमासे सत्तमेपक्खे आसाढबहुले तस्सणंआसाढबहुलस्स चउत्थीप
क्खेणं सव्वट्ठसिद्धाउमहाविमाणाउ तित्तीसंसागरोवमट्ठिइयाउ अणंतरंचयंचइत्ता इहे
वजंबुद्दीवेदीवे भारहेवासे इक्खा गभूमीए नाभिकुलगरस्स मरुदेवा
एभारियाए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि आहारवक्कंतीए भववक्कंतीए
जावगब्भत्ताएवक्कंते उसभेणंअरहाकोसलिए तिन्नाणोवगएआविहोत्था तं जहा
चइस्सामित्तिजाणइ जावसुमिणेपासइ तं गयवसहगाहा सव्वंतहेवनवरं पढमंउसभं

मुहेणं अइंतंपासइ सेसाउगयं नाभिकुलगरस्ससाहेइ सुविणपाढगानत्थि नाभिकुल
गरोसयमेवपच्चुदाहेइ ८ तेणंकालेणं तेणंसमएणं उसभेअरहाकोसलिए जेसे
गिम्हाणं पढमेमासे पढमेपक्खे चि त्तबहुले तस्सणंचित्तबहुलस्स अट्ठ
मीपक्खेणं नवण्हंमासाणं बहुपडि पुन्नाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं जावउत्त
रासाढाहिंनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं आरोग्गाआरोग्गंदारयंपयाया ९ तंचेवसव्वंजाव

[illegible]

स्तीणयुगलसमविय सुनं॥ देवीनी मुक्तिसुमगलादेवी इत्याद्यालिसुदिशिण युगलसमविय व लीयरणमवामयुगलसुन

नमादवागनायस्व स्वयरियवुमर्वकरुरवं श्रावकत्वतिमर्जपणिगोतिस्वरायन मांनसमाणनवंधारवं समादाणसुव

वादवाउदेवीउज्जवसुद्धारवासंवासिंसु। ससतवचारगासोहणं माणुम्माणवद्धणं उ

मयसुद्ध स्थितियनिकामनाअवयाली मय॥ सुद्धकसुद्धवं १५ श्रावकयन अरिहंत

स्सुक्कमाउक्कं विक्कयपडिसिद्धववहं। सबलाणिज्जं १५ उमालणंअरहा

कोमलाधिमति काययणायवंन नश्नापावना॥ मकस्विराद सद्याकार्हद तोडम अपनादव २

कामलिय कामवयालणं नम्माणपवना॥ सधिस्सा पवमाहिअंति तंज्ञहा उमालस्वा

श्रुममलोकयमव्या इत्यादि [illegible] मानसमुल। गरमानाम महिक्षुविमलबा

[illegible]

पद्रमराधाइवाए पढमनिरकाचारवाए॥ पढमजिणवाए पढमतित्थंकरवा ५ १२

श्रावकयन अरिहंत कायलाधिमति उभाडाहीपति॥ श्रावकजेस्नी उत्तमरूपधारी पावनीमंदरकारी मुक्तमा

उमालअरहाकामलिय दारकदरके पढमवे पडिस्रावअस्ताणं नद्दए वि

लावनात सुधीमसर्वमासाम कुमारवस्याईरी नकलहग्रावसं विसंहि सर्वनालाय ग॥

णीए वीसंइद्वमस्याम्मढमस्साइकुमारवास। सज्झवसिता लवहिंसुवमसयमढमस्साइं

[illegible]

थेसुकह सर्वकलीजाइ बलीनेस्वामीनइआव्हइ एवेतालसर्वथाईजाणइइ एवइस्वामीइस्नानाइकंधअमरिसइनी माटीसुपिंडलेईघडनाम
जाविउ एवइपाव विज्ञान। प्रगटकीधा प्रथमअक्षरकारउविज्ञान२ बीजउचित्रकरनउविज्ञान३॥ त्रीजउलोहकारनउ३ चउ
थुंपात्रीनउविज्ञानधया व संकरमणनउविज्ञानपाँचकेकानावीमालहवा एनलइस्वते द विज्ञाननां अढारइलि
पिवविधान कहइन दे वि ब्राह्मीनइजिमणेहाथिमांथिवि डावइहाथि तेह न णी गणितविधानसुंदरी
नइस्वामीइसीपविउं व इहाथि तेहनणीश्राकनीवामनामिकइ नरननइअक्षनरिक लो मामवी एहइलालिपिन
तेअढारलिपि हंसलिपि भू नलिपि यक्षलिपि राक्षसीलि पि उड्डीयालिपि तोरिकीलिपि। द्राविडीलिपि सिंधवीमालवी
नडीनागरीलाडलिपि पारसीअनिमित्तलिपि मूलदेवीलि मरुदेवीगणितविज्ञानरूपकर्मरूपनिष्पादिरमादिस्वरगतय
अवामि समतइं लिखिसहीइं गणितगुण अमनरूपदेहमपइरुज
पज्जवसाणाओ बावत्तरिकलाओ लेहाइया रुगणियप्पहाणा सउणरुयप
करणत नालमान अलंकनवाद पाशकअष्टापद सर्वात्रा र्थेसरवकलामही अन्नविधि पानविधि वस्त्रविधि विलेप
नविधि शयनविधि आर्याप्रहेलिका मागधिका गाथागीति काव्याक हिरण्ययुक्ति सुवर्णयुक्ति चुर्णयुक्ति आभरण
विधि तरुणीपरिकर्मविधि॥ स्त्रीलक्षण पुरुषलक्षण हयल क्षणगजलक्षण वृषभलक्षण कुर्कटल क्षणछत्रलक्षण दंडलक्षण असि
लक्षण मणिलक्षण सलि वा वास्तुविद्या स्कंधावारमान नगरमान व्यूहप्रतिव्यूह चारप्रतिचार चक्र व्यू ह गरुडव्यूह शकटव्यू
ह युद्धनियुद्ध युद्ध॥ वा ति युद्ध अतियुद्ध मुष्टियुद्ध बाहुयुद्ध लतायुद्ध ईषुशस्त्र २ म वाद धनुर्वेद हिर
ण्यपाक सुवर्णपाक सू त्र पेड वस्त्रखेड घटखेड पत्रखेड कटकछेद्य सजीवकर ण निर्जीवकरण शकुन
रुत ७२ एतलइअक्षरनिक ला॥ हवइस्त्रीनीचउसठिकला नृत्यअचित्यचित्रवादित्र मंत्र ज्ञान विज्ञान दंभ जलस्तंभ गीत
मान तालमान मेघवृष्टि फलाकृष्टि आरामरोपण आकारगोपन धर्मविचार शकुनसार क्रियाकल्प संस्कृतजल्प प्रासादनीति धर्मनी ८९

ति वर्णिकावृद्धि सुवर्णसिद्धि सुरभितैलकरण लीलासंचरण गजतुरगपरीक्षण स्त्रीपुरुषलक्षण सुवर्णरत्नभेद अष्टादशलिपिपरिछेद
तत्कालबुद्धि वास्तुसिद्धि वि दक्रिया कामविक्रिया घटभ्रम सारिपरिश्रम अंजनयोग चूर्णयोग ह। स्तलाघव वचनपाटव भोगवि
धि वाणिज्यविधि मुखम ड न शालिखंडन कथाकथन पुष्पग्रथन वक्रोक्ति काव्यशक्ति स्फार वे शेम सकलभाषाविशेष
अभिधानज्ञान आ न र णपरिधान भृत्योपचार गृहाचार व्याकरणपरनिराकरण। र ण रंधन केशबंधन वी
णादिनिनाद अंकविच द्वा रअंत्याक्षरिका प्रश्नप्रहेलिका इत्येवचउसठिस्त्रीनीकलाप्रह। पी अनइस्वामीएव्यारेलोकु
अक्षरउविज्ञानकोधु मार णइस्वामी विहरवापामान्या पणि कोअहारदेवानुविधिनजाण इयतः नविज्ञाणजाणइ को
तिस्कार कीधाविविधकयग तेबिरुद्धसमनमाणा वणस सेनाव्रमाजाया १ स्वामीनासघातीयारिमहम्नतिहांअण
नयइ ए कुलीकडरिकाग्रम छितीनीकलागुण विज्ञाननासुवली क

चउसट्ठिं महिलागुणे सिप्पसयं च क

सलतांजाया धारीतापसथया भगवंतजिहांजाइविहर वा तिहां कोकाइअंगारीआपइ कोरत्नघालनरीआपइ को
मोतीमालाआगलिधरइ कोआभरणकोअश्वकोहस्ती वस्तुसघणाएपदार्थस्वामीआगलिधरइ पणिभगवंततिःस्पृह
थिकाकांलिइ एकवरसमणेणी परिइतिराहारीस्वा पणिलगा॥ स्वामनतनहीं भगवतएतवरस ।सीनासुजकसमहाकस तिह
नासुजनसिविनिमिसी॥ सी एवारिसोकोधनबीजायाया नरतनइअवगणीस्वामीनासेवाकरइ य फूलेईस्या स्वामीनइक
इइसमराज्यदेहन व इ हाडिककहइस्वामीनिरीहघयाराज्यकिसदइ सिसिवि न सि कहइस्वामीनादीधा
वनोअतरामनदीधयन द्वी नौउइ एवइस्वामीनीकिदीधाइमहाराजस्वामीनइसुपिअवतरी ४८ ७७७महस्रविद्यादइवेना
धुराज्यदीधु वरसदिवमना इवातिराजसुरिमनारियाउबलिपुरसोमयशा तहस्तुमुनसेयांसतणइ सुकुमालिमिसीअस्वतइधाई
कजलउकरिउदीवउ तिहस्तुपिनामोमयशानणइस्वप्नएहवउदीवउ ।जामोरुवकोसुनटवइरीइपरातविजयमणिप्रमानामसपाउतधि

[illegible]

स्साणं निन्निविपयाहिणाए अ ... वद्धिमाणइ२त्ता सुवन्नसहस्सेण

[illegible]

निक्खमइ२त्ता सुणरविलोयंति एहिं जि ... सकप्पियाहिं दिवाहिं नाहिं सयाहिं जाव

वग्गूहिं अभिनंदमाणा अभिथुव्वमाणा य ... वदाणं दाइयाणं परिभाइत्ता जे से

गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्खे चि॥ ... त्तबहुले तस्स णं चित्तबहुलस्स अट्ठमी

[illegible]

DR. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजी इत्यस्य पुस्तकम्

९८

पक्खेणं दिवसस्स पच्छिमभागे सुदंसणा ए सिबिआए सदेवमणुयासुराए परिसा

ए समणुगम्ममाणमग्गे जाव विणीयं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं निग

च्छइत्ता जेणेव सिद्धत्थवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवा

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

गच्छइत्ता असोगवरपायवस्स अहे जाव सयमेव चउमुट्ठियं लोयं करेइत्ता छट्ठेण

भत्तेणं अपाणएणं आसाढाहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं उग्गाणं भोगाणं राइन्नाणं

खत्तियाणं चउहिं पुरिससहस्सेहिं सद्धिं ए गं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगारा

ओ अणगारियं पव्वइए उसभेणं अरहा कोसलिए एगं वाससहस्सं निच्चं वोसि

ट्ठकाए चियत्तदेहे जाव अप्पाणं भावेमाणस्स एगं वाससहस्सं विइ

क्कंते तओणं जे से हेमंताणं चउत्थे मासे सत्तमे पक्खे फग्गुणबहुले तस्सणं फग्गुण

[illegible]

१००

म चउरासीश्रमण सहस्रमितानी उत्कृष्टीसंपदा चारित्रीयानी हुवी श्रीऋषभदेवनइं
णपामुक्खाउ चउरासीइं समणसाहस्सीउ उक्कोसिया समणसंपया होत्था २५ उसभस्स
ब्राह्मीसुंदरी प्रमुख साध्वीनी त्रिणिलाखनी उत्कृष्टी महासतीनी संपदा
णं बंभीसुंदरिपामुक्खाणं अज्जियाणं तिन्निसयसाहस्सीउ उक्कोसिया अज्जियासंप
हुवी २६ श्रीऋषभदेवनइं श्रेयांसकुमर प्रमुख श्रमणोपासक श्रावक त्रिणिलाख ने
या होत्था २६ उसभस्स णं सिज्जंसपा मुक्खाणं समणोवासगाणं तिन्निसय
ऊपरि पांचसहस्र उत्कृष्टी श्रावकनी संपदा ऊपरि हुवी २७ श्री
साहस्सीउ पंचसहस्सा उक्कोसिया समणोवासगाणं संपया होत्था २७ उ
ऋषभनाथनइं सुभद्राप्रमुख श्राविकानी। संपदा हुवी पांचलक्ष ऊपरि चउपनसहस्र
सभस्स णं सुभद्दापामुक्खाणं समणोवासियाणं पंचसयसाहस्सीउ चउप्पन्नं च सह ३४५
स्र उत्कृष्टी श्राविकानी संपदा ऊठि हुवी २८ श्रीआदिनाथनइं च्यारिसहस्र ऊपरि
स्सा उक्कोसिया समणोवासियाणं संपया होत्था २८ उसभस्स णं चत्तारि सहस्सा १०२

सातसइं अनइं पचास चउदपूर्वधारी नथया ते केवली पिण जिनसरिखा उत्कृष्टी चउदपूर्वीनी
न्नसया पन्नासा चउद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं उक्कोसा चउद्दसपुव्वीणं सं
संपदा थई श्रीऋषभदेवनइं नवहजार अवधिज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थई श्रीऋषभदेवने
पया होत्था उसभस्स णं ३ नवसहस्सा ओहिनाणीणं उक्कोसिया संपया होत्था उसभस्स
वीसहजार केवलज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थई श्रीऋषभदेवने वीसहजार छसइं अ
वीससहस्सा केवलनाणीणं उक्कोसिया संपया होत्था उसभस्स णं ३ वीससहस्सा छच्चस
नइं वैक्रियलब्धिनाधणी बारहजार छसइं अनइं पचास विपुलमतिनाधणी ढाई द्वीपना बे समुद्रनें विषइं
या वेउव्वियाणं बारससहस्सा छच्चसया पन्नासा विउलमईणं अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु स
संज्ञावंत पंचेंद्री पर्याप्तानां मननाभाव जाणइ जाणता देखता चित्तरंतहनी उत्कृष्टी
न्नीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगए भावे जाणमाणाणं पासमाणाणं उक्कोसिया विउ
विपुलमतीनी संपदा थई ऋषभदेवनइं ३ बारहजार छसइं अनइं पचास वादीथया श्रीऋषभदेवनइं
लमईणं संपया होत्था उसभस्स णं ३ बारससहस्सा छच्चसया पन्नासा वाईणं उसभस्स णं ३

वीस हजार साधु नादीक्षित मोक्ष गया च्यालीस हजार साध्वी मोक्ष गई श्रीऋषभदेवने २ बावीस

वीसं अंतेवासीसहस्सा सिद्धा चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ सिद्धा उसभस्स णं २ बावी

हजार अनंतवर्ष अणुत्तरविमाननाजाणराथया एकावतारी नइकनी उत्कृष्टी अणुत्तरविमानवासी

ससहस्सा नवसया अणुत्तरोववाइयाणं गइकल्लाणाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाई

नीसंपदाथई श्रीऋषभदेवनइ बेप्रकारनी अंतकृतभूमि कुंइ एहवी भूमीक गपाटनी सख्याते कगांतकृतभू

याणं संपया होत्था उसभस्स णं २ दुविहा अंतगडभूमी होत्था जुगंतगडभूमी परियायंत

तेपर्यायकृतभूमी ऋषभ मोक्ष गयापछी असंख्याता पाटलगे मोक्षमार्ग वह्यो ते जुगांतकृ आ तमुहूर्त केवलपछी मुक्ति गयो कोएक

नकृभी

गडभूमिय जाव असंखिज्जाओ पुरिसजुगाओ जुगंतगडभूमी अंतमुहुत्तपरियाए अंतमका

मरुदेवी सीद्धि न तिणइकाले तिणइसमयइ ऋषभदेव कोसलदेशना तेहनइ २ वीसहजार पूर्व

या २०

कासी २० तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभे णं अरहा कोसलीअस्स २ वीसं पुव्व

सय सह

सीपर्याय तेकेवला पाम्यापछी केतलाएक सिमुक्ति मा गयथा

द्वितीय

१०१

कुमारवासमध्ये वसीरह्यानइ त्रेसठलिपूर्वलाग्याय राज्यमध्ये नामवीनइ त्रासीलाख

स्साइं कुमारवासमज्झे वसित्ता तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं रज्जवासमज्झे वसित्ता तेसीइं

पूर्वलगीइ गृहवासीरह्या वसीनइ एकसहस्रवरस छद्मस्थावस्थापणइ रहीनइ एक

पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता एगं वाससहस्सं छउमत्थपरियायं पाउणित्ता ए

पूर्वलाख सहस्रवरसऊणं केवलीनउपर्याय संपूर्णलाखनउ पालीनइ लाखपूर्व एक

गं पुव्वसयसहस्सं वाससहस्सूणं केवलिपरियायं पाउणित्ता पडिपुण्णं पु

लाख चारित्रनउ पर्यायप्रति पालीनइ चउराशीलाखपूर्व सर्वआ

व्वसयसहस्सं सामण्णपरियायं पाउणित्ता चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं स

आयु पालीनइ क्षयथइ वेदनी आयुनामगोत्र अवसर्पिणी पांचमा आराना ... सुषमदुषमा

व्वाउयं पालइत्ता खीणे वेयणिज्जाउयनामगोत्ते इमीसे ओसप्पिणीए सुसमदुसमाए समाए

घणु वितिक्रमतइ त्रिणिवरस साढाआठमास मासनइ शेषथाकतइ शियालानामास ...

बहुविइक्कंताए तिहिं वासेहिं अद्धनवमेहिं मासेहिं सेसेहिं जे से हेमंताणं

त्रीजइमास पांचमुपखवाडु माघवदि ... माघवदिनी तेरसिनइ दिवसि

तच्चमासे पंचमे पक्खे माहबहुले ॥ तस्स णं माहबहुलस्स तेरसीपक्खेणं उ

ऋषभि अष्टापद पर्वतनइ सिषरि १०००साधसहित अणगारमुनी संघाति छउपवास चउविहार

प्पिं अट्ठावयसेलसिहरंसि दसहिं अणगारसहस्सेहिं सद्धिं चोद्दसमेणं भत्तेणं अ

नपकी धइ घिकड अभीचि नक्षत्रि चंद्रमायोग प्रवर्त्तता ... पूर्वाह्नकाल समय ...

पाणएणं अभीइणा नक्खत्तेणं जो॥ ... गमुवागएणं पुव्वण्हकालसमयंसि

पर्यंकासनि बइठइ थिकउ कालकर्या ॥ ... सर्वदुःखक्षीण थया ... श्रीऋषभनइ ... मरण

संपलियंकनिसन्ने कालगए सव्व॥ ... दुक्खप्पहीणे ५० उसभस्स णं अर

वत ... सर्वदुःखक्षीण थया ... त्रिणवरस ... माढाआठमास ... तिहारपछी ... एकसागरो

हओ जाव सव्वदुक्खप्पहीणस्स तिन्नि वासा अद्धनवमा य मासा विइक्कंता तओ वि परं एगा साग

पमनी कोडाकोडि त्रिणवरस माढाआठमासअधिक बइतालीससहस्रवरस ऊणउ थिकउ

रोवमकोडाकोडी तिवासअद्धनवमासाहिया बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणि १०४

अतिक्रमिगयउ एणइसमइ श्रमणभगवंत श्रीमहावीर मोक्षिमार्गि पुहता तिहारपछी नवसइवरस

या विइक्कंता एयंमि समए समणे भगवं महावीरे परिनिव्वुए तओ वि परं नव वाससयाइं वि

अतिक्रमतइ दशमासुनउ वरस ... एकसीमउवरसि ... ...इतिश्रीऋषभचरित्रसमाप्तं तेणइकालि

इक्कंता दसमस्स य वाससयस्स अयं असीइमे संवच्छरे काले गच्छइ ॥ तेणं कालेणं ते

इ तेणइसमइ श्रमणभगवंत श्रीमहावीरनइ ॥ नवगछअनइ इग्यारगणधर ॥ ... ॥ ... ३

णं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा इक्कारस गणहरा हुत्था ॥ से

... तेष्यापणी ... भगवंत ... श्रमणभगवंत श्रीमहावीरनइ नवगछ इ

केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा इ

ग्यारगणधरहवा ... ॥ ... श्रमणभगवंत श्रीम हावीरनइ ज्येष्ठवडु इंद्रभूतिअणगार गौ

क्कारस गणहरा हुत्था ॥ समणस्स भगवओ महावीरस्स जिट्ठे इंदभूई अणगारे गो

तमगोत्रवंत पांचसइश्रमणवाचनादीइ ... विचिलानार्ड्अग्निभूतिइ ... अणगार गोतम ... गोत्रनाधारक

यमसगोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ [struck through] अणगारे [struck through] गोयमसगोत्तेणं

↓मज्झिमअग्गिभूइ

हराकुतिअक
पितनीदअव
जन्यानाठमा
वाद्वनाग्हवा
घनामसगनीम
नार्यग्प नीग
का॥ वा व
नाहवा वा।
वनानवअन
इगछनवज
णिया॥

शिष्यसूबडु॥
नगवननवगा।
छइग्यारगणध
रहवा तम्यान
णी कहिवाउ
इमउ तीर्थ
क। र न
इउ॥ तेना
गण ध र।
तिनना क्रिय
छक्कइ थना:उ
रबइथ्याउसम
गणा तावइ:
यानम्मगण।

पांचसै श्रमणवादीनइं भणावइ छइ लहुडउ भाई अणगार वायुभूति गौतम गोत्रवंत पांचसै श्रमणवादीन

पंचसमणसयाइं वाएइ कणीयसे अणगारे वाउभूई गोयमगोत्तेणं पंचसमणसयाइं

इं भणावइ छइ ... थविर आर्यव्यक्त भारद्वाजगोत्रनइ विषइ ... पांचसइं श्रमणवादीनइं भणावइ छइ थविर आर्य सुधर्मा ...

वाएइ थेरे अज्जवियत्ते भारद्दाएगोत्तेणं पंचसमणसयाइं वाएइ थेरे अज्जसुहम्मे

अग्निवेश्य गोत्रधारी पांचसइं श्रमण वादीनइं भणावइ छइ थविर मंडितपुत्र वासिष्ठ

अग्गिवेसायणगोत्तेणं पंचसमण सयाइं वाएइ थेरे मंडियपुत्ते वासिट्ठ

गोत्रधारी अढीसइं श्रमणनइं भणावइ ... थविर अकंपित गौतमगोत्रधा

सगोत्तेणं अद्धुट्ठाइं समणसयाइं वाएइ थेरे अकंपिए गोयमगोत्तेणं

थविर अचलभ्राता हारितायनगोत्रधर ... बिहुं स्थविर ... त्रिणि सइ श्रमण

थेरे अयलभाया हारियायणगोत्तेणं पत्तेयं ते दुन्निवि थेरा तिन्निसमण

... थविर मेतार्य थविर प्रभास बिहुं थविर ... कौडिन्यगोत्र त्रिणि सइ श्रमण

सयाइं वाएंति थेरे मेयज्जे थेरे पभासे दुन्निवि थेरा कोडिन्नागोत्तेणं तिन्निसमण

+ थेरे मोरियपुत्ते कासवगोत्तेणं ... अद्धुट्ठाइं समणसयाइं वाएइ

... आर्य ... श्रमण भगवंत श्रीमहावीरनइ नवगण इग्या

सयाइं वाएंति से तेणट्ठेणं अज्जो एवं वुच्चइ समणस्स भगवओ महावीरस्स नवगणा इक्का

... गणधर ... श्रमण भगवंत श्रीमहावीरनइ इग्यारइ गणधर

रसगणहरा होत्था ३२ सव्वेएए समण भगवओ महावीरस्स इक्कारसवि गणहरा दुवा

... चउद पूर्वधर ... राजगृह नगरि मा

लसंगिणो चउद्दसपुव्विणो समत्त गणिपिडगधारगा रायगिहे नयरे मा

... जलरहित ... सर्व दुःख ... थविर इं

सिएणं भत्तेणं अपाणएणं कालगया जाव सव्वदुक्खप्पहीणा थेरे इंद

भूति थविर आर्य सुधर्मा ... श्री महावीरनइ ... बिहुं थविर ... मोक्षि ...

भूई थेरे अज्जसुहम्मे सिद्धिंगए महावीरे पच्छा दुन्निवि थेरा परिनिव्वुया जे इमे अज्ज

श्रमण निग्रंथ ... विचरइ छइ ... सुधर्मा गणधर ...

त्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एए णं सव्वे अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स आवच्चिज्जा अ

॥श्रीवीरपाटिसुधर्माग णधरपांचमा तेहसुधर्मस्वरूप कोल्लागसंनिवेसवासी धम्मिलविप्र घरणी भद्दिला तस्सुत्रसुधर्मा चौद
विद्यानिधान पंचासवर्ष सपदीसयम उपवरसश्रीवीरसेवा पवइसबारवरसछद्मस्थ। व स्था पचइसवरसकेव
लीपणइ एवंसवव र स श्रीसुधर्मास्वामी वडाश्रीसुधर्मास्वामी सिद्धिपहता जंबूनइश्र ७ प गुपाटदेइ जंबू
स्वामिनुस्वरूपकहीइ। रा जगृहनगरि ऋषभदत्तश्रेष्ठि धारिणीघरणी तेहसुतजंबूपदम। स्व गंधीववीकपतु नाम
जंबूद्वीपइश्रतुक्रमियोव नवानहतु श्रहतुस्वधर्मस्वामिकहइधर्ममानलीवैराग्यतनकइ रितुं पितानइहढ्‍श्रायहक

तीनरक्षित वेदांणी ३३ श्रमणभगवंत श्रीमहावीरनांत्र काश्यप गात्र् श्रमण
वासम्माणगणहराणिरवच्चासुच्छिन्ना ३३ सम णस्सभगवंओमहावीरस्स कासवगुत्तस्स समण
भगवंत श्रीमहावीरनेव कास्यपगोत्र तेह नहमाटि आर्यसुधर्माश्रीवीरनातुधर्म पांचामाशिष्य अ
स्सभगवओमहावीरस्स कासवगुत्त। स्स अज्जसुहम्मेथेरे अंतेवासी अ
गिवेसायन गोत्रधर थिवर आर्य सुधर्म तेह अग्निवेसायन गोत्रवतनइ आर्यजंबूनामा
ग्गिवेसायणगुत्ते थेरस्सणंअज्जसुहम्मस्स। स्स अग्गिवेसायणगुत्तस्स अज्जजंबुना।

शाठकन्यापरिणावी रात्रिइंद कंन्यानइप्रतिबोधइवइ एहवइप्रभवपांचसइचोरस्यंचपरवरिउ ति। हांआवि श्रावकधाछी
नीकल्ही ठक्कुरजीकह १ एककथाप्रभवइकही एकथाजंबूइकही एवं८कथामतिवा २ प्रभवजाणवा सहमु
तवोधपामिउ प्रभा त सु धर्मागणधरैस्यमीपिडकन्यानीमावापठकन्याएवंरथ जं बू श्रनइजंबूनामा।
वाप एवंरथप्रभवपांच प वंपरुषमंघातिसंयमलीधु पणकोडिसुवर्णछांडीतपतपइ के वलज्ञानइ पहुवासि
र्दवरस वदसछाहंरथवर। सकिवलिधवरस एवंपवरसमवर्षश्रायुपालीप्रभवनइपाटस्थापी। मोक्षिपहता बारवरसे

ज्ञानामिद्धाःवीरात्‌वीर सक्तिसुहम्मोः वसंक्षिगइजंबू वुच्छिन्नातइदसवाणा १ मणपरमोहिपुल लाएइआहारगखवगुवसय
उवसमादकप्पउसय। मं तियडाकेवलएयसिद्धिजंबूमिवुच्छिन्ना २ तिह्नाणुइकेवणाकाहि आ ३ जिणुक्तियाअछय
वालीयाउ मोक्ष बु मा मीपद्दमोत्तुणीण अपडिमोनदव्वकेवलीण इ लोगा त्त रे हिसीतायु जंबू
स्वामिमहामुनिः अ स्या पियप्रतिप्राप्य शिवश्रीनाव्यमिच्छति ध लोकोत्तरतिश्चइ ७ तागु जंबूस्वामीश्मोटु
यतो मोक्षरूपिणीस्त्रीइ जिवरी अनेरानीवाबानकरी एहवाजंबूस्वामिहवा एकदाप्रभव। स्वामिइउपयोगदीधु ग

र्नामिथिवर रसुधर्मानाशिष्य तेहतुंकाश्यपगोत्र थिवरजंआर्यवमा जंबूनामिइथिवर तेहकाश्यपगोत्रीनइ तेहत
सथेरे अंतेवासी कासवगुत्ते थेरस्स। णंअज्जजंबुनामस्स कासवगुत्तस्स अज्ज
महधारीआर्यप्रभवथिवर पांचमाशिष्य कात्यायनगोत्रध रथिवरनअइ आर्यप्रभवनइ तेहतुकात्या
प्पभवेथेरे अंतेवासी कच्चायण गुत्ते थेरस्सणंअज्जप्पभवस्स कच्चा
यनगोत्र तेहनइपाटिआर्य शिष्यभवथिवरधयाता। नाशिष्य मनकपिता वच्छगोत्री थिवरनइ आ
यणगुत्तस्स अज्जसिज्जंभवेथेरे अंते वासी मणगपिआ वच्छसगुत्ते थेरस्सणं

छमाहितथाश्रीसंघमा हंतिहांतेहनुशिष्यकोनदीवडपाटयोग्य अन्यदर्शनीयराजगृहनगर। शिष्यंभवभट्टयागकर
उदावउ तिहांयती पं कहिउ आहोकष्टमहोकष्टतत्वंनज्ञायतेपर एहवुंमनलावि उ तिनलहशिष्यंभवभट्ट
इवइजईपासिधा स्य बू वेदागाम्नायप्रति एतलइब्राह्मणखड्गकाडीउंशिरबोदेत वै या यं एहवउकहिउं
यागनिकरणहार या गनापीलाहेविश्राज्ञातिनाथश्रजिनादेवानिउ कहिउंएतवं पा व प्रतिबोधपाम्या प्रभव
स्वामिसमीपिजईदीक्ष रलीधी श्रीप्रभवरस्वामिउपवरस बम्भसायस्थायुपवरस सर्वायुठ पवरसप्रतिपालानइश्री

शिष्यं नवं पाठयित्वा पाठयित्वा । थि(स्थि)तः ॥ शिष्यं नवनदिक्रमं यमलीश्च तिष्ठारंभमाधानश्रीसुंकीरहती तीणंश्रवत्रमविद्य मनक
तत्र तन्नाम मनक इति । मातापितृसंबंधि मातृपिता किं ज्ञात्वा कथितं न मया लघुविहार क रहस्यं कथितं पिता
कालिकाः ईति तत्रैव शिष्यं नवं सूरिर्निमित्तेन ज्ञात्वा अरब्धमासं । अल्पायुःकं ज्ञात्वा आचार्य
ईसा सती विस्ताराद्दशः अध्ययनकोष्ठा दशाध्याय उद्धृत्य रचितवान् तत्दशवैकालिकम् । ततः शिष्यं स्वर्गसूरि
त्रिशय्यंभवनामा दृष्टा ॥ तस्मिन् शिष्ये नवगणधर ज्ञिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धे मणगपिउ । रदस गाल्लियमानि कृत्वा

शय्यंभवः शिष्यं नवं मनकपिता तस्य वत्सगोत्रस्य तस्य आर्ययशोभद्रः स्थविरः अन्तेवासी शिष्यः तुंगि

अज्जसिज्जंभवस्स मणगपिउणो वच्छसगुत्तस्स अज्जजसभद्दे थेरे अंतेवासी तुंगि

आयनगोत्रधरः एवं संक्षेपवाचनायां आर्य यशोभद्रात् अग्रतः एवं स्थविरावली

आयणसगुत्ते संखित्तवायणाए अज्जजसभद्दाओ अग्गओ एवं थेरावली भणि

कथिता स्थविरस्य आर्ययशोभद्रस्य तुंगिका यनगोत्रस्य नाम धारणस्य अन्तेवासी शिष्यौ द्वौ स्थविरौ स्थविर

या तं थेरस्स णं अज्जजसभद्दस्स तुंगिय यणसगुत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा थेर

गर्वाद् २ मणगपक्ष्मसि । संसारवर्ण तिक्त ज्ञात्वा आदरपूर्वकं वैराग्यात् संघात्सनमालिनं नाम २ ब्रह्मात्मकं शिष्यं
अध्ययनं मणगस्स । मणगेण ब्रह्मामायरि आत्म अहंकालं गत्वा मासात्तत्वं २ आगतेषु ययुः कालिकं मिश्रं मा वात
छिपिए तस्मात् समयं यशोभद्रः कालधर्मयुक्तं विज्ञातसंघ ४ वत्सा रिमाविबुं ण व २ मोहपिता
ज्ञ तत्र तिक्ति ता । समयश्चान्यस्य थीरत्वात् कामसुखं १ अंत्र कर्मनिश्चयादि १ एवं द्वासश्च ग्रिसुहता
तस्य यशोभद्रस्य वर्षराः । गृहवासे वर्षाः दीक्षावर्षाः पर्यायवर्षाः सर्वायुः तथा यशोभद्रस्य सा शय्यंभवानां कृतिवि

१०५

ज्ञाय आचार्यमहारसुत्त का कालेनेव मधुराक्षरं ज्ञात्वा कालमपरे न विदितः । मतइद्वाक्यमनुसारेणात्र १ न ... दवाक्यं दक्षवा मिथ्यावधेयं
तथा अंश सुरिपदवर्षा । १४ सर्वायु वर्षा ३ दत्तिदनात्प्रभृति शिष्य भद्रबाहुश्च वर्षे कोशाच रिछिया सू दि विशेषविरुद्धेषु तद्द्वता
शयवयं सिरीया । ना वी दादश ज्ञानविषयनदीकूलमंकडाला मरणपरि सि उ नंदवंश्यादिषु सिरी
यानि सर्वज्ञापारंभ १ दिवामारा ज्ञानविज्ञमनसा पानीयं पिता मरणपक्षधिकारयुक्तः उ अधिकारदत्तस्य पहयुक्ता
णी ममारविरमत्र मारज्ञा । णीवारित्र श्रीकारकरित्र आसनादयो धावमश्चादि समानश्चार्वान्ते दसूपितिन्देश्व मत्वा नदाधु

आर्य संभूतिविजयः माठरगोत्रः स्थविरः आर्य भद्रबाहुः प्राचीनगोत्रः स्थविरस्य

अज्जसंभूइविजए माढरसगुत्ते थेरे। अज्जभद्दबाहू पाईणसगुत्ते थेरस्स णं

आर्य संभूतिविजयस्य माठरगोत्रस्य धारकस्य अन्तेवासी शिष्यः स्थविरः आर्यस्थूलभद्रः

अज्जसंभूइविजयस्स माढरसगुत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जथूलभ

गौतमगोत्रवान् स्थविरस्य आर्यस्थूल भद्रस्य गौतमगोत्रवतः अन्तेवासी शिष्यौ द्वि

द्दे गोयमसगुत्ते थेरस्स णं अज्जथूल॥ भद्दस्स गोयमसगुत्तस्स अंतेवासी दु

सज्जाकच्छिपक्ककादिकर्मा हतश्चाप्लावाश्चादित्र पदसंभूतिविजयस्य शक्तिकालिकदीक्षालोध १ व्यावृत्तिशिष्यस्थूलभद्रस्ते देवी
नंदिपवच्छक्कमाहस्स्वयं १ नइ आदिम बीजानदष्टा विपसर्पनिलपासइआदिम त्रीजा॥ सू ततस्तत्कोशाया वेश्या
नइपरिश्वादशा । सु ध नंदकश्चास्त्रादिवहि एया रिश्चादिशमागीतिहासुखि ३ इ उमासेरहानश्चा
न्या श्रीस्थूलभद्रश्चा॥ व मादपायस्तमपुणस्त्रिलिवारक्षकरकारकहिक्क तिरस्मात ली मातृष्यका स्थितसाधुन
इरामघ दिश्वाकोशा॥ नापरानइविमानस्युखिङरस्थित तेहनइपवइमान चश्रात्मपणि आय तइस्युमामइतिहारश्चामिद

अनिमानकयुग्मबारनह तिहागया वेश्यानकमवियपकोश्याकंतेश्रावत्तदीक्षित देशीमरागवचनेपामित्र धर्मलाभकहित तिह्मारककहित
अर्थलाभस्कसकाम तन्निहा भिक्षुवर्षाविरमतह दोहलहलेमानादेशाडई रत्नकंबललेईआव्य उवेश्यानहआपित्र वेश्याह
मरमित्रपगलूहीनालम । हिनावित्र यतीकहइरत्नकंबलकीधी वेश्याइकहित्र स्थे करित्रातमइकहित्र वारि
त्रकूपरत्नकंबलेश्र। स्था रा आरोरमनसूत्रइहरिया अथविनाश्रानमिरीपा ति ही उ ह्मवारित्रनागमित्र
एववतपीमनिबोधित्र थु स्कंकेलिडाईआलोयणलीधी श्रीस्थूलिभद्रइवाद्रवामिवर्षा। इ ववर्ष३०धदीक्षा ४४वर्ष
गृहस्थनपदवी सर्वायुवर्ष। ९९मास५दिन५ महागिरिस्थूलिभद्रनइपदेदईस्वर्गेगहता सुह्मणि अणुत्र मसुग्रणपडमय
शिष्यस्थविर तेकेहा स्थविरआर्यमहागिरी एलावर्समगोत्रनेथ दजईआर्यकहइतामफास्थिवर आर्यसुहस्तिसूरि वासिष्ठगो

थिथेरा थेरअज्जमहागिरी एलावच्छ सगुत्ते थेरअज्जसुहत्थी वासिट्ठ।

अनाधणी स्थविरनह आर्यसुहस्तिनह वा सिष्ठगोत्रनानह अंतेवासी बिइस्थविरशि

सगुत्ते थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वा सिट्ठसगुत्तस्स अंतेवासी दुवाल

ऽऽऽ॥ ॥ऽऽऽ

वसंताण सुहस्समहापाणामित्र सुस्थित्रासुप्रतिबुद्धस्थि २ पक्षितुंसंघयणार पक्षितुंसंस्थान २ सूत्रनमहापाणधांतर सूर्यांत्रयोगध्यतलावा
नाविस्थितिनिगया श्रास्थूलि। नइसमयातिकूबिछेदमामि जिनकल्पजिनकल्पनात्रगणाकीधी आर्य सुहस्तिसूरिइसमप्रतिराजाय
तिबोधित्र आर्यसुहस्ति सू रिइवर्षगृहवासिरधवर्षव्रतइधवर्षयुगप्रधानपदसर्वायुरए प मामह दिनइसुस्थितसु
प्रतिबद्धथिरकोटि कू ग णहवत्र तेहनावाशिष्यइंद्रदिन्नप्रमुखहवा तेह म ध्ये विद्याधरशिष्यथि
कुविद्याधरीशाषाहवी प लिअहीकणिवडानणीपाटधरतणीइंद्रदिन्नजिलीधा ते। ह नाशिष्यआर्यदिन्न ते
हना।शिष्य संतिसेन सी। हगिरि आहीवडानइपाटधरतणीसीहगिरिकहिया सीहगिरिम नाधशिष्य धनगिरिरवज्र

१०६

१ सीमिगिरिआरइदिन्नधण्या शिष्य प्रणिदआर्यवंतापाधिकतणीइछावइरस्वामिजिलीधा श्रीव ज्रस्वामिथीवइरीशाषाह
वी एहवकाकथामणा। न इआधिकोरिकोटिकगणवइरीशायावइक्रमनआस्यकइइ मा हइरइएसुधिसधकीप
णविसरवावतनाजाणवीजे २वतीणमिरिरविकिएण मिक्रामित्रसुनतीप मिरिविघरसूत्रदाई सुम नइयुतिनासूकआयनउ१

थ सुस्थित सुप्रतिबद्ध कोटिकअनइ काकंदिक व्याघ्रापत्यसगोत्रनाकमना स्थविरसुस्थितअनइसुप्रतिबद्ध

रा सुट्ठियसुप्पडिबुद्धा कोडियकाकंदगा वग्घावच्चसगुत्ता थेराणं सुप्पडिबुद्धाणं को सुट्ठिअ

बिलक्षनामपकनांजि कोडिसूरिमंत्रजपसरिखनइतणीकोटिक गण-का कंदीनगरीनाअधसनातणी व्याघ्राप त्यगोत्रतेहनाशिष्य स्थविरअंतेवासी आर्यइंद्रदिन्नसूरि तेहवं

डियकाकंदगाणं वग्घावच्चसगुत्ताणं थेरअंतेवासी अज्जइंददिन्ने को

कोशिकगोत्र२० स्थविरआर्य इंद्रदिन्ननइ का शिकगोत्रवंतनइ अंतेवासीशिष्यस्थविरपानाना

सियगुत्ते थेरस्स णं अज्जइंददिन्न स्स कोसियगुत्तस्स अंतेवासी थे

शिष्य आर्यदिन्न तेहनउगोतमगोत्र२१ ते स्थविरआर्य दिन्ननइ गोतमगोत्रीनइ अंतेवासीशिष्य स्थ

रे अज्जदिन्ने गोयमसगुत्ते थेरस्स णं अज्जदिन्नस्स गोयमसगुत्तस्स अंतेवासी थे

कोमलीणउकणफसगोमा॥ स्राविवनववाउ ग्राणीएमपडशमा मोवदइसुइज्ञी।१ ववदसम्र ग्राबिनवासमएमत्रहेर्वाह्ल
आहित्रमि नदृबाहि मि जाउ दसमिहशीतातणकनमा१ हर्वविर्भदनतविछिदश्री। वा हविद्यणएबीरएमर
मिहवत्र शीनदनाहिश्र॥ मिपयी तणोइमहत्नोजीस्वामिदआयवनी।नयीक्षकीधी आमरण। का२देशाबेकालिकउत्र

[illegible]

[illegible]

रे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसियगुत्ते थेरस्स णं अज्जसीहगिरिस्स कोसियगुत्तस्स

[illegible]

अंतेवासी थेरे अज्जवइरे गोयमसगुत्ते थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोयमसगुत्तस्स

[illegible]

स्स अंतेवासी थेरे अज्जवइरसेणे ण कोसियगुत्ते थेरस्स णं अ-

[illegible]

ज्जवइरसेणस्स कोसियगुत्तस्स अंतेवासी चत्तारि थेरा थेरे अज्जनाइले थे-

[illegible]

रे अज्जपोमिले थेरे अज्जजयंते थेरे अज्जतावसे थेराओ अज्जनाइलाओ अज्जनाइ- १०५

[illegible]

[illegible]

ली साहा निग्गया थेराओ अज्जपोमिलाओ अज्जपोमिली साहा निग्गया थेराओ अ-

[illegible]

ज्जजयंताओ अज्जजयंती साहा निग्गया थेराओ अज्जतावसाओ अज्जतावसी साहा नि-

[illegible]

ग्गया इति वित्थरवायणाए अज्जजसभद्दाओ अग्गओ थेरावली एवं

[illegible]

पलोइज्जइ तं थेरस्स णं अज्जजसभद्दस्स तुंगियायणसगुत्तस्स इमे दो थे-

[illegible]

रा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था तं थेरे अज्जभद्दबाहू पाईणसगुत्ते थे-

[illegible]

न्नाया हुत्था । थेरे अज्जमहागिरी एलावच्चसगुत्ते थेरे अज्जसुहत्थी वासिट्ठसगुत्ते । थे-
रस्स णं अज्जमहागिरिस्स एलावच्चसगुत्तस्स इमे अट्ठ थेरा अंतेवासी अहावच्चा
अभिन्नाया हुत्था । तं थेरउत्तरे ॥ थेरबलिस्सहे थेरधणड्ढे थेर-
सिरिड्ढे थेरकोडिन्ने नागनागमित्ते ॥ थेरछलुए रोहगुत्ते कोसियगुत्तेणं
थेरेहिंतो णं छलुएहिंतो णं रोहगुत्तेहिंतो कोसियगुत्तेहिंतो तत्थ णं तेरासि- १०८

आसाढा निग्गया । थेरेहिंतो णं उत्तर- बलिस्सहेहिंतो तत्थ णं उत्तरबलिस्सहे
नामं गणे निग्गए । तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ एवमाहिज्जंति । तं को-
संबिया सुत्तिवत्तिआ कोडंबाणी चंद- नागरी । थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासि-

विद्यंवनद्यार अथइंद्रिणोवक्षमाणान्नि॥२॥इतिराइसुत्तमंबंधमनूर्णा॥

[illegible]

११४

[illegible]

ऋषिदत्तिक कालकाणिवत्र तृतीय अभिजयन्त त्रिणिकुल मानवगणनां १ स्थविर स्थि

अ इसिदत्तिअं मुणेयव्वं तइअं च अभिजयंतं तिन्नि कुला माणवगणस्स १ थेरेहिंतो

सुस्थित सुप्रतिबद्धस्थविर कोटिक काकंदिक स्थविर व्याघ्रापत्यम गोत्रस्थिर इहां स्थिर

सुट्ठियसुप्पडिबुद्धेहिंतो कोडियकाकंदएहिंतो वग्घावच्चसगुत्तेहिंतो इत्थ णं

कोटिकगच्छ गणइनामि गच्छनीकलिउ तेहनाइहवी च्यारिशाखा नीकली च्यारिकुल एहवुं

कोडियगणे नामं गणे निग्गए तस्स णं   इमाओ चत्तारि साहाओ चत्तारि कुलाइं एव

कहीइ तद्यथा उच्चानागरीशाखा विद्याधरीशा खा वज्रीशाखा मध्यमाशाखा कोटिक

माहिज्जंति तं उच्चानागरि विज्जाहरी   य वइरी य मज्झिमिल्ला य को

गच्छी एहवीशाखा कहुं च्यारि शाखा तेकिस्याकुल एणीपरिकहीइ पहिलुंकुल बंभलि

डियगणस्स एआ हवंति चत्तारि साहाओ॥ से किं तं कुलाइं एवं २ पढमित्थ बंभ

ज्जकुल बीजुनामिइ वस्त्रलिज्जकुल ३ त्रीजुवली वाणिज्यकुल ४ चउथु प्रश्नवाहनकुल ४ १ स्थविर

लिज्जं बिइअं नामेण वत्थलिज्जं तइअं पुण वाणिज्जं चउत्थयं पण्हवाहणयं १ थे

सुस्थित सुप्रतिबद्धनइ कोटिकगच्छनइ काकंदिकनइ व्याघ्रापत्यमगोत्रनइ एपांचस्थविर

राणं सुट्ठियसुप्पडिबुद्धाणं कोडियकाकंदगाणं वग्घावच्चसगुत्ताणं इमे पंच

११२

अन्तेवासिशिष्य शिष्यअपत्यानि प्रसिद्धगुणकीर्तिवा तद्यथा स्थविर आर्य इन्द्रदिन्न प्रियग्रन्थ स्थविर विद्याधरगोपाल

रा अंतेवासि अहावच्चा अभिन्नाया होत्था तं जहा थेरे अज्जइंददिन्ने पियगंथे थेरे विज्जाहरगोवा

काश्यपगोत्री स्थविर ऋषिदत्त स्थविर अर्हद्दत्त स्थविर प्रियग्रन्थकी इहां मध्यमाशाखा नीसरी

ले कासवगुत्ते णं थेरे इसिदत्ते थेरे अरहदत्ते थेरेहिंतो णं पियगंथेहिंतो इत्थ णं मज्झिमा साहा नि

स्थविर विद्याधर गोपाल गोपालथकी इहां विद्याधरीशाखा नीकली स्थविर आर्य इन्द्रदिन्न

ग्गया थेरेहिंतो णं विज्जाहरगोवालेहिंतो इत्थ णं विज्जाहरी साहा निग्गया थेरस्स णं अज्जइंददि

काश्यपगोत्रीनइ आर्यदिन्न स्थविर अन्तेवासीशिष्य गौतमगोत्रीय स्थविर आर्य दिन्ननइ गौतमगोत्रीनइ

न्नस्स कासवगुत्तस्स अज्जदिन्ने थेरे अंतेवासी गोयमसगुत्ते थेरस्स णं अज्जदिन्नस्स गोयमसगु

एह स्थविर अन्तेवासीशिष्य शिष्यअपत्यनी परइ प्रसिद्ध जथा तेजिम स्थविर आर्य शान्तिश्रेणिक माढरगोत्रीय

त्तस्स इमे दो थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था तं जहा थेरे अज्जसंतिसेणिए माढरसगुत्ते थे

स्थविर आर्य सिंहगिरि जातिस्मर कौशिकगोत्री स्थविरथकी आर्य शान्तिश्रेणिक माढरगोत्री थकी इ

रे अज्जसीहगिरी जाईसरे कोसिअगुत्ते थेरेहिंतो णं अज्जसंतिसेणिएहिंतो माढरसगुत्तेहिंतो इ

हवी उच्चनागरी शाखा नीकली स्थविर आर्य शान्तिश्रेणिकनइ माढरगोत्रीनइ एच्यारिस्थविर अन्तेवा

त्थ णं उच्चानागरी साहा निग्गया थेरस्स णं अज्जसंतिसेणियस्स माढरसगुत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंते

सीशिष्य शिष्यअपत्यनी परइ प्रसिद्ध हवा तद्यथा तेजिम स्थविर आर्यश्रेणिक स्थविर आर्य तापस स्थविर आर्यकुबेर

वासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था १०० तं जहा थेरे अज्जसेणिए थेरे अज्जतावसे थेरे अज्जकु

थिविर आर्यइसि ऋषिपालत थिविर आर्य ऋषिपालक्त इहां आर्यथ ऋषिपालनामे शाखा नीकली थिविर आ

थेरे थेरे अज्जइसिपालिए थेराहिंतो णं अज्जइसिपालिएहिंतो इत्थ णं अज्जइसिवालिया साहा निग्गया थेरेहिंतो ते

र्य तापसगोत्रकुबेर आर्य तापसी शाखा निसरी थिविर आर्य कुबेरथकी आर्य कुबेरी शा

णं अज्जकुबेरेहिंतो अज्जतावसी साहा निग्गया थेरेहिंतो णं अज्जकुबेरेहिंतो अज्जकुबेरीस

खा नीसरी थिविरथकी आर्यविवि ऋषिपालथकी आर्यविडी ऋषिपालकी शाखा नीकली थिवरसरण आ

हा निग्गया थेरेहिंतो णं अज्जइसिपालिएहिंतो अज्जइसिपालिया साहा निग्गया थेरस्स णं अ

र्य सीहगिरिनइ जातिस्मरणवंत कोसिकगोत्रीने ए च्यारि स्थविर अंतेवासी शिष्य जाणवा

सीहगिरिस्स जाईसरस्स कोसियगुत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया ऽऽऽऽ

॥हवि वैरस्वामिनो संबंध लिखिइ छिइ॥ तुंबवन नामे सन्निवेसनें विषें धनगिरि व्यवहारि तेहनें स्त्री सुनंदा ते आर्यसुमतिसूरनी बहिन तेहनी कुषें तिर्यकजृंभक देव नामा हि धीचवी उत्पन्न तरि धनगिरि वैराग्य पामीनें श्री धनगिरि गुरु श्री सीहगिरि संघातें वृतग्रहण विचारि आगिकरिउ स्वां धीश्र प्रमत्मारा इंड मानें संताप एहवें श्री धनगिरि आनसरिचें नेति विहरवा वेलाइं श्री गुरु नें पूछी विहरवा पांगरीइ एहवुं कहिउं गुरु कहिउं आहा धनगिरि आज सचित्त जे मिलि ते लेज्यो विहरवा पांगर्या सुनंदानें घरे गया सुनंदाइं कह्युं बालकनी संताप नी रीसे काइ पातरमां आपो मुनें आप्यो संताप किस गाम्यो धनगिरि इं कह्युं सा कुं नाह रे कुं हवुं ते आधार ते ए ग सेक हुं ए आधा वूटा गुरु नें आप्यो संताप किस गाम्यो धनगिरिइं कह्युं सा कुं तार रे कुं हवुं जे आधार ते ए आधारवें रीसे कहुं ए आधा रपोषे सरस्यु लेई जात गुरु वचन संतारी प्रमाण करी को ली मांकी मुनें दाइं बालक वोहराव्यो तत्काल तेरो तोर होवे रीधन गिरि श्री गुरु कहें पोह ता को ली गुरु हाथि दी धी तारें तेणें गुरें आस्यु व दीधुं आस्य वज्र जो युं [illegible] १५२

॥तुंबवन नामे सन्निवेस नइं विषइं धनगिरि व्यवहारी तेहनी स्त्री सुनंदा ते आर्यसमितसूरिनी बहिन तेहनी कुखि तिर्यक जृंभक देव नामा हिसा थाववी कुप नइ सुत्रपणइं अवतरिउ धनगिरि वैराग्य पामी वारि आगो करि कुं थु विह तत्र समित्र घण्य इ मातइं समताप इ एहव इं श्री धनगिरि गुरु श्री सीहगिरि सिघातइं व्रत ग्रहता विहरवा लाइ श्री श्री गुरु पूछीवि हरवा पांगरइ थुर कहिउ धनगिरि आज सचित्त थाइ चित्त जे मिलइ मल इतो लेयो विव रिसह श्री समझवा तजिम थिवर धनगिरि वइरस्वामिनु पिता २ थिवर वज्र नामा वयरस्वामि थिवर आर्यसमित थिवर आर्य अर्ह

नाया हुत्था तं थेरे अज्जधणगिरी थेरे अज्जवइरे थेरे अज्जसमिए थेरे अरिहदिन्ने

दिन्न थिवर थकी समित थिकी गौतमगोत्री ब्रह्मदीपिका थकी इहां बुह्मदीपिका शा

न्ने थेरेहिंतो अज्जसमिएहिंतो गो यमसगुत्तेहिंतो इत्थ णं बंभदीविया

खा नीसरी थिवर थकी आर्यव वयरस्वामि थकी गौतम गोत्री थकी इहां

साहा निग्गया थेरेहिंतो णं अज्जव इरेहिंतो गोयमसगुत्तेहिंतो इत्थ

वइरी शाखा नीकली थिवर आर्य वयरस्वामिनइ गौतम गोत्रनाइ ए त्रिणि थिवर

णं अज्जवइरी साहा निग्गया थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोयमसगुत्तस्स इमे तिन्नि थेरा

रवा पांगरिया सुनंदा नि घरि गया सुनंदाइं सलील रिसइ वाली बालकनी संतापी रीसइं कह्यु पोतइं बाई व्रत मुकनइं आमितसतापवल गा इउ धनगिरि कहि इउ साइ उ ता हरि कुंहवु जे आधार तइं रीसइं कहइउ आधार या पि इ सर समइ लेई जाउ गुरु वच न संतारी प्रमाण करी झो ली मांही मुनिदाइं बालक वहिरावि उ तत्काल रोतउ रहि उ। वहिरी धनगिरि श्री गुरु कह्या लि सुहता झो ली गुरु हाथि दीधी तारइं तेणी गुरु आसदी धउ आ सि ज्ञ पछइ वउ झोबु

[illegible]

आंतेवासीयानानाविष्य यथापत्यानि अभिज्ञातास्त्र ... स्थविर आर्यवज्रसेन

अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया हुत्था [illegible] वइरसे

[illegible] ११४

[illegible]

स्थविर आर्य पद्म स्थविर आर्यरथ स्थविर भिक्षु आर्य वज्रसेन भिक्षु

णए थेरे अज्जपउमे थेरे अज्जरहे थेर हिंतो णं अज्जवइरसेणिएहिंतो एत्थ णं

आर्यनागिली शाखा निःसृता स्थविर आर्यपद्मात् आर्यपद्मा

अज्जनाइली साहा निग्गया थेरहिं तो णं अज्जपउमेहिंतो अज्जपउम

स्थविर भिक्षु आर्यरथात् आर्य जयन्ती शाखा

साहा निग्गया थेरहिंतो णं अज्जरहे हिंतो एत्थ णं अज्जजयंती साहा निग्गया

[illegible]

दीधी समस्त्रगुणावाख्यानां मि दिसमूर्तमिनयरमि देवेक्षिकयामहिमा मयागुमारिनममामि।२ जोकस्तास्थधणेणाय नमति
उज्जयणणमिह्वयणा त यरमिक्कमुमनामा तवइरमितममामि ४ मोहालझिष्ठस्त को यात्क्यरनबालेनलीलय
२ मीनदीनदीत्मिह सू र स्ववज्ञार्षिसावायक्षय ५ जिणुहरियाविद्या आणा॥ स ग मामहापरिणय वंदा
मि अय्यवइर अपच्छिमो जो सुयहराणं ६ कुर्मिक्कपडिकमपनइकत्पुडइवइमारा॥ आ काशगामिनी विद्यां इ
मा लिखमतीनगरी इत्युहता निहालोष्धिज्ञेतनइकुलआपतावांत्या पञ्चमणनइधिवमिश्रा मनइमूजारहितकुशाम

स्थविर आर्यरथनरस्य तहस्य वत्सगोत्रीनइ आर्यपुष्यगिरि स्थविर अंतेवासी शिष्य कौशिकगोत्री स्थविर

थेरस्स णं अज्जरहस्स वच्छसगुत्तस्स अज्जपूसगिरी थेरे अंतेवासी कोसिअगुत्ते थेर

नइ आर्यपुष्यगिरिनइ कौशिक गोत्रवंत। नइ आर्यप्रधान फाल्गुनमित्र स्थविर अंतेवासीशिष्य

स्स णं अज्जपूसगिरिस्स कोसिअगुत्त स्स अज्जफग्गुमित्ते थेरे अंतेवासी

गौतम गोत्री स्थविरनइ आर्यफाल्गुनमित्रनइ गौतमगोत्रनाधरणहारनइ आर्यधनगिरि स्थविर

गोअमसगुत्ते थेरस्स णं अज्जफग्गुमित्ते। स्स गो. अमसगुत्तस्स अज्जधणगिरी थेर

तनीवनावनानइअर्धिइ। आवइरस्वामिइ अंतानायनयज्ञनानववधिअक्षरलआण्या यतः श्रु ताशनाक्षनवनाश्रुमानि
मालिखयरीयाजुयशनि। ना यथमावनायामहनीवकार: नत्रिवबोधप्रतिबोधनायाम।२ ए कदापक्षाविश्राहार
कस्यास्वविस्रुविषा वी उ कानवामारित्र पडिलहणकरणमानरित्र महाक्षो य मा दश्राविशुत्राद्य
श्रुघोकुज्ञाणीश्रणम। ण लीधुं वज्रस्वामिनशिष्यनइस्त्रनकनरकारणकहामायार इ मार्टणिमाकल्या व
इरस्वामिइअणमणघण रहनीमघातिकरित्र वइरस्वामिइष्टवासिवर्ष यतीयणइ४४ वर्ष युगप्रधानपदवर्ष

३६ सर्वायु८८वर्षमासइ दिन३ दसपञ्चाण वुएरबुछिनो जिरितवलिसमपन्नो वयरमिमहासन्नो संघयण अठनारा
य गरा पर्वसणसु वीरमाणपू०० अड गएसु वीरातनता वे इरामाहम्मा नही सुनंदागर्भसंउपन्नो ए पर्वसइ पण्मी
ए ५८५ वरीमसलिइइरइरिकश्रासाक्षजानावउइस्वामीवि आमी दस पूर्वधरानई यकाले।।२।। महागिरिसुहस्तान
ज्ञि श्री गुणसुंदरसामाचार्यस्कंधलकवर्तनीरि सूरिमित्र राट् १२ श्रीधर्मानिइगुप्तरय श्रीधर्मगुप्तसूरिराट् युगप्रधानप
दवा द्रोनाइ सस्वुमि ८२२ तह आर्यरकियामिइ वुछिन्नाइ छसट्टमनपुवी कालकम्मण हाणि इसम समया
एंनावेण ए आर्यसमितनावार्यथिकी ब्रह्मदीपिकाटवीतेमवंधलपीडविइ अचलपुरिनगरपासे बिनदीकुल

अंतेवासीशिष्य वाशिष्टगोत्रीनि आर्यशिवभूतिनि स्थविर अंतेवासी कौत्सगोत्रीन स्थविर आर्यशिवभूतिन कौत्स

अंतेवासि वासिठस्सगुत्तस्स अज्जशिवभूई अंतेवासी कुच्छसगुत्ते थेरस्स णं अज्जशिवभूतस्स अंत

गोत्रीन आर्यनक्षत्रस्थविर अंतेवासीशिष्य काश्यपगोत्रीन स्थविर आर्य नक्षत्र काश्यपगोत्रीन आर्यरक्षित अंते

सगुत्तस्स अज्जभद्दे थेरे अंतेवासी कासवगुत्ते थेरस्स णं अज्जनक्खत्तस्स कासवगुत्तस्स अज्जरक्खे थेरे अंते

२ वनाइ तेहविवालेवल्लनामकीपने [illegible] तिहां धणातापसनेपरिवारे परवस्यो देवशर्मनामे कुलपतिरहेतेमके
तेप्रमुखपर्वदिनमनेविष आपणा तीर्थनी प्रभावनाकरवाने अर्थेमिष्टलेतापसंपर वस्या पगलेपकरीनदीऊतर
अचलपुरे आव्यो लोकनेरहनो प्रभाव देखी विस्मयवंत थितहवा सविज्ञोपलोकनादिक आदरकरे प्रसंसाकरे आव
कोनां निंदाकरे उमारजैनमांहिं कोइएहवोप्रभावकनथी एतलेविहारकरता श्रीसमितिसूरि तिहांपधास्या श्रा
वकेसर्वसंबंधकहिउ श्रीगु[illegible]वीतवीकहिउएअप्रयोगनपरशक्तिनहीपछेश्रावकेतेहनोकप
प्रगटकरवा आदरकरी भोजनकरवा तेड्या कुलपतिपरिवारसहितजिमवा आव्यो भोजनवेलाइ श्रावकें पगपखाल

वामांम्या पगक्षो वानद्यें श्रावकें कहिउं श्रमारोमनोरथ बेपगक्षो याविना श्रमेहने हीजिमुं इमबलात्कारें पगक्षो
यालोजनदेईवलतांवुलाववा श्रावक नदीमध्येजातांबूडवालागा तेतलें तेहने श्रपत्यातना थई लोकमां
हेएहवे तेहने प्रतिबोधवाने श्रीसुमतिसूरश्राचार्यतिहां श्राव्याते हसमस्तलोकदेषतां कहिउं श्रेतादरो
पोरश्रमेवाछउं छउं तेनतेनदीइपारदीधो लोकसमस्तमहाविस्मयथयो परिवारसहितकुलपतिश्रार्य
एहिवउं प्रतिबोधपांमी कुलपतिपरिवारसहितदीक्षालीधी पछेयतीने ब्रह्मदीपिका साषाहवीने हवी ब्रा

वासीजा कासपगोत्री थिविरश्रार्यनागनामे थिविरश्रार्य कासपगोत्री श्रार्यनागनामश्रतेवासिक वासिष्ठगोत्रीन थिविरश्रार्यजिह
ष ने रक्षितनइ नइ षष गोतमगोत्रीन

हासी कासवगुत्ते थेरस्सणं श्रज्जरक्खस्स कासवगुत्तस्स श्रज्जनागे थेरे श्रंतेवासी वासिट्ठसगुत्ते थेरस्सणं

श्रार्यजेहिल थिविर वासिष्ठगोत्रीन

श्रज्जजेहिलस्स वासिट्ठसगुत्त॥

स्नणगछनी कल्पो श्रीवज्रसेनसूरिविहारकरतासोपारापुरपाटणजिणदत्तश्रेष्ठईश्वरीतायत्रिक्षा
डनिहिंश्रा कसेरो अन्नपामइंनहींएहवेलाष टकइंएकहांडोलीपरमांअन्ननीपना विषवांटेबेएहवे
श्रीवज्रसेनगुरुविहरवाश्राव्यानेश्रस्तावरेषीगुरुजीइंएहबेंजीएश्मुतिवारइंश्राविकाइंकहउंस्वामीश्रन्न 226
नइंश्रनावइ

ताविष्ठपमरणमाश्रोमिह श्रा पुरस्कहितमुनिकहांमिहंकामरणमाध्यपुरयस्मान्नविहरिस्ये तेणि जिदिवसिश्रवरुणश्राव्यां सु
निकहवसु जिनदत्तइ॥ श्रटवरुहितवातविर्ध युगमनमश्याजातव्रमरणयोभ्याखां। तेदत्तश्रेष्ठीश्रावकसाधी

संघश्रान विमुथिवर श्रतेवासीशिष्य माढरगोत्रीनइ थिवरनइ श्रार्यविष्णुनइ माढरस गोत्रीनइ

स्स श्रज्जविण्हुथेरे श्रंतेवासी माढरसगुत्ते थेरस्सणं श्रज्जविण्हुस्स माढरसगुत्तस्स

श्रार्यकालिक थिवर श्रतेवासीशिष्य गोतम गोत्री थिवरनेह श्रार्यकालिकनइ गोतम गोत्री

श्रज्जकालएथेरे श्रंतेवासी गोश्रमसगु त्ते थेरस्सणं श्रज्जकालगस्स गोश्रमसगुत्त

पविद्धथिवरशिष्यगोतमगोत्री थिवरश्रार्य संपलि सथिवर श्रार्यभद्रनइ पविद्ध थिवरनइ

स्स इमेदोथेरा थेरश्रज्जसंपलि ए थेरश्रज्जभद्दे एएसिंदोण्हथेराण

गोतम गोत्रीनइ श्रार्यवृद्ध थिवरश्रात श्रतेवासीशिष्य गोतम गोत्री थिवर श्रार्यवृद्धनइ

गोश्रमसगुत्ताणं श्रज्जवुड्ढेथेरे श्रंते वासी गोश्रमसगुत्ते थेरस्सणं श्रज्जवुड्ढ

गोतम गोत्रीनइ श्रार्यसंघपालित संघपालितथिवर गोतम गोत्री थिवरनइ श्रार्यसंघपालि

ड्ढस्स गोश्रमसगुत्तस्स श्रज्जसंघपालिएथेरे गोश्रमसगुत्ते थेरस्सणं श्रज्जसंघप

डवडवइ पदवुविमामांकुइ। वमहितदीक्षालीधी नागेंद्रचंद्रनिर्वृत्तिविद्याधरएचारतलेकिम णादशपूर्वधरहवा विश्रनइ वाइएवरस
श्राचार्यपदवीधइ श्रवा। क्रामएथशाषाहवी पछकोइगवारइंशरइकचामरश्राचार्य पदहवा तिहांचारगदइ श्रावारानु॥

कल्पिवरशिष्यनर गौतमगोत्रधारीनर आर्यस्थविरस्थविर अन्तेवासीशिष्य काश्यपगोत्र स्थविरनर आर्यसधि

नर काश्यपगोत्रीनर आर्यधर्मधार धर्मस्थविरस्यान्तेवासीशिष्य मुद्गलगोत्री स्थविरनर आर्यधर्म सर

मुद्गलगोत्रीनर आर्यधर्मसाह स्थविरस्यान्तेवासी। पालीनाशिष्य काश्यपगोत्र स्थविरनर आर्यधर्महित

रनर काश्यपगोत्रीनर आर्यधर्मधार स्थविरस्य नेवासीशिष्य स्थविरनरआर्यधर्मनर काश्यपगोत्री

नर आर्यसहित स्थविर अन्तेवासीशिष्य यमघल्याग १आर्यधिकरुरबाकुमालुगुमित्र गौतममित्र धर्मगिरि वासिष्टगोत्री

कौशिकगोत्री शिवस्थितवला कौशिकगोत्री उपगतगोत्रीअर्हन् २ नवदासिवाड मर्कोकिकरी नहुस्थविर वांडु का

उपमगोत्रीस्थवि नक्षत्रमाधुकाश्यपगोत्री शक्तियनी काश्यपगोत्रीनरवाड ४ वाडुआर्यनागस्थविर गौतमगोत्री कौशिकवल्गा

सिष्टगोत्रीस्थविर विष्णुकुमारमाढरगोत्री कालिकाचार्य गौतमगोत्रीस्थविरवाडु गौतमगोत्री पुष्पकुमारस्थविर संपलितभद्रनर

स्थविरवाडु स्थविरआर्यवृद्धस्थविर गौतमगोत्रीस्थवि रबाडुवनमस्कार ४ नरस्थविरवादीनर मस्तकिर स्थ

रमद्रचारित्रज्ञाननाराणरमहर्षि: स्थविरबलीसधा। मालिक काश्यपगोत्रार्यनिरगुप्त ५ वांडुत

आर्यस्थविरस्थविर काश्यपगोत्री क्षमासुद्ध धारस्थविरश्री समकालनानाप्रश्नमामनरविषर स्वर्गिस्थला विनस्थविर ६

वाडुआर्यधर्मस्थविर सुत्रावृतधारी आचारलक्षिमहर्षि चारित्रममयनरविषरज्ञानरदवना वज्रवरस्थानवामरस्थविर

119

MEMORIAL

धरइ ७ हस्तिसाधु काश्यपगोत्री धर्मप्रतिइ शिवसाधकसाधकप्रतिइ प्रणमुं ८ सिंहसाधु काश्यपगोत्रीयप्रति धर्मनामकाश्यप

हइं ७ हत्थं कासवगुत्तं धम्मं सिवसाहगं पणिवयामि सीहं कासवगुत्तं धम्मंपिय

गोत्रीयप्रतिवांदुं ८ तेहप्रतिइ वांदीनइ मस्तकइ स्थिरपणइ सत्त्वचारित्रज्ञानतेणइ सम्पूर्णः स्थिवरजंबूआचार्यप्रति गौत

कासवंवंदे ८ तंवंदिऊणसिरसा थिरसत्तचरित्तनाणसंपन्नं थेरंचअज्जजंबुंगो

मगोत्रप्रतिइ नमस्करुं ९ मृदुमार्दवमानरहितमार्दव॥ मायारहित सहितज्ञानदर्शनचारित्रइकरीसम्पूर्णः स्थिवि

यमगुत्तंनमंसामि ९ मिउमद्दवसं पन्नंउवउत्तंनाणदंसणचरित्तेथे

रनंदिनामा काश्यपगोत्रीप्रतिइ प्रणमुं ततःपछी स्थिरचारित्र उत्तमसम

रंचनंदियंपियकासवगुत्तंपणिवया मि १० तत्तोयथिरचरित्तंउत्तमस म

सम्यक्त्वसहित देसगणि क्षमाश्रमणप्रति माढरगोत्री प्रतिइनमस्करुं ११ ततःपछी अनुयोगधरनार धी

म्मत्तसंजुत्तं देसिगणिखमासमणं माढरगुत्तंपणिवयामि ११ तत्तोअणुओगधरं । १२८

रमतिनासमुद्र महासत्व स्थिरगुप्तक्षमाश्रमणप्रति वत्सगोत्रप्रतिइ प्रणमुं १२ ततःपछी

धीरंमइसागरंमहासत्तं थिरगुत्तखमासमणं वच्छसगुत्तंपणिवयामि १२ तत्तोय

ज्ञानदर्शन चारित्रना तपनेविषे करीसुस्थितछे गुणेकरीमहंत स्थिविरकुमारधर्म वंदामि गुणेकरीसहित १३ सूत्रअर्थरू
धरणहार गुणेकरीमहंत प्रतइ दिन पीयारत्न

नाणदंसणचरित्ततवसुट्ठियंगुणमहंतं थेरंकुमारधम्मं वंदामिगणिंगुणोववेयं १३ सुत्तत्थर

तणइभरि क्षमा उपसम मार्दवगुणकरीसहित देवर्द्धिक्षमाश्रमण प्रते काश्यपगोत्रीय प्रतइवांदु १४

यणभरिए खमदमद्दवगुणेहिंसंपन्ने देवड्ढिखमासमणे कासवगुत्तेपणिवयामि १४

इतिश्री आठमुं वखाण बारसेंसूत्र अर्थसहितकल्पसूत्रसंपूर्ण ॥ श्रीः॥ नः॥ श्रीः॥

इतिश्रीअष्टमक्षणः बारसेंसूत्रसंपूर्णं अर्थसहितकल्पसूत्रसमाप्तम्॥ श्रीरस्तु॥ श्रीः

तेकालनइविषइ तेसमयनइविषइ श्रमणभगवंतश्रीमहावीर आसाढचोमासाथीमांडीनीसदिवसइ

एएणं॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणेभगवंमहावीरे वासाणंसवीसराईएमासेवइक्कं

एकमासवीसदिवसगयइथकइ वर्षाकालनइविषइ पर्युषणकरइ श्रमणभगवंतश्रीमहावीर वर्षाकालनाम

तेवासावासंपज्जोसवेइ सेकेणट्ठेणंभंतेएवंवुच्चइ समणेभगवंमहावीरे सवीसइराइए

वर्षाकालनइविषइ पर्युषणकरइ तेस्यानइ कारणइ गृहस्थ

मासेवासाणंवइक्कंते वासावासंपज्जोसवेइ १ जओणंपाएणंअगाराणंअगाराइंकडि

आइं उक्कंपिआइं वन्नाइं लित्ताइं घट्ठाइं मट्ठाइं संपधूमिआइं खाओदगाइं खायनिद्धमणाइं
अप्पणो अट्ठाइं कडाइं परिभुत्ताइं परिणामियाइं भवंति से तेणट्ठेणं एवं वुच्चइ समणे भग
वं महावीरे वासाणं सवीसइराइए मासे वइक्कंते वासावासं पज्जोसवेइ जहा णं गणहरा
वि वासाणं सवीसइराइए मासे वइक्कंते तहा णं गणहर सीसा वि वासाणं जाव पज्जोसवेंति ५
जहा णं थेरा वासावासं पज्जोसवेंति तहा णं जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति ते वि णं वासा
णं पज्जोसवेंति ६ जहा णं जे इमे अज्जत्ताए १२०

तिथ्थंकर ... ॥ इति श्रेयः ॥ श्री रस्तु ॥ ॥ कल्याणमस्तु ॥ ॥श्री॥

जहा णं जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा वासाणं पज्जोसवेंति तहा णं अम्हं आयरिया उवज्झाया वा
साणं पज्जोसवेंति ७ जहा णं अम्हं आयरिया उवज्झाया पज्जोसवेंति तहा णं अम्हे वि वासाणं सवीस
इराइए मासे वइक्कंते वासावासं पज्जोसवेमो अंतरा वि य से कप्पइ पज्जोसवित्तए नो से कप्पइ तं रयणिं

निक्रमें कल्पना करवी रिपो ८ वर्षाकालेरहियाछे पर्युषणबुनिहारकरवुं नेर निषधमाह अथवा साध्वीने जिहां वेमास रहिवुं कइं तेलि
वनी रात्रि अतिक्रमें नेक यनी नइ कल्पइ एक आचार एव
त्याइ
उवायएणा चित्तए ८ वासावासंपज्जोसवियाणं कप्पइ निग्गंथाणवा निग्गंथीणवा सव्वउसमंतासक्के
कोसिइएकोस अर्ध आनउ अवग्रह लेइ रह जिमसो कोकाज नहीनीतुहा ९ वर्षाकालेरहियाजेजतीतेहनेकारइसक निग्रं
कतोयएएनलेपाचको इ घसूकाइनेनघमलरका
संकोसयणं उग्गहं उग्गिन्हित्ताणं चिट्ठित्तए अहालंदमवि उग्गहे १० वासावासंपज्जोसविआणं कप्पइ निग्गं
वयानि निग्रंथी साध्वी सर्वनइ कोससहीतयोजन जेगेविहरवानिक्रमें एतलेअटीकोसलइनेरं एणेनरीवि
अर्धइजाइ आवहेउकल्पइ १० चालि
थाण वा निग्गंथीणवा सव्वउसमंता सक्कोसं जोयणं भिक्खायरियाए गंतुं पडिनियत्तए ११ जत्थ नई
निमाणाणीव सदेवजउवनी नकल्पइकन मघलाइपासे पोतगाके सेवपइलेइंरहनिक्षोचयइ आहारलेवागयो आ
रनी एहेबी नरी रवी विवुंनकल्पइ
निच्चोयगा निच्चसंदणा नो से कप्पइ सव्वउसमंता सक्कोसंजोयणं भिक्खायरियाए गंतुं पडिनिय
११ एतवनीनाकीमेनइंकिणा प्रगाजमा नवहइनेनतरीने थोडापाणीतलीएक एकपगउंचोओको बिजेपगेजोहनावर
जाननारीइं नकल्पइ एगपाणीमांहे जाइं
त्तए १२ एरावई कुणालाए जत्थ चक्किया सिया एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा एवं चक्किया ए
एहवुं करीसके इएणीपरइकल्पइ १३ सघलीदिशिविदिशि विचिनदीमोटीजइ एहवुंकरीनसकीइ १४ वर्षाकालेपज्जोसणइ
जाना नकल्पइ
वं न्हं कप्पइ सव्वउसमंता १३ एवं नो चक्किया एवं से नो कप्पइ सव्वउसमंता १४ वासावासं पज्जोसवि[अ] १२१
केतलाएक दावेनं साननइ अरेनिरामय साधु अन्नादिक आणीने उमलेइ मिपोतई नकल्पी कल्पइ साननइप १४
नेदेवु धउकल्पइ वामो मामारइ लीधी णि
णं अत्थेगइयाणं एवं वुत्तपुव्वं भवइ दावे भंते एवं से कप्पइ दावेत्तए नो से कप्पइ पडिगाहित्तए १४ वा
वर्षाकाले रामासिरहेयायनीनइ केतलाइक नइ एहवुंगुरु के दिजेजाइ आरोगीपकल्याण वंनउंलेजे आहार दिकइमलीधुकल्पे
तीपनइं साननइ रो मेउ
सावासं पज्जोसविआणं अत्थेगइयाणं एवं वुत्तपुव्वं भवइ पडिगाहेहि भंते एवं से कप्पइ पडिगाहित्त
केतनकल्पइ आहारादि १५ वर्षाकालइ श्रीगुरुइं एहवुं कहिउ काहेकजइ केतलाएकजतीने साननइ देजेसहक देवा
के रहियाजतीने इ पोतेवन
ए नो से कप्पइ दावित्तए १५ वासावासं एवं वुत्तपुव्वं भवइ अत्थेगइयाणं दावे भंते पडिगाहे भंते एवं
पोतेपणिलेजेसाहा इमकल्पइ डीधुनइलीक १६ वर्षाकालइ रहियाते हनइ निग्रंथयतीनेनिग्रंथ हर्ष आरोग्यरागरहीत
र दीधउं पति कल्पइ निग्रंथीसाध्वीनेइ नइं
कप्पइ दावित्तए पडिगाहित्तए वि १६ वासावासं नो कप्पइ निग्गंथाणवा हट्ठाणं आरुग्गाणं ब
बलवंतशरीरी नइ एजिनेवसरव्याइ रेमवेतनवि वलीर आहार करवइ तेजिम खीरदुध दही मांषण
नयदसमीपकवान
लियसरीराणं इमाउ नव रस विगईउ अभिक्खणं २ आहारित्तए तंजहा खीरं दहिं नवणीयं
घीव तेल५ गोल६ मधु७ मद्य८ मांस९ वर्षाकालइ केतलीएकयतीने कहइंवेयावचकारक जेमसविइयाने
१७ हियायतीने नइ एहवउ करइ
सप्पिं तिल्लं गुडं महुं मज्जं मंसं १७ वासावासं अत्थेगइयाणं एवं वुत्तपुव्वं भवइ अट्ठो भंते गि

लाएस्स अ वइज्जा अठो से अ पुछियव्वो केवईएणं अठो से अ वइज्जा एवइएणं अठो गिलाए

॥२०॥ विगय नावे भेद एक संचयक बीजी असंचयक केहीइ दधी दूध पूडा न्नादिक ए असंचयक ॥ हवे संचयक कहे छे घी गुड वउमासा लगे थापी अइ तिहांइ तेण्यो ते बाल ग्लाना दिक अर्थे सदैव आपि तरुण दृढ शरीर नइं न कल्पे मद्यादिक च्यार विगय सदा निषेध छे पणि कदाचित्त अपवादे लूइं पणि सर्वथा चोमासा माहि पथ्य एपष्ठीनं त्यें निर्ह्रिस्यगाथ ॥ महिषी २ ओछी ३ अजा ४ एलग ५ नार ५ पांच प्रकारे दूधना भेद ॥ घी ४ माखण ४ ए त्रिण

स्स जं से पमाणं वइय से पमाणओ घेतव्वे से अ विन्नविज्जा से अ विन्नवेमाणे लभिज्जा से अ पमाणप्प

त्तिज्जा से अ पमाणपत्ते होउ अलाहि इय वत्तव्वं सिया से किमाहु भंते एवइएणं अठो गिलाण

स्स सियाणं एवं वयंतं परो वइज्जा पडिगाहेहि अज्जो उम पच्छा तुमं भोक्खसि वा पाहिसि वा एवं से

धलेह तिल १ अलसी २ लाटि ३ सरिसव ४ ए च्यार तेलनी विगई बाकीना तेलनहीं विगयमां हिं गुलनी बिलेह एक दोलो १ एक गाढो २ मधुना ३ भेद कुंती १ माखी २ भमरी ३ ए ३ भेद मांसना ३ भेद जलचर १ थलचर २ खेचर ३ मद्यना बेभेद काष्ठनो १ पीठनो २ ए सघली विगय वली नत्थें च्यार अनंतकाय माखण सबेथान त्यें सिद्धांत मांहिं कहो छे ॥ श्रेयः ॥ श्री ॥ १२१

स्स सियाणं एवं वयंतं परो वइज्जा पडिगाहेहि अज्जो उम पच्छा तुमं भोक्खसि वा पाहिसि वा एवं से कप्पइ पडि

गाहित्तए नो से कप्पइ गिलाणनीसाए पडिगाहित्तए ॥२०॥ वासावासं पज्जोसवियाणं अत्थि णं थेराणं तहप्पगाराइं कुला

इं कडाइं पत्तिआइं थिज्जाइं वेसासियाइं सम्मयाइं बहुमयाइं अणुमयाइं भवंति जत्थ से नो कप्पइ

अदक्खु वइत्तए अत्थि ते आउसो इमं वा इमं वा से किमाहु भंते सड्ढी गिही गिन्हइ वा तेणि अ पि कुज्जा ॥२१॥

वासावासं पज्जोसवियस्स निच्चभत्तियस्स भिक्खुस्स कप्पइ एगं गोयरकालं गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्ख

मित्तए वा पविसित्तए वा णन्नत्थ आयरियवेयावच्चेण वा एवं उवज्झायवेयावच्चेण वा तवस्सिगिल

ण वेयाव॰ खुड्डुएण वा खुड्डियाए वा अवंजणजायएण वा २० वासावासं॰ चउत्थभत्तियस्स भि

क्खुस्स अयं एवइए विसेसे जं से पाओ निक्खम्म पुव्वामेव वियडगं भुच्चा पिच्चा पडिग्गहगं संलिहिय

संपमज्जिय से य संथरिज्जा कप्पइ से तद्दिवसं तेणेव भत्तट्ठेणं पज्जोसवित्तए से य नो संथरिज्जा

एवं से कप्पइ दुच्चंपि गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा २१ वासावासं॰ छ

ट्ठभत्तियस्स भिक्खुस्स कप्पंति दो गोयरकाला गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा नि॰ प॰ २२ वासाव १२२

सं॰ अट्ठमभत्तियस्स भिक्खुस्स कप्पंति तओ गोयरकाला गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा नि

ग्गंथाण वा निग्गंथीण वा २३ वासावासं प॰ विगिट्ठभत्तियस्स भिक्खुस्स कप्पंति सव्वे वि गोयरकाला

गाहावइ वा भत्ताए वा पाणाए वा निग्गंथाण वा प॰ प॰ २४ वासावासं पज्जोसवियस्स निच्चभत्तियस्स भि

क्खुस्स कप्पंति सव्वाइं पाणगाइं पडिगाहित्तए चउत्थभत्तियस्स भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं

पडिगाहित्तए उस्सेइमं वा संसेइमं वा चाउलोदगं वा सोवावासं छट्ठभत्तियस्स भिक्खुस्स कप्पंति

तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए तंजहा तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा वासावासं पज्जोसवियस्स अ

ट्ठमभत्तियस्स भिक्खुस्स कप्पइ

एए पा॥ तेकेहा उस्सेइमं १ संसेइमं वा २ तंदुलजल तिलधुअ जवोदगाई आ
याम ५ सोवीर ६ सुद्धवियडं ७ अंबय ८ अंबाडग ९ कविट्ठ १२ माउलिंग १३ द
क्ख १४ दाडिम १५ खज्जूर १६ नालिएर १७ कयर १८ बोर १९ आमलग २० चिंचापाणी

MEMORIAL

पाणगाइं २१ पढमंग लणियाइं २२ २ श्री कल्पसूत्रनें विषेनवपांणी कह्या ते वषीणीस्यइ सूत्र अर्घटिवामांहिं कहिउं अस
इमां को ढोइमउ तिलउ ३ जवोदगं ४ पक्षोयणय ५ आयामंउ सोवीरं ७ उसिणोदगं ८ ए वेव एनवपांणी ९ अइ इ रूण
नारगेहलेणपच्छाकम्मंकणं तिसहीउं अन्नेय पुरकम्मंविय तिणं नाणंमहापावं ? सीउदगधारपन्ने अंगीलूणं मयोस
अबिहेने इविकनामोणीएणं पउयणं जेणन होइ ३ परिसयणियलं होइ धोइणं वीरधोयणं होइ आयामु एलाय
वणं पमायपउयणं बहुयाइ विणगंधरसेणवा अइत्तीयवफासुयेणंवा फासुयेणवा पडिगाहेसजए उसिणोदगं
तिकरुकतियतत्र फासु अजलतिजयकप्पनवरि गलाणइ कए पहिरंति गोचरि धरियवइ जोइ सचित्त तया
गाश्रमियपहरपुवगंसु वृखिउ उकरवर ससिरे वासाणा तिपहरवरिद्र अन्नजेलउक्कावाकस्या दिहिहिसी सियं
वावि कप्पइ जेइणतत्र सुविहिय कप्प ठियाणउ धुगणि हीसारनाले अबिलजोयणं करु कुतिय व नेउराय पते
फासुयमतिनद्लावे पकहिय आयमसदितुं सिणेदगस्सवा अस्सुइ फासुयजलतसंजदे तस्सा सइ तसो स
नरहिय इ तिसिधलाण ।।१२ जेइदअइा कि मचवा पाणगाइ तेत्तकइरकरसी गुड पडाइ नीर आयामु स्सेह माइयो
१ कप्पइ अगारेहपणगस्स हिए आइ कंति कप्पाइ इहराम कंति कप्पा सुबुउ सिणादगाइ युउ ३ मामए अबिलए
नी कोतिन करवीजेहलणीकसकें।। वुहुदइ घूघरीबकलाइ अन्नपि अइसन्नाइ वाजह होइ न वृती नह्यलमिवस
इणानहा ३।।आय मंगलं।।

आंपांणी लेवो साधनइ कल्पइं   तेतिम   उसामण   आवणपृमुरन   तिणकहा ताबूलइ एहवुं उका पाणी   वषकालइ आमी डवो मानइ   अइमी

तउपाणगाइं पडिगाहित्तए तंजहा आयामंवा सोवीरंवा सुद्धवियडंवा वासावासंप विगिठ

अधिकतपनो   यतीनइं   कल्पइं   एकताउ त्रिदंगा कालिक उस्नीनुं कल्पइ   नाकहइ   सीथरहित   पणि नही सीथइ करीस हीन
कारक

नतियस्स भिक्खुस्सकप्पइ एगे उसिणवियडे पडिगाहित्तए सेवियणं असित्थे नोवियणं ससि १२३

वषकालइं रहि [illegible]   यायतीनइं   कल्पइं   एकताउत्रिदंगो कालिक उस्नीरमो   तेपणि कल्पइं   सीथइ
यायतीने

त्थे वासावासंप ज्जपत्रियाइरिकअस्स भिक्खुस्स कप्पइ एगे उसिणवियडे पडिगाहित्तए सेवियणं अ

रहित   पणिसीथसहितक   [illegible]   पाणीनही आगणइ   अनगलपाणी
[illegible]

सित्थे नोचेवणं ससित्थे सेवियणं परिपूए नोचेवणं अपरिपूए सेवियणं अपरिमिए नोचेवणं परिमि

वस्त्र   नहीतिनवणं [illegible]   ३   वषकालइ संस्थाकरी   [illegible]   पनदा
उ

ए सेवियणं बहुसंपन्ने नोचेवणं अबहुसंपन्ने २५ वासावासं संखादत्तियस्स भिक्खुस्स कप्पंति पंच

नोजननी लइं पहीनइं घर   पानपाणीनी   अथवा च्यारिनाजननी लइ   पानपाणीनी लइ   अथवा पांन

दत्तिओ लोयणस्स पडिगाहित्तए पंचपाणगस्स अहवा चत्तारि लोयणस्स पंचपाणगस्स अहवा

नोजननीनीलइ   च्यारिपाणीनी लइ   तिहां   एकदातीकन   जेतलइ [illegible]
लइ   नमात

पंच लोयणस्स चत्तारिपाणगस्स तत्थ णं एगा दत्ती लोणासायणमित्तमवि पडिगाहिया

लेवइ रहेइ   तेणइं दिवसइ   तेनेलइ जेना तपा   चलिइमारइ   [illegible]   नानाइ
तिहइ   बीजीवार [illegible]   विषइ

सिया कप्पइ सेतद्दिवसं तेणेव भत्तट्ठेणं पज्जोसवित्तए नोसे कप्पइ दुच्चंपि गाहावइकुलं भत्ताए

वा पाणाए वा निग्गंथाण वा पत्ताए वा २६ वासावासं नो कप्पइ निग्गंथाण वा २ जाव उवस्सयाउ

सत्तघरं तरसंषडं नियट्ट चारिस्सइ त्तए एगे पुण एवमाहंसु नो कप्पइ जाव उवस्सयाउ परे

ण संखडिं संनिअट्ट चारिस्सइ त्तए २७ एगे पुण एवमाहंसु नो कप्पइ जाव उवस्सयाउ परेण

संखडिं संनियट्ट चारिस्सइ त्तए २८ वासा० नो कप्पइ पाणिपडिग्गहियस्स भिक्खुस्स कण

ग फुसिअमित्तमवि वुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निग्गंथा

ए वा पत्ताए वा २९ वासावासं पाणिपडिग्गहियस्स भिक्खुस्स नो कप्पइ अगिहंसि पिंड

वायं पडिगाहित्ता पज्जोसवित्तए पज्जोसवेमाणस्स सहसा वुट्ठिकाए निवइज्जा देसं भुच्चा देसमादा

य से पाणिणा परिपिहित्ता उरंसि वा णं निलिज्जा कक्खंसि वा णं समाहडिज्जा अहाछन्नाणि लेवाणि

वा उवागच्छिज्जा जहा से पाणिसि दए वा दगरए वा दगफुसिआ वा नो परिआवज्जइ ३० वासा

वासं पाणिपडिग्गहिअस्स भिक्खुस्स जं किंचि कणगफुसियमित्तंपि निवडइ नो से कप्पइ

भत्ताए वा पाणाए वा निग्गंथाण वा पत्ताए वा ३१ पडिग्गहधारिस्स भिक्खुस्स नो कप्पइ व

ग्घारियवुट्ठिकायंसि गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाइ वा निग्गंथाण वा पत्ताए वा कप्पइ

सेवुट्ठिकायंसि संतसारु तस्स गाहावइकुलं भत्ताएवा पाणाएवा निगंथाणेवा पत्नाएवा २१

११०० वासावासंणे निग्गंथस्स निग्गंथीए वा गाहावइकुलं पिंडवायपडिआए अणुपविट्ठस्स

निगिज्झिय २ वुट्ठिकाए निवइज्जा कप्पइ से अहे आरामंसि वा अहेउवस्सयंसि वा अहे

वियडगिहंसि वा अहेरुक्खमूलंसि वा उवागच्छित्तए २२ तत्थ से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते चा

उलोदणे पच्छाउत्ते भिलिंगसूवे कप्पइ से चाउलोदणे पडिगाहित्तए नो कप्पइ से भिलिंगसू

वे पडिगाहित्तए २३ तत्थ से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते भिलिंगसूवे पच्छाउत्ते चाउलोदणे कप्पइ भि १२५

लिंगसूवे पडिगाहित्तए नो से कप्पइ चाउलोदणे पडिगाहित्तए २४ तत्थ से पुव्वागमणेणं दो

वि पच्छाउत्ताइं एवं से नो कप्पंति दो वि पडिगाहित्तए जे से तत्थ पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते से कप्पइ प

डिगाहित्तए जे से तत्थ पुव्वागमणेणं पच्छाउत्ते नो से कप्पइ पडिगाहित्तए २५ वासावासंणे नि

ग्गंथस्स गाहावइकुलं पिंडवायपडिआए पविट्ठस्स निगिज्झिय २ वुट्ठिकाए निवइज्जा कप्पइ

से अहे आरामंसि वा अहेउवस्सयंसि वा अहे रुक्खमूलंसि वा उवा० २ नो से कप्पइ पुव्व अहेवियडगिहंसि वा

गहिएणं भत्तपाणेणं वेलं उवायणावित्तए कप्पइ से पुव्वामेव वियडगं भुच्चा पिच्चा पडिग्गहगं सं

त्तिहिय संपमट्ठियस्स २ एगउ नम्मिं गं कट्टु सावसेसे सूरे जेणेव उवस्सए तेणेव उवागच्छित्तए नोसे
कप्पइ तं रयणिं तत्थेव उवायणावित्तए २६ वासावासं पज्जोसवेइ निग्गंथस्स गाहावइकु
लं पिंडवा यपडियाए अणुपविट्ठस्स निगिज्झिय २ वुट्ठिकाए निवइज्जा कप्पइ से अहे आ
रामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा जाव उवागच्छित्तए २७ तत्थ नो कप्पइ एगस्स निग्गंथ
स्स एगाए निग्गंथीए एगउ चिट्ठित्तए २८ तत्थ नो कप्पइ दुन्हं निग्गंथाणं दुन्हं निग्गंथीणं
एगउ चिट्ठित्तए ४ अत्थि अइ इत्थ केइ पंचमे खुड्डए वा अन्नेसिं वा संलोए पडिदुवारे एवन्हं क १२६

प्पइ एगउ चिट्ठइत्तए २९ वासावासं पज्जोसवेइ निग्गंथस्स गाहावइकुलं पिंडवायपडिया
ए जाव उवागच्छित्तए तत्थ नो कप्पइ एगस्स निग्गंथस्स य अगाए अगारीए एगउ चिट्ठित्तए
एवं चउभंगो अत्थि अइ इत्थ केइ पंचमे थेरा वा थेरि आ वा अन्नेसिं वा संलोए सपडिदुवारे ए
वं कप्पइ एगउ चिट्ठित्तए एवं चेव निग्गंथीए अगारस्स य भाणियव्वं ३० वासावासं नो
कप्पइ निग्गंथीण वा २ अपरिन्नएणं अपरिन्नयस्स अट्ठाए असणं वा ४ जाव पडिग्गा
हित्तए ३१ से किमाहु भंते इच्छा परो अपरिन्नए भुंजिज्जा इच्छा परो न भुंजिज्जा ४ खवा

सावासं नो कप्पइ निग्गंथाण वा २ उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा काएणं असणं वा ४ आ
हारित्तए ॥४३॥ से किमाहु भंते सत्त सिणेहायणा पन्नत्ता तं जहा पाणी १ पाणिलेहा २ न
हा ३ नहसिहा ४ भमुहा ५ अहरुट्ठा ६ उत्तरुट्ठा ७ अह पुण एवं जाणिज्जा विगओदए मे का
ए छिन्नसिणेहे एवं से कप्पइ असणं वा ४ आहारित्तए ॥४४॥ वासावासं पज्जोसवियाणं इह खलु निग्गंथाण वा
२ इमाइं अट्ठ सुहुमाइं जाइं छउमत्थेणं निग्गंथेण वा २ अभिक्खणं २ जाणियव्वाइं पडिलेह
यव्वाइं भवंति तं जहा पाणसुहुमं १ पणगसुहुमं २ बीयसुहुमं ३ हरियसुहुमं ४ पुप्फसुहुमं ५ अं १२७

डसुहुमं ६ लेणसुहुमं ७ सिणेहसुहुमं ८ से किं तं पाणसुहुमे २ पंचविहे पन्नत्ते तं जहा
किण्हे १ नीले २ लोहिए ३ हालिद्दे ४ सुक्किल्ले ५ अत्थि कुंथु अणुद्धरी नामं जा ठिआ अच
लमाणा छउमत्थाणं निग्गंथाण वा २ नो चक्खुफासं हव्वमागच्छति जे छउमत्थेणं निग्गं
थाण वा २ अभिक्खणं २ जाणियव्वा पासियव्वा पडिलेहियव्वा भवइ से तं पाणसुहुमे १
से किं तं पणगसुहुमे २ पंचविहे पन्नत्ते तं जहा किण्हे जाव सुक्किल्ले अत्थि पणगसुहु
मे तद्दव्वसमाणवन्नए नामं पन्नत्ते छउमत्थेणं जाव पडिलेहियव्वे भवइ से तं पणगसुहुमे २ से ए

किं तं बीयसुहुमे पंचविहे पन्नत्ते तंजहा किन्हे जाव सुकिल्ले अत्थि बीयसुहुमे कणियासमाण
वन्नए नामं पन्नत्ते जे छउमत्थेणं निग्गंथेण वा जाव पडिलेहिअव्वे भवइ से तं बीअसुहुमे २
से किं तं हरियसुहुमे पंचविहे पन्नत्ते तंजहा किन्हे जाव सुकिल्ले अत्थि हरियसुहुमे पुढ
वीसमाणवन्नए नामं पन्नत्ते जे निग्गंथेण वा २ अभिक्खणं २ जाणियव्वे पासियव्वे पडि
लेहियव्वे भवइ से तं हरियसुहुमे ३ से किं तं पुप्फसुहुमे ४ पंचविहे पन्नत्ते तंजहा कि
न्हे जाव सुकिल्ले अत्थि पुप्फसुहुमे रुक्खसमाणवन्नए नामं पन्नत्ते जे छउमत्थेणं निग्गंथा १३५

ण वा २ जाव पडिलेहियव्वे भवइ से तं पुप्फसुहुमे ४ से किं तं अंडसुहुमे ५ पंचविहे पन्नत्ते तंजहा
उद्दंसंडे १ उक्कलियंडे २ पिपीलीअंडे ३ हलिअंडे ४ हल्लोहलिअंडे ५ जे निग्गंथेण वा जाव पडिले
हियव्वे भवइ से तं अंडसुहुमे ५ से किं तं लेणसुहुमे ६ पंचविहे पन्नत्ते तंजहा उत्तिंगलेणे १ भिंगुलेणे
२ उज्जुए ३ तालमूलए ४ संबुक्कावट्टे ५ नामं पंचमे जे छउमत्थेणं जाव पडिलेहियव्वे भवइ से तं लेण
सुहुमे ६ से किं तं सिणेहसुहुमे ७ पंचविहे पन्नत्ते तंजहा उस्सा १ हिमए २ महिया ३ करए ४ हरतणु
ए ५ जे छउमत्थेणं जाव पडिलेहियव्वे भवइ से तं सिणेहसुहुमे ७ वासावासं गाहावइकुलं भत्ताए

वा पाणाए वा निग्गंथाण वा पन्नाए वा नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा उवज्झायं वा थेरं पवत्ति
णिं गणहरिं गणावच्छेअयं जं वा पुरओकाउं विहरइ कप्पइ से आपुच्छिउं आयरियं वा जाव जं वा पु
रओकाउं विहरइ कप्पइ से आपुच्छिउं आयरियं वा जाव जं वा पुरओकाउं विहरइ इच्छामि णं
भंते तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निग्गंथाण वा पन्नाए वा ते अ से वि
अरिज्जा एवं से कप्पइ गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निग्गंथाण वा पन्नाए वा ते अ से नो विअरि
ज्जा एवं से नो कप्पइ भत्ताए वा पाणाए वा निग्गंथाण वा पन्नाए वा से किमाहु भंते आयरिया पच्चवायज ।

१३९

णं तिअट्ट एवं विहारभूमिं वा विआरभूमिं वा अन्नं वा जं किंचि पओअणं एवं गामाणुगामं दूइज्जित्तए ॥४५॥ वा
सावासं पज्जोसविए भिक्खू इच्छा अन्नयरिं विगइं आहारित्तए नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं
वा जाव गणावच्छेअयं वा जं वा पुरओकाउं विहरइ कप्पइ से आपुच्छित्ताणं तं चेव इच्छामि णं भंते तुब्भेहिं
अब्भणुन्नाए समाणे अन्नयरिं विगइं आहारित्तए तं एवइयं वा एवइखुत्तो वा ते य से विअरिज्जा
एवं से कप्पइ अन्नयरिं विगइं आहारित्तए ते अ से नो विअरिज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नयरिं विग
इं आहारित्तए से किमाहु भंते आयरिया पच्चवायं जाणंति ॥४६॥ वासावासं पज्जोसविए भिक्खू इच्छिज्जा अन्न

समिवेइछे आउट्टित्तए तचेव समद्धलाणिदाब्बं ५१ वासा वासंण निरकूइज्जा अन्नयरिउरालंक

ए सिवं धन्नंमंगलं सस्सिरियं महाणुभावं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए तंचेव सम्बं

नाणिदाब्बं ५२ वासावासं० निरकूइज्जा अपच्छिममारणंतियं संलेहणाजूसणाजूसिए भ

त्तपाणपडिआइरिकए पाउवगए कालं अणवकंखमाणे विहरित्तए वा निरकूप पं० अणं आ

हारित्तए उच्चारंवा पासवणंवा परिठावित्तए धम्मजागरियंवा जागरित्तए नोसेकप्पइ अणापु

च्छित्ता तंचेव १५३ वासावासंण निरकूइच्छिज्जा वच्छंवा पडिग्गहंवा कंबलंवा पायपुछणंवा अन्न

यरिंवा उवहिं आयावेत्तए वा पयावित्तए वा नो सेकप्पइ एगंवा अणेगंवा अपडिन्नवित्ताग

हावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निग्गंछीए वा पत्ताए वा असणंवा ४ आहारित्तए वा बहियावि

हारभूमिं वा समझा दांकरित्तए काउस्सग्गं वा ठाणं वा ठाइत्तए इच्छिअइ छके इ अत्थि समन्नाग

ए अहासंन्निहिए एगेवा अणेगेवा कप्पइसे एवं वइत्तए इ मंता अच्छो उमं मुहुत्तगं जाणाहि

जाव ताव अहं गाहावइकुलं जाव काउस्सग्गंवा ठाणंवा ठाइत्तए से असेपडिसुणिज्जा एवं सेक

प्पइ गाहावइकुलं तंचेव से असेनो पडिसुणिज्जा एवं सेनो कप्पइ गाहावइकुलं जाव का

उस्सग्गं वा वाणं वावइत्तए ५४ वासावासं नो कप्पइ निग्गंथाण वा अणभिग्गहियसिज्जासणि

एणं हुत्तए आयाणमेयं अणभिग्गहीयसिज्जासणिअस्स अणुच्चाकूइयस्स अणट्ठाबंधि

यस्स अमिअआसणिअस्स अणाताविअस्स असमिअस्स अभिक्खणं२ अपडिले

हणासीलस्स अपमज्जणासीलस्स तहा णं संजमे दुराराहे भवइ ५५ अणायाणमेयं

अभिग्गहिअसिज्जासणियस्स उच्चाकूइयस्स अट्ठाबंधिस्स मिआसणिअस्स आया

वियस्स समिअस्स अभिक्खणं२ पडिलेहणासीलस्स पमज्जणासीलस्स तहा णं संजमे सुआ १३१

राहे भवइ ५६ वासावासं० कप्पइ निग्गंथाण वा२ तओ उच्चारपासवणभूमीओ पडिलेहित्तए

न तहा हेमंतगिम्हासु जहा णं वासासु से किमाहु भंते वासासु णं उसन्नं पाणा य तणा

य बीया य पणगा य हरिआणि भवंति ५७ वासावासं० कप्पइ निग्गंथाण वा२ तओ मत्त

गाइं गिण्हित्तए तं जहा उच्चारमत्तए१ पासवणमत्तए२ खेलमत्तए ५८ वासावासं नो क

प्पइ निग्गंथाण वा२ परं पज्जोसवणाओ गोलोमप्पमाणमित्ते वि केसे तं रयणिं उवायणा

वित्तए अज्जेणं खुरमुंडेण वा लुक्कसिरएण वा होअव्वं सिआ पक्खिआ आरोवणा मासि

॥ खुरमुंडे अहवा साहिए कत्तिमुंडे वा आसिए लोए संवच्छरिए वा थेरकप्पे । पए वासावासं नो कप्प

इ निग्गंथाणं वा २ परंपज्जोसवणाउ अहिगरणं वइत्तए जे णं निग्गंथाणं परंपज्जोसवणाउ अ

हिगरणं वयइ से णं अकप्पेणं अज्जो वयसीति वत्तव्वं सिआ जे णं निग्गंथाण वा २ परंपज्जोस

वणाउ अहिगरणं वयइ से णं निज्जूहियव्वे सिआ ॥६०॥ वासावासं पज्जोसवियाणं इह खलु निग्गंथाण वा २ अ

ज्जेव कक्खडे कडुए विग्गहे समुप्पज्जिज्जा सेहे राइणिअं खामिज्जा राइणिए वि सेहं खामिज्जा ॥ख

० खमियव्वं खमावियव्वं उवसमियव्वं उवसमावियव्वं संमुइ संपुच्छणा बहुलेणं होयव्वं जो उ १३३

वसमइ तस्स ॥६१॥ खमियव्वं तत्र जिम उदायि राजाइ राजा चंडप्रद्योतने प्रते तिम उत्तम पुरुषे खमाविवुं अथवा आपमने बालक यतीइ जिम देगमहीनी विराधनानुं मिछादुक्कड दीधुं

तिम देवुं एकदा प्रस्तावे श्रीवीर कोसंबी नगरीइ समोसर्या तिहां चंद्रमा सूर्य आपणे विमाने तीर्थंकरने वांदवा

आव्या छता पाछले पुहरे तिहां श्रीभगवंतनी चंदनबाला आर्या ज्ञानादिके जाणी दिवसना के आपणे थानके उठीनां

मृगावती रही जे तले चंद्रमा सूर्य विमानथी गइ छता एतले अंधकार थयो मृगावती आव्या एतले चंदनबाल

इ कहिउं वछ इम न करीइ एं आपणने हीडवुं रात्रे न ल्पइ मृगावतीइ पगे लागी खमाविउं हवे इम नहीं करुं मिछा

मि दुक्कडं मन सुं करतां सुभ अध्यवसाइ केवलज्ञान ऊपनुं चंदनबाला भगवतीनी निद्रा आवी एहवे अंधार

रात्रे महाकालउ सर्प आवतो देखी मृगावतीइ भगवतीनो हाथ ऊंचो कर्युं एतले जागी चंदनाइ पूछिउं वछे सुं वे क

हिउं भगवती सर्प जाइ छे ते किम जाणउं आतिशयें प्रतीपातिइ भगवती अप्रतीपातीइ चंदनाइ चिंतव्युं केवलज्ञान

ऊपनुं अनेमें केवलीनी आसातना कीधी तु खमावुं खमावतां चंदनबालाने केवलज्ञान ऊपनुं इणि परि मिछामि

दुक्कडं देवुं पणि कुंभारनां चेलानी परि मिछामि दुक्कडं न देवुं कुंभार सालाइ गुरु चोमासुं रह्या तिहां एक चेलो कुंभार

नां भाजन कांकरे करी फोडे कुंभार कहे कां भांजे करीने कुंभार वारे चेले मिछादुक्कड कीधुं वली भाजन कांणां क

रे वली ते मिछादुक्कड कहें शिष्य वारिउ न रहें पछे कुंभार कांकरो कान मूकी चांपे चेलो कहें दूषाउं छुं कुंभार कहे मि

छामि दुक्कडं वली कांकरो लेइ कानें चांपे वली इम कहें इम इणी परे मिछामि दुक्कडं न देवुं ते पज्जोसवणा पर्व आव

थें कषाय न थावइ ते बाहिर का रिवो इणि मिले मनसें वचन कायासहित खमाविवो ॥ इति मृगावतीसंबंध समाप्त ॥७॥

तेह स्युं देषकप वधाइ । माहि तेत्रण साम्रत्राए तेहनई ए सार धर्मनो छइ । तेतणी आपणपइ एहवुं जेतो ताणोनई
तेह स्वभावइ एविछ । माहे कवरीनवीतिहुनइ नथी आराधक । उपशम कोणि वड

अत्थि आराहणा जो न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा तम्हा अप्पणो चेव उवसमियव्वं से

तेस्यातणी हेतुइ । उपशमतेकरीनइ सार कारण ५९ वर्षाकालइ रहि कल्पइ यतीसाधु अनइ साध्वीनइ २ त्रिणिपाश्रय तिस्था इ करवा

किमाहु भंते उवसमसारं खु सामन्नं पज्जोसवियाणं कप्पइ निग्गंथाण वा २ तउ उवस्साया गि

तेजिम वलीवलीपडिलेहवुं ॥ ६० वर्षाकालइ रहि जेवुं निग्रंथसाधु साध्वीने

ण्हित्तए तं जहा वेउव्विया पडिलेहा साइज्जिया पमज्जणा ६० वासावासं पज्जोसवियाणं निग्गंथाण वा नि

साध्वीनइ कल्पइ अनेरी एक कोइ दिशिनइ विषइ अथवा विदिशइ मुखनो

ग्गंथीण वा कप्पइ अन्नयरिं दिसिं वा अणुदिसिं वा अवगिज्झि ए ६० ॥ पेरुग्राम वो स्त्य रुद्र नाम

ब्राह्मण वर्षाकाले हल खेडई षेत्र वानी सस्यो हल षेत तो बलद गली उबई नेबेबो रीसे बलद ने मारे तो हने ऊ बे पर्वेरीमे धम धमते अलगोर ही माटीनां ढेफा नाषे नाष तो धकां ते बलद आषो दंकाणा कद हना इ सास सु धाण ने नलदमरण पाम्या सघ तेतो कं जोण्या महास्वाने ते इन बाहिर कीधा क्रोधे पापी इ करीने का खिवइ एणिपरे जे कष य प्रसिणव वई कषाय न मुकइ ते रीस बाहिर करिवो जेषमा ते ते थस्य सुख पाम न ते विषे जन्म मृत्यु करी २ अनंत कर्ष ग्राम जउ कर्मइ अनेत मकी मुकता साइ जो ए हवी सामाचारी पामीने एकाग्र मन वचन काया इ करी आराधस धतो सही इवसु त रि निग्रंथ साधु तुनाम ते हतणी आठ विध कर्म ग्रंथ वेरी मुक्ति मार्ग आराधतां साधतां उजमाल

या संसारत्तण पाप लेषतनी जे ते साधु निर्ग्रंथ कहीइ श्री निसीथ सूत्र ना कह्यो श्री कल्पसूत्रमां भलवानी विधि लिखीइ छइ देवसी पडिक्कमणुं करी नाभाइ कालग्रहेइ सूधुं आध आम सूके काले चार ति शिवियनी चारि दिव स पढिलो नी रात्रें का लग्रहेण करी एक यतीऊभोरह्यो कल्पसूत्रन णं अने रायतीसा नलेप उसणने दिवसे कल्पसूत्रमां करात्रें तणी कल्पसूत्र समाप्ति काउसग्ग करइ करेमि काउस्सग्गं जं खंडियं जं विराहियं जं न पुरियं तस्स उत्तरीकरणेणं वोसिरामि काउस्स ग्ग लोगस्स २ प्रगट लोगस्स १ मध्ये साधु वेमें कल्पसूत्र का दनार का तप मिछा मि दुक्कडं पढीजो ज्यां दि अनीयर करी वा मांमी ने निहार करइ रहा ने साध्वी एपलिइ मन के रंजइ संतो गिका साध्वी कोसूत्र न कांदनो परिय तिनइ आनेरदिये मयतीसने नाम इ राजाम जीने उपरोधइ पासे छु मसासमुख्य कल्प वांचे साधु मो भले पास छाने अ नावे साधु ताने कारणे ॥ श्रीमत्तपागणाधीस : श्रीहेमविमलसूरि शिष्याणो श्रीसोमविमलाक्किन टबार्थो विवृतः स्फुटः ॥१॥ टबार्थ सूत्रस्य सु द्धिग्य स्यादत्र वृद्ध त्यातुमारेण संशोध्य सर्वधीमते ॥२॥ अज्ञानेवरि तमति स्मा सा कृत टलिखितं मया मिथ्यामे दुक्क तं अस्या मनी वाको यस्य हित ॥३॥ इति श्री कल्प टबार्थः अनंतविय मंगलो लिषितः श्री सोमविमलसूरि कृत : परोपका राय ॥ श्री ॥ ब ॥

कहीते सानुपाणीनि तेस्यातणी हेतुयवत् । कारणाहि श्रमणीनगवंतश । वर्षाकालइन पई करुं सहित

च २ भत्तपाणं गवेसित्तए से किमाहु भंते उसन्नं समणा भगवंतो वासासु तव संपउत्ता त्तव

तेतपस्वीहुव तोरिसइ शिद्धि कोमेनापामइ अथवाकुष्ठि पा उइजातो जाण तेदिशा विदिस श्रमण भगवंत वहीतेहीका

स्सी इब्बले किलंते समुपाज्झिज्जा वा पडिवज्झिज्जा वा तामेव दिसं वा अणुदिसं वा समणा भग

वंतोपडिजागरंति ६१ वासावासंप कप्पइ निग्गंथाण वा जाव वत्तारियं वजीय णाइंग

त्तंपडिनियत्तए अंतरा वि अ से कप्पइ वत्थए नो से कप्पइ तं रयणिं उवायणा वित्तए ६२

इच्चेइयं संवच्छरीयं थेरकप्पं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण

फासित्ता पालित्ता सोभित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आराहित्ता आणाए अणुपालित्ता अत्थे

गइया समणा निग्गंथा तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदु १३४

क्खाणमंतं करंति अत्थेगइआ दुच्चेणं भवग्गहणेणं जाव सव्वदुक्खाणमंतं करंति अत्थे

गइआ तच्चेणं भवग्गहणेणं जाव सव्वदुक्खाणमंतं करंति सत्तट्ठ भवग्गहणाइं नाइक्कमं

ति ६३ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे रायगिहे नयरे गुणसिलेचेइ

ए बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं साविआणं बहूणं देवाणं

बहूणं देवीणं मज्झगए चेव एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पन्नवेइ एवं परूवेइ पज्जोसवणा

कप्पो नामं अज्झयणं सअट्ठं सहेउअं सकारणं ससुत्तं सअत्थं सउभयं सवागरणं भुज्जो

नुष्ठो ७ वर्द्धमेऽइतिबेमि ॥९॥ छ:॥ इति श्री कल्पसूत्र नो टबो अनवाच्यसंपूर्णम् ॥ ५२००
अक्षर १७ ॥ इति श्रेयः मंगलं ॥ श्रीरस्तु: ॥ संवत् १७८६ वर्षे श्रावण सुदि ११ तिथौ वार
सुक्रौ। भट्टारक श्री १०८ श्री श्री विजयप्रभसूरिश्वरशिष्य पंडित श्री ५ श्री पं प्रेमवि
जयगणि शिष्य पं श्री ५ श्री पं श्री कांतिविजयगणि शिष्य मुणि रामविजयगणि लिषित
के श्री समी नगरे ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्टं तादृशं लिखितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दो
षो न दीयते ॥१॥ भग्नपृष्ठीकटीग्रीवा बद्धमुष्टीरधोमुखं कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन २३५
परिपालयेत् ॥२॥ श्रीरस्तु: ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री: ॥ छ: ॥